यीशु-केन्द्रित

युवा सेवकाई

बैरी सेंट क्लेयर

यीशु केन्द्रित युवा सेवकाई

प्रतिलिप्याधिकार © २०१० रीच आउट मिनिस्ट्रीज द्वारा, संस्थापन और बैरी सेंट क्लैर

रीच आउट युथ सोल्युशनज़ द्वारा निर्मित, www.reach-out.org

इसका सर्वाधिकार आरक्षित है | रीच आउट मिनिस्ट्रीज, संस्थापन के लिखित अनुमति के बिना इस प्रकाशन के किसी भी अंश की प्रतिलिपि बनाना, किसी भी पुनर्प्राप्ति तंत्र में संग्रहित करना, या किसी भी रूप में संचारित करना मना है|

प्रथम मुद्रण, २००२

कवर डिज़ाइन और ग्राफ़िक्स: माइक डेविस

प्रिंट उत्पादन: रिवरस्टोन ग्रुप, एल.एल.सी

संपादिका : बारबरा ल. टाउनसेंड

जब तक अन्यथा न बताया गया हो, शास्त्रों के उद्धरण पवित्र बाइबिल, न्यू इंटरनेशनल वर्शन से लिए गए हैं| इंटरनेशनल बाइबिल सोसाइटी द्वारा प्रतिलिप्याधिकार © १९७३, १९७८, १९८४| झोंडेरवान की अनुमति से प्रयुक्त है | इसका सर्वाधिकार आरक्षित है |

शास्त्रों के उद्धरण जो 'द मेसेज' के नाम से चिन्हित हैं वे 'द मेसेज' से लिए गए हैं | प्रतिलिप्याधिकार © १९९३, १९९४, १९९५,१९९६, २०००, २००१, २००२ | यह नव प्रेस पब्लिशिंग ग्रुप की अनुमति से प्रयुक्त है|

शास्त्रों के उद्धरण जो 'RSV' के नाम से चिन्हित हैं वे पवित्र बाइबिल, रिवाइज्ड स्टैण्डर्ड वर्शन से लिए गए हैं| 'द डिवीज़न ऑफ़ क्रिश्चियन एजुकेशन ऑफ़ द नेशनल काउंसिल ऑफ़ चर्चेस ऑफ़ क्राइस्ट इन द अमेरिका' द्वारा प्रतिलिप्याधिकार © १९४६,१९५२,१९७१|

विषयसूची

प्रस्तावना

सत्र १: बड़ी तस्वीर देखें

सत्र २: मसीह के साथ गहराई में जाएँ

सत्र ३: जोश के साथ प्रार्थना करें

सत्र ४: अगुओं का निर्माण करें

सत्र ५: छात्रों को अनुयायी बनाएँ

सत्र ६: संस्कृति को प्रभावित करें

सत्र ७: सेवा और सहायता के अवसर निर्माण करें

सभी बातों को एक साथ रखें

सर्वाधिक पूछे जाने वाले प्रश्न

प्रस्तावना

१६७६ में, जब से बैरी सेंट क्लेयर ने रीच आउट युथ सोल्युशनज़ की स्थापना की, प्रभु ने उसके रूप में एक ऐसी सेवकाई का निर्माण किया जो ३० राष्ट्रों में पहुँचकर मसीह में टिकी भी रही और फलवंत भी बनी | रीच आउट का कार्य है वैश्विक स्तर पर अगुओं को सज्ज कर बहुगुणित करना, जो यीशु का अनुसरण करने के लिए युवा पीढ़ी को प्रभावित कर सकें|

यीशु-केन्द्रित युवा सेवकाई की कार्यशैली पासबानों, युवा-अगुओं, बच्चों के सेवकों, स्वयंसेवकों, अभिभावकों और छात्रों को यीशु की सम-दृष्टि और सेवकाई प्रदान करती हैं जो उन्हें निम्न कार्यों में सहायक बन सकें :

१. मसीह के साथ घनिष्ठता भरी गहराई में जाएँ
२. परमेश्वर की उपस्थिति और सामर्थ्य के लिए जोश के साथ प्रार्थना करें
३. गहरी और दीर्घकालीन सेवकाई के लिए अगुओं का निर्माण करें
४. मसीह में परिपक्वता की ओर बढाने के लिए छात्रों को अनुयायी बनाएँ
५. मजबूत रिश्तों के जरिए संस्कृति को प्रभावित करें
६. मसीह के लिए छात्रों तक पहुँचने के हेतु सेवा और सहायता के अवसरों निर्माण करें

विश्व के हर देश में, जब अगुएँ यीशु-केन्द्रित युवा सेवकाई का पालन करेंगे और दूसरों को भी करने की सलाह देंगे, तब एक बहुगुणित प्रभाव होगा क्योंकि :
आत्मिक रूपसे स्वस्थ कलीसियाएँ....आत्मिक रूपसे स्वस्थ अगुओं से भरे हैं .... जो आत्मिक रूपसे स्वस्थ शिष्यों के निर्माता-दल का निर्माण कर रहे हैं.... जो ऐसी अगली पीढ़ी को प्रचार करते हैं जो आत्मिक रूपसे स्वस्थ शिष्य के निर्माता हैं !

युवा पीढ़ी के अगुए ....

यदि आप अपनी सेवकाई शुरू कर रहे हैं, यीशु-केन्द्रित युवा सेवकाई आपको एक मजबूत नींव देती हैं |
यदि आप फिलहाल स्वयंसेवकों, अभिभावकों और छात्रों को सज्ज कर रहे हैं, तो यह पुस्तक आपको उत्कृष्ट प्रशिक्षण और संसाधन देगी|
यदि आप अन्य युवा अगुओं में निवेश करते हैं, तो समझ लें कि यह आपका हस्तांतरणीय उपकरण है|
आपकी अद्भुत सेवकाई पनपेगी एवं और अधिक पैनी बनेगी जब आप यीशु-केन्द्रित युवा सेवकाई से सीखी हुई कार्यशैलियों पर अमल करेंगे| इस समय-सिद्ध दृष्टिकोण से आप और आपकी कलीसिया युवा पीढ़ी के साथ परिवर्तन के शक्तिशाली प्रतिनिधि बनेंगे|

रैंडी रिग्गिंस
अध्यक्ष
रीच आउट युथ सोल्युशनज़

रीच आउट युथ सोल्युशनज़

'यीशु-केन्द्रित युवा सेवकाई' के निर्माण हेतु कलीसिया की युवा पीढ़ी के श्रोतागण को आवश्यक सामग्री से लैस करना और अत्याधुनिक संसाधन जुटाने का कार्य रीच आउट युथ सोल्युशन करता है:

●पासबान ●युवा पासबान ●अभिभावक बच्चों के सेवक ●स्वयंसेवक ●छात्र

हमारी दिव्यदृष्टि

अगली पीढ़ी के लिए यीशु !

हमारा अभियान

अगली पीढ़ी को यीशु का अनुसरण करने की प्रेरणा देने वाले अगुओं को लैस कर वैश्विक स्तर पर द्विगुणित करना

हमारी कार्ययोजना

'यीशु-केन्द्रित युवा सेवकाई' युवा पीढ़ी की सेवकाई को एक प्रतिमान विस्थापन प्रदान करती है जो आपको निम्नलिखित क्षेत्रों में अग्रसर होने में सहायक सिद्ध होगी...

- मसीह के साथ घनिष्ठ सम्बन्ध की गहराई में जाएँ
- परमेश्वर की उपस्थिति ओर सामर्थ्य के लिए जोश के साथ प्रार्थना करें
- गहरी और दीर्घकालीन सेवकाई के लिए अगुओं का निर्माण करें
- मसीही परिपक्वता की ओर बढ़ाने के लिए छात्रों को अनुयायी बनाएँ
- रिश्तों के ज़रिये संस्कृति को प्रभावित करें
- यीशु मसीह के लिए छात्रों तक पहुँचाने वाली सेवा और सहायता के अवसरों का निर्माण करें

हमारा दायरा

वैश्विक स्तर पर 'रीच आउट' तीस से भी अधिक राष्ट्रों की युवा पीढ़ी के अगुओं को लैस करता है | राष्ट्रीय स्तर पर 'रीच आउट' शहर या उपनगर या ग्राम के एक कलीसिया या कलीसियाओं के जाल-तंत्र की युवा पीढ़ी के अगुओं को प्रशिक्षण और संसाधन प्रदान करता है |

'रीच आउट युथ सोल्युशनज़' के बारे में अधिक जानकारी के लिए इस स्थान पर जाइए - www.reach-out.org

यीशु-केन्द्रित युवा सेवकाई

प्रस्तावना

परमेश्वर युवा पीढ़ी को अपने हृदय में प्राथमिक स्थान देते हैं !

परमेश्वर ने उन्हें आपके हृदय में भी वही स्थान दिया है |

हम जानते हैं कि युवा पीढ़ी तक पहुँचना, उन्हें लैस करना तथा उन्हें यीशु मसीह के लिए गतिमान करना कलीसिया के लिए एक उच्च प्राथमिकता का दर्ज़ा-प्राप्त बात है |

परन्तु हम इस लक्ष्य तक कैसे पहुँचे जिससे यीशु की सेवकाई एक अनुकरणीय नमूना के रूप में प्रतिबिंबित हो?

'यीशु-केन्द्रित युवा सेवकाई' के माध्यम से !

क्योंकि उस नींव को छोड़ जो पहले से ही पड़ी है, और वह यीशु मसीह है, कोई दूसरी नींव नहीं डाल सकता |

---

1 कुरिन्थियों ३:११

फिर लोग बालकों को उसके पास लाने लगे, कि वह उनपर हाथ रखे, पर चेलों ने उनको डांटा|यीशु ने यह देख क्रुद्ध होकर उनसे कहा, "बालकों को मेरे पास आने दो और उन्हें मना न करो, क्योंकि परमेश्वर का राज्य ऐसों ही का है | मैं तुमसे सच कहता हूँ कि जो कोई परमेश्वर के राज्य को बालक की नाई ग्रहण न करे, वह उसमें कभी प्रवेश न कर पाएगा|" और उसने उन्हें गोद में लिया और उनपर हाथ रखकर उन्हें आशीष दी |

मरकुस १०:१३-१६ (सन्देश)

यीशु-केन्द्रित युवा सेवकाई

उच्चतम सीमा तक कैसे पहुँचे

जब आप 'यीशु-केन्द्रित युवा सेवकाई' को पूरी करेंगे, आशा यही है कि आपकी सेवकाई पूरी तरह से अनोखी होगी| हमारी इच्छा यह नहीं है कि वे सभी सेवकाई एक जैसा दिखे जो यीशु-केन्द्रित युवा सेवकाई हैं| वास्तविकता तो यह है कि हम इसके बिलकुल विपरीत चाहते हैं| हमारी आशा है कि आपकी सेवकाई को परमेश्वर का ऐसा अद्भुत स्पर्श मिले ताकि वह किसी और सेवकाई के समान न बने| क्यों? क्योंकि यह आपके और आपकी कलीसिया के माध्यम से की गई परमेश्वर की अनोखी अभिव्यक्ति है |

'यीशु-केन्द्रित युवा सेवकाई' आपको यीशु की सेवकाई का एक सम्पूर्ण और बड़ा चित्र दिखाएगी और यह बताएगी कि आप अपनी सेवकाई में इसका अनुप्रयोग कैसे कर सकते हैं| सार तो यह है कि यह एक कंकाल है जिस पर आप मांसपेशियाँ चढ़ाएँगे |यह एक ऐसा घर है जिसे आप सजाएँगे| यहाँ आपको वे खूँटियाँ मिलेंगी जिस पर आप अपनी सम्पूर्ण सेवकाई टांग सकते हैं |

यदि आपने कभी भी हमारे संसाधनों का प्रयोग नहीं किया है, या आप हमारे दृष्टिकोण से वाकिफ़ नहीं हैं तो इसी को एक परिचय समझें | आपको आरम्भ करने के लिए सारी सामग्री यहाँ मिलेगी |

यदि आपने हमारी सामग्रियों का उपयोग किया है या हमारी किसी भी प्रशिक्षण के अवसरों में भाग लिया है तो इस स्मरण पुस्तिका का प्रयोग आप कार्यान्वयन के लिए करें | यह आपकी प्राधान्याताओं को संरेखित करने, आपके कार्य को पुष्ट करने तथा आपकी सेवकाई को और अधिक प्रभावशाली बनाने के लिए छोटी-से-छोटी बदलाव करने में आपकी सहायता करेगी |

यदि आप युवा अगुओं को लैस करने की चुनौती को गंभीरता से लेते हैं तो इसे एक हस्तान्तरणीय उपकरण समझिए |

इस प्रशिक्षण को व्यक्तिगत तौर पर कैसे पूरा करें

१. अपनी अनुसूची योजनाकर्ता में एक घंटे के आठ समय-खांचा निर्धारित कर लें |आप इन्हें सप्ताह में एक बार या दिन में एक बार परिगणित कर सकते हैं या यदि आप मैराथन में हिस्सा लेते हैं, आप यह इस दो या तीन दिन के अभ्यासक्रम में फिर से प्रयास करना चाहेंगे | अपनी इन नियुक्त समय-खांचो का इमानदारी से पालन करें|

२. हर सत्र में व्यस्त रहें|अपने नियुक्त समय में अपना फ़ोन बंद रखें | ध्यान भंग करनेवाली हर एक वस्तु को दूर रखें | फिर प्रार्थनापूर्वक हर सत्र को लक्ष्य से लेकर कार्य-योजना तक पढ़े| परमेश्वर आपसे क्या कहना चाहते हैं उसे ध्यान से सुनें| टिप्पणियाँ लें| अपने विचारों और प्रार्थनाओं को यथारूप लिखें| इस प्रक्रिया में जल्दबाज़ी न करें |

४. कार्ययोजना का उपयोग करते हुए सही कार्यवाई के लिए कदम उठाएँ| यह सामग्री केवल दिमागी कसरत के लिए नहीं है |अपितु, यह एक दिव्यदृष्टि प्रदान करता है और उसको पूरा करने के लिए वास्तविक तथा मापनीय कदम भी उपलब्ध कराता है |

५. उन एक या दो प्राथमिकताओं पर तुरंत अमल करें जिन्हें आप सबसे महत्वपूर्ण मानते हैं |

अन्य अगुओं को इस प्रशिक्षण से कैसे ले जाएँ

'यीशु-केन्द्रित युवा सेवकाई' से आदान-प्रदान करते समय आप बहुत जल्दी यह जान जाएँगे कि आपकी सेवकाई की आवश्यक नींव नेतृत्व-दल का विकास करना ही होगा |आप अपने स्वयंसेवकों के लिए एक दिव्यदृष्टि और मार्ग बनाने के लिए इस प्रशिक्षण को अनुकूल बना सकते हैं |

आप इस प्रशिक्षण का प्रयोग कभी एकांत-स्थलों पर तो कभी ऐसी सत्रों में कर सकते हैं जहाँ आप अपनी दिव्यदृष्टि की अभिव्यक्ति कर सकें तथा अपने अगुओं को प्रोत्साहित कर सकें कि वे अगली पीढ़ी के साथ उनकी जो व्यक्तिगत दिव्यदृष्टि है उसे पा सकें | इसे अपने स्वयंसेवकों, अभिभावकों और छात्र-अगुओं के समक्ष रखने के लिए निम्नलिखित मुद्दों को ध्यान में रखें |

१. इस सामग्री से भली- भांति परिचित हो जाएँ| टिप्पणियाँ बनाएँ तथा अपनी कहानियों और उदाहरणों से अपने अध्यापन को पुष्ट करें |

२. प्रशिक्षण-स्थल तय कर ले | यदि संभव हो तो, अपने या अपने किसी सदस्य के घर में सभा आयोजित करने की योजना बनाएँ| बैठक के अनौपचारिक वातावरण में या भोजन-मेज़ के इर्द-गिर्द सभा आयोजित करने से एक तनावमुक्त वातावरण निर्माण होता है |

३. हर सभा के लिए एक समय निश्चित कर लें| हर सत्र एक से डेढ़ घंटे का हो जिसमें पंद्रह मिनिट प्रार्थना, समीक्षा और/या सहभाजन के लिए हो, पैंतालीस मिनिट प्रस्तुतीकरण और चर्चा के लिए हो तत्पश्चात पंद्रह मिनिट छात्रों के लिए प्रार्थना हो|

४. सामग्री उपलब्ध करावाएँ| अपने दल के लिए 'यीशु-केन्द्रित युवा सेवकाई' की प्रतियाँ खरीदें | www.reach-out.org. से इस स्मरण पुस्तिका और अन्य संसाधनों को मंगवाएँ |

५. सम्पूर्ण तैयारी करें| सत्र की अगुवाई की तैयारी बहुत पहले से ही करना आरम्भ करें|

६. समय पर शुरू करें | अपने अगुओं द्वारा की गई प्रतिबद्धता का सम्मान करें|

७. हर विचार-विमर्श का हिसाब रखें | प्रश्नों को स्पष्ट और संक्षिप्त रूपसे रखें | हर व्यक्ति की आलोचना को सम्मान दें | पवित्र शास्त्र के करीब रहें | घिसे-पिटे और सतही उत्तरों को चुनौती दें | प्रश्न पूछें |यह सुनिश्चित करें कि हर व्यक्ति इसमें सहभागी हो|

८. अनुप्रयोग पर ज़ोर दें | हर सत्र के अंत में अपने दल को कार्य-योजना लिखने के लिए तथा उसपर गहराई से विचार करने के लिए बहुत सारा समय दें| फिर उन्हें लिखित कार्य पर विमर्श करने के लिए अवसर दें | उन्हें एक कार्य का चुनाव करने के लिए कहें जिसे वे उस सप्ताह में पूरा करना चाहते हैं | ताकि वे सत्रों के बीच में एक दूसरे को प्रोत्साहित करते रहे,उनके लिए एक जवाबदेही साथी को नियुक्त करें |

अपने नेतृत्व दल में निवेश करने के लिए जो आपको अगला कदम लेना पड़ेगा,वह यह है कि आप बिल्डिंग लीडर्स सीरीज की ३ पुस्तकों के सेट को www.reach-out.org. से मँगवा लें – अ पर्सनल वॉक विथ जीसस, अ विज़न फॉर लाइफ एंड मिनिस्ट्री, और एसेंशियल टूल्स फॉर लीडिंग स्टूडेंट्स

आपके लिए मेरी प्रार्थना

कि हमारे प्रभु यीशु मसीह का परमेश्वर जो महिमा का पिता है, तुम्हें अपनी पहचान में ज्ञानऔर प्रकाश की आत्मा दे, और तुम्हारे मन की आँखें ज्योतिर्मय हों कि तुम जान लो कि उसकी बुलाहट की आशा क्या है, और पवित्र लोगों में उसकी मीरास की महिमा का धन कैसा है, और उसकी सामर्थ्य हम में जो विश्वास करते हैं, कितनी महान् है, उसकी शक्ति के प्रभाव के उस कार्य के अनुसार |

इफिसियों १:१७-१६अ

लक्ष्य

यीशु केन्द्रित युवा सेवकाई के दर्शन को समझना

सत्र १

बड़ी तस्वीर देखें

यीशु ध्यानकेन्द्र

इंजील में हमें दिखाई देता है कि यीशु ने अपनी सेवकाई के लिए एक गतिशील नमूने को अपनाया |शब्बाथ के दिन शिफ़ा देने का आरोप जब फरीसियों ने उसपर लगाया तब यीशु ने अपनी सेवकाई के बारे में समझाया और मामले को अधिक बदतर बनाने के लिए उसने अपने आपको परमेश्वर के बराबर रखा |

इस पर यीशु ने उन से कहा, मैं तुम से सच सच कहता हूं, पुत्र आप से कुछ नहीं कर सकता, केवल वह जो पिता को करते देखता है, क्योंकि जिन जिन कामों को वह करता है उन्हें पुत्र भी उसी रीति से करता है।

यूहन्ना ५:१६

अपने पिता के साथ घनिष्ठ सम्बन्ध स्थापित करते समय यीशु को अपने पिता के पास से निर्देश मिले थे जिनका अनुसरण उसने किया था | इसी वजह से उसने जो कुछ भी रोज़ किया वह गतिशील और अनोखा था | एक बात हम अपनी सेवकाई के बारे में बड़े यकीन के साथ कह सकते हैं: परमेश्वर चाहते हैं कि यह उससे बने घनिष्ठ संबंधों से बने ताकि यह सचमुच गतिशील और अनोखी हो| यीशु-केन्द्रित युवा सेवकाई' की लैस करने वाली प्रक्रिया से गुजरने का परिणाम यह अपेक्षित नहीं है कि इससे निर्मित सेवकाई अन्य सभी सेवकाइयों के समान हूबहू दिखें, बल्कि ऐसी बने जो यीशु के जोशीले अनुसरण के कारण गतिशील और अनोखी हो| यह केवल एक ऐसे हृदय से जन्म ले सकता है जो यह देखना चाहता हो कि पिता क्या कर रहे हैं और फिर उसीके अनुरूप करना चाहता हो |

यीशु पिता की ओर देखते थे और हम यीशु की ओर देखते हैं | जब हम देखते हैं, हम क्या देखते हैं ?हम यीशु के कार्यों में एक नमूना देखते हैं जो बार-बार उभरकर आता है| हमें उन सिद्धांतों अविष्कार होता हैं जिनका प्रयोग यीशु ने कार्यान्वित किया| वही सिद्धांत हमारा भी मार्गदर्शन करता है कि हमने अपनी सेवकाई कैसे चलानी है |कभी भी अति कड़ा या दोहराव नहीं या कभी अपने पिता को सीमित नहीं किया फिर भी यीशु के पास एक रणनीति थी | वह दिखने में कैसी थी?

यीशु ने अपने पिता की आज्ञा का पालन किया | गतसमनी के बगीचे में यीशु ने जो अति पीड़ा का अनुभव किया वह उसकी आज्ञाकारिता को ही दर्शाता है | यीशु का अनुभव हमें भी चुनौती देता है कि हम भी आज्ञा का पालन करें|

यीशु ने अपने शिष्यों में निवेश किया | केवल अनौपचारिक निरीक्षण से ही हमें बारह शिष्यों में यीशु का निवेश स्पष्ट रूप से दिखाई देता हैं| तीन वर्षों में उसने एक अत्यंत गहन नेतृत्व के प्रशिक्षण की योजना उनके लिए बनाई| उसने उन्हें अपने अहम् को रिक्त करने का और पवित्र आत्मा से परिपूर्ण होने का मार्ग दिखाया| उन्हें सेवकाई का अनुभव देने के लिए यीशु उन्हें अपने साथ ले जाता और उनके प्रयत्नों में उन्हें आधार देता| सुसमाचार का प्रचार करने, भग्नहृदयों को शिफ़ा देने और बंदियों को मुक्त करने में उसने उनका नेतृत्व किया | अंत में उसने सेवकाई करने के लिए उन्हें सामर्थ्य दिया ताकि वे भी उसके बताए तरीके से कार्य कर सकें | परिणामस्वरूप, उसने अगुओं का ऐसा दल बनाया जिसने पूरी दुनिया को सुसमाचार से उलट-पुलट कर दिया |

यीशु के चेलों ने बदले में अन्य लोगों के जीवन में निवेश किया| चेलों के माध्यम से दूसरों के जीवन में निवेश करने का जो गतिशील गुणन का प्रभाव है वह यीशु की सेवकाई का केंद्र था और वही आरंभिक कलीसिया का भी था | परमेश्वर के राज्य के लिए लोग दूसरों के जीवन में निवेश करते थे| इसी ने कलीसिया को एक ऐसी ज़बरदस्त ताकत के रूप में आगे चालित किया जिसने अपने आस-पास के लोगों को तो बदला ही और अंततः पूरी दुनिया को भी बदल दिया|यीशु के अनुयायियों के एक छोटे से दल को यीशु के सेवक में परिवर्तित करन यह आज भी सर्वोत्तम संभाव्य सेवकाई है| और यदि इसे यीशु के समान ही किया जाए तो शिष्य बनाने की यह जो प्रक्रिया है, यह न तो केवल इसमें शामिल लोगों के जीवन को बदल सकता है अपितु हमारी दुनिया को भी बदलने की काबिलियत रखता है|

इंजील के सुसमाचार से अपनी दुनिया को बदलना ही आरंभिक कलीसिया की हावी होने वाली प्राथमिकता बनी क्योंकि उन्होंने देखा कि यीशु के लिए वह कितना महत्वपूर्ण था| उसने सारे बाड़ों को गिराया और वेश्याओं, कोढ़ियों, ग़रीबों, लूलों और अंधों के साथ समय बिताकर एक समतलता बनाई| हमारे लिए, यीशुसम, दूसरों को शिष्य बनाने का अर्थ है उन्हें परिपक्वता की ओर अग्रसर करना और उसके पश्चात् कलीसिया की चहारदीवारी के बाहर सेवकाई में प्रवेश करवाना|

यीशु के लिए ऐसी सेवकाई भीड़ को इकट्ठा करती है| उपदेश देना, चंगा करना,प्रचार करना, दुष्टात्माओं को भगाना, पाँच हज़ार लोगों को पाँच रोटियाँ और दो मछलियाँ खिलाना- यह सचमुच कोई मायने नहीं रखता था कि वह क्या करता था ; यीशु हमेशा सबके ध्यान का केंद्र रहा ! यह उसके शिष्यों के बारे में नहीं था और न ही उनके तरीकों के बारे में था| यह न किसी अद्भुत कार्य, गहरे ज्ञानोपदेश और न किसी और के बारे में था| यह केवल यीशु के बारे में था| वह कौन था और क्या करने आया था यही सार था |यही तो आज कलीसिया की ज़रूरत है –यीशु केन्द्रित युवा सेवकाई| और अन्य कोई भी सेवकाई हमें रिक्त और अपूर्ण ही रखेगी- यदि यीशु के समान हम ऐसी सार्वकालिक प्रभाव बनाना चाहते है जिसे मिटाया नहीं जा सके, तब हमें यीशु को ही केंद्र बनाना होगा |

सत्र १- बड़े चित्र को देखिए

कठिन सवाल

हम इस समय किस स्थिति में हैं इसका एक सच्चा अवलोकन करना हममें से बहुतों के लिए आसान बात नहीं है | परन्तु हमें जहाँ जाना है वहाँ पहुँचने के लिए क्या करें यह जानने के लिए एकमेव तरीका है यह जानना कि हम इस समय कहाँ हैं| इसलिए अपने-आपसे निम्नलिखित कठिन सवाल करें ताकि आप समझ सकें कि आप कितने यीशु केन्द्रित हैं| इनके उत्तर १ से १० के पैमाने पर दें जिसमें १ सबसे निम्न है और १० सबसे उच्च है |

१. यीशु के साथ घनिष्ठता बढ़ाने के लिए आप कितना समय देते हैं और कितना ध्यान केन्द्रित करते
हैं उस आधार पर आप किस पैमाने पर अपने आपको रखते है ?

१ २ ३ ४ ५ ६ ७ ८ ९ १०

२. आप, आपके स्वयंसेवक, अभिभावक और छात्र कितना नियमित समय और स्थान बना पाते हैं ताकि आप एक दूसरे के साथ और उन छात्रों के साथ प्रार्थना कर सकें जिन्हें यीशु की ज़रुरत है|

१ २ ३ ४ ५ ६ ७ ८ ९ १०

३. आपके वयस्क स्वयंसेवक यीशु के प्रति, एक-दूसरे के प्रति तथा शिष्यों के प्रति एक सम्बंधित सेवकाई में कितने प्रतिबद्ध हैं?

१ २ ३ ४ ५ ६ ७ ८ ९ १०

४. आपकी सेवकाई में कितने प्रतिशत विश्वासी एक गहन, समर्पित और जारी शिष्यत्व दल में शामिल हैं ?

१ २ ३ ४ ५ ६ ७ ८ ९ १०

५. आपके स्वयंसेवक और छात्रों में से कितने प्रतिशत अपने-आपको यीशु के लिए अपने परिसर में एक सक्रीय प्रभाव के रूप में देखते हैं?

१ २ ३ ४ ५ ६ ७ ८ ९ १०

६. छात्रों तक पहुँचने के आपके अंतिम अवसर पर कितने प्रतिशत अविश्वासी थे?

१ २ ३ ४ ५ ६ ७ ८ ९ १०

यदि आप इन प्रश्नों के उत्तर सच्चाई से देंगे तो आपको अपनी युवा सेवकाई को एक गंभीर दृष्टि से देखने का मौका मिलेगा| आशा यह है कि ये सवाल बदलाव के लिए आपके अन्दर एक भूख निर्माण करें| इसके आगे के हर एक सत्र में आपको और अन्य प्रश्नों पर मनन करने का अवसर मिलेगा जो उस सत्र से सम्बंधित हो|

युवा सेवकाई के सिद्धांत

हम युवा सेवकाई की दिव्य दृष्टि को कैसे समझें

दिव्य दृष्टि का पता लगाएँ

मत्ती ६: ३५-३८ देखिए | इस अनुच्छेद में, हमें ऐसे सुराग मिलेंगे जो हमें यीशु-केन्द्रित युवा सेवकाई की दिव्य दृष्टि की ओर ले जाएगा|

यीशु यहूदी आराधनालयों में उपदेश देता, परमेश्वर के राज्य के सुसमाचार का प्रचार करता, लोगों के रोगों और हर प्रकार के संतापों को संतापों को दूर करता उस सारे क्षेत्र में गाँव-गाँव और नगर-नगर घूमता रहा था| यीशु जब किसी भीड़ को देखता तो उसके प्रति करुणा से भर जाता था क्योंकि वे लोग वैसे ही सताए हुए और असहाय थे, जैसे वे भेड़ें होती हैं जिनका कोई चरवाहा नहीं होता | तब यीशु ने अपने अनुयायियों से कहा, “तैयार खेत तो बहुत हैं किन्तु मजदूर कम हैं| इसलिए फसल के प्रभु से प्रार्थना करो कि, वह अपनी फसल को काटने के लिए मज़दूर भेजे |

मत्ती ६: ३५-३८

यीशु लोगों के साथ कैसे पेश आते इस सम्बन्ध में ३५ और ३६ वचनों में कौन से सुराग मिलते हैं ?

यीशु ने अपनी दिव्य दृष्टि के सम्बन्ध में अपने शिष्यों को कौन से सुराग दिए जब वह उन्हें ३७-३८ वचनों से सिखा रहे थे ?

चार इंजीलों के त्वरित अध्ययन या गहन अनुसंधान से हमें उन सरल आवश्यकताओं के बारे में पता चलता हैं जिन्हें यीशु ने अपने जीवन में अपनाया | मार्क १-४ पढ़िए या चारों इंजील पढ़िए| सभी रास्ते एक ही सरल साधारण दृष्टिकोण तक ले जाते हैं जिसे यीशु ने अपने जीवन और सेवकाई में अपनाया | हर एक पन्ना यीशु-केन्द्रित ही है |

सत्र १ – बड़े चित्र को देखिए

युवा पीढ़ी का वर्णन कीजिए

यीशु ने मत्ती ९: ३७ में अपने आस-पास की भीड़ का वर्णन कैसे किया है?

आज की युवा संस्कृति के प्रकाश में आप निम्नलिखित शब्दों को किस तरह से परिभाषित करेंगे ?

उत्पीडित/परेशान

लाचार/विवश

चरवाहे बिना भेड़ें

अनुसंधान यह दिखाता है कि यीशु ने अपने वर्णनों में आज की युवा पीढ़ी को सटीक ढंग से चित्रित किया है|

हर २४ घंटों में ...

१७२६७ छात्र विद्यालय से निलंबित कर दिए जाते हैं	३६७ छात्र नशीले द्रव्यों के सेवन के आरोप में गिरफ़्तार किये जाते हैं
७८८३ छात्र दुर्व्यवहार या उपेक्षा के शिकार होते हैं	१८० छात्र हिंसक ज़ुर्म के आरोप में गिरफ़्तार किये जाते हैं
४२४८ छात्र गिरफ़्तार किये जाते हैं	६ छात्र हत्या के शिकार हो जाते हैं
२८६१ छात्र शिक्षा अधूरी छोड़ देता हैं	५ छात्र आत्महत्या कर लेते हैं
१३२६ बच्चे किशोरी माताओं द्वारा जने जाते हैं	1 छात्र एच.आई.वी से संक्रमित हो जाता है

*प्रति विद्यालयीन दिवस की गिनती पर आधारित (७ घंटों के १८० दिन) ©चिल्ड्रेन्स डिफेंस फण्ड

संख्याओं के साथ एक नाम लिखें

मत्ती ६:३६ में अपने आस-पास के लोगों के बारे में यीशु को जो लगा उसका वर्णन करने वाला जो शब्द है उसे ढूँढ निकालिए |

एक परिचित युवा व्यक्ति का नाम लिखिए जो यीशु के वर्णन में सटीक बैठता है|

उसकी जीवन शैली, उसकी मनोवृत्ति, उसकी आदतें, उसके चयन और गतिविधियों के आधार पर उस व्यक्ति का वर्णन कीजिए|

जिस तरह से यीशु अपने आस-पास के लोगों के बारे में महसूस करते थे क्या आप भी उस छात्र के बारे में महसूस करते हैं ?

उस किशोर व्यक्ति के लिए जो आपकी प्रार्थना है उसे लिखिए -

'आपने यीशु-केन्द्रित युवा सेवकाई' में जिन तत्वों के बारे में सीखा उनका अनुप्रयोग उस छात्र तक यीशु के खातिर पहुँचने के लिए करें और उसीके समान अन्य लोगों तक पहुँचने का भी प्रयास करें

आपकी वजह से जो बदलाव आता है उसे देखिए

मत्ती ६:३८ को करीब से देखें| अपने शिष्यों से वार्तालाप करते समय यीशु ने यह स्पष्ट कर दिया कि जो उत्पीडित, लाचार और चरवाहे बिना भेड़-समान हैं उनके जीवन में बदलाव लाना ही उनकी कार्यनीति है| उनकी दृष्टिकोण की सादगी पर ध्यान दें|

क्रिया	यीशु के पीछे चलने के लिए प्रार्थना करें	गुणित करने के लिए अगुओं को सुसज्ज करें	लोगों तक पहुँचने के लिए प्रचार करें
कार्यनीति	यीशु के साथ और गहराई में जाएँ| पूरे जोश के साथ प्रार्थना करें	शिष्य बनाएँ	लोगों तक पहुँचने के अवसर बनाएँ

सत्र १ – बड़े चित्र को देखिए

एक बार बड़े चित्र को देख लेने के बाद, हम वास्तविकता से कल्पना कर सकते हैं कि न केवल हम कलीसिया की सेवकाई का निर्माण कैसे करें अपितु हर पाठशाला के हर छात्र तक यीशु के साथ जीवन-परिवर्तित करने वाला सम्बन्ध स्थापित करने के मकसद को कैसे पाया जाएँ|

बड़े चित्र पर विचार करें

मत्ती ६:३५-३८ में यीशु की जो कार्यनीति है वह छः आवश्यक तत्वों से निर्मित हैं जिनका प्रदर्शन यीशु ने चारों इंजीलों में लगातार किया है|ये तत्व आपके जीवन और सेवकाई में कैसे गहराई से दीर्घस्थायी हो सकते हैं इस पर विचार करें|

मसीह के साथ गहराई में जाएँ

'मसीह के साथ गहरा संबंध कैसे स्थापित करें? यीशु के साथ एक अत्यंत घनिष्ठ और जोशीला सम्बन्ध बनाने का पूरा प्रयास करें और फिर उसकी आज्ञा का पालन करते हुए उस रिश्ते को निभाएँ जिससे आपके आस-पास के लोगों को आप में उसका चरित्र दिखें|(मार्क १:७-८)

जोश के साथ प्रार्थना करें

आपकी सेवकाई में परमेश्वर की उपस्थिति और सामर्थ्य हो उसके लिए प्रार्थना करें| एक विशिष्ट प्रार्थना की कार्यनीति का निर्माण करें जिसमें आप, आपके स्वयंसेवक, अभिभावक और छात्र शामिल हो|(मत्ती १८:१८-२०)

अगुओं का निर्माण करें

एक गहन और दीर्घकालीन सेवकाई के लिए उत्कृष्ट अगुओं की रचना कैसे करें? ऐसे वयस्कों को सुसज्ज करें जिनके पास न केवल ह्रदय की तैयारी हो अपितु छात्रों तक पहुँचकर उन्हें अनुयायी बनाने की कुशलता भी हो|(मार्क १:१६-२०)

छात्रों को अनुयायी बनाएँ

छात्रों को ऐसे आत्मिक जोश से परिपूर्ण अनुयायी कैसे बनाए जिससे वे अपने मित्रों को आत्मिक रूप से प्रभावित कर सकें? अनुयायियों को जोड़ने वाले छोटे दलों के माध्यम से यीशु के साथ एक परिपक्व सम्बन्ध की ओर बढ़ने के लिए छात्रों को चुनौती दें |(मार्क ३:१३-१५)

संस्कृति को प्रभावित करें

आप अपने अगुओं, अभिभावकों और छात्रों को छात्र-संस्कृति को प्रभावित करने के लिए उत्साहित और संगठित कैसे करते हैं? छात्रों के जगत में प्रवेश कर वहाँ उनके साथ समय बिताइए तथा उन्हें सज्ज कीजिए ताकि वे अपने दोस्तों की संस्कृति में पहुँच सकें| (मार्क १:४०-४२)

सेवा और सहायता के अवसर निर्माण करना

छात्र अपने मित्रों तक पहुँच सकें ऐसे अवसरों का निर्माण आप कैसे करेंगे? संस्कृति से मिलते–जुलते अनुभवों की रचना करें ताकि छात्र अपने गैर-विश्वासी मित्रों को यीशु से परिचित करवा सकें|
(मार्क ४:१-२)

व्यावहारिक कदम

यीशु-केन्द्रित युवा सेवकाई के बड़े चित्र को देखने का मतलब है आपने जो कुल मिलाकर संकल्पना है उसे समझ लिया है|

अपनी दिव्य दृष्टि के हित में इस बड़े चित्र को अपनाने हेतु निम्नलिखित व्यावहारिक कदमों को अपनाएँ-

- मत्ती ६:३५-३८ को स्मरण करें| बारंबार तब तक उसे दोहराएँ जब तक वह आपके मस्तिष्क और हृदय पर अमिट छाप न छोड़ दे|
- जिस छात्र का नाम आपने उत्पीडित, लाचार और बिना चरवाहे की भेड़ मानकर लिखा उसका एक चित्र अपनी स्मरण पुस्तिका में चिपकाएँ ताकि आपको स्मरण रहे कि आपका लक्ष्य-श्रोता कौन है|
- अगले पन्ने पर उपलब्ध जो तालिका है उसे भरें और आकलन करें कि आपकी सेवकाई में कौनसी वर्तमान गतिविधियाँ हैं जो यीशु-केन्द्रित युवा सेवकाई के तत्वों को योगदान देती हैं और कौनसे नहीं देती हैं| अपनी गतिविधियों की सूची बनाने से आरम्भ करें| फिर तदनुसार तत्व के स्तम्भ में या 'योग्य नहीं है' के स्तम्भ में सही का निशान लगाएँ|

२-७ सत्र में यीशु-केन्द्रित युवा सेवकाई के हर तत्व को बड़ी गहराई से समझाया जाएगा जिससे यीशु की दिव्य-दृष्टि को आप अपनी सेवकाई में और अधिक स्पष्टता से देख पाएँगे|

वर्तमान गतिविधियों का आकलन।

वर्तमान गतिविधियाँ या सेवकाइयाँ	प्रार्थना करें		सुसज्ज करें		प्रचार करें		
	मसीह के साथ गहराई में जाएँ	जोश के साथ प्रार्थना करें	अगुओं का निर्माण करें	छात्रों को अनुयायी बनाएँ	संस्कृति को प्रभावित करें	सेवा और सहायता के अवसर निर्माण करना	योग्य नहीं है

मसीह के साथ और गहरे सम्बन्ध स्थापित करें

लक्ष्य

यीशु के साथ घनिष्ठ सम्बन्ध बढ़ाना

सत्र २

मसीह के साथ और गहरे सम्बन्ध स्थापित करें

सत्र २

यीशु केंद्र

पिता, पुत्र और पवित्र आत्मा हमें और गहराई में जाने के लिए बुलाते हैं!

पमेश्वर जो पिता है – "आरम्भ में, परमेश्वर...." बाइबिल इस तरह से शुरू होता है! समय से पहले **परमेश्वर था!** जब समय शुरु हुआ तब उसने सब कुछ रचा---- "स्वर्ग और पृथ्वी" (उत्पत्ति १:१) सृष्टि की शुरुआत से, **परमेश्वर अब वर्तमान में हैं,** अपनी सृष्टि का राजा! भजनकार ने इस तरह से इसे अभिव्यक्त किया है: "यहोवा ने अपना सिंहासन स्वर्ग में स्थिर किया है और उसका राज्य पूरी सृष्टि पर है!" (भजन १०३:१६) पूरे बाइबिल में यही विषय दोहराया गया है! उदाहरणार्थ इफिसियों ४:६ में पौलुस ने लिखा है कि वह "सबका एक ही **परमेश्वर और पिता हैं,** जो सबके ऊपर हैं, और सबके मध्य में, और सब में हैं!" आगे जाकर, बाइबिल इस बात का संकेत देता है कि **परमेश्वर रहेंगे!** भविष्य में भी वह राज करते रहेंगे! प्रेरित यूहन्ना ने उसके सम्बन्ध में लिखा है कि, " फिर मैंने स्वर्ग में, और पृथ्वी पर, और पृथ्वी के नीचे, और समुद्र की सब सृजी हुई वस्तुओं को, और सब कुछ को जो उनमें हैं, यह कहते सुना कि जो सिंहासन पर बैठा है, उसका और मेमने का धन्यवाद और आदर और महिमा और राज्य युगानुयुग रहे! " (प्रकाशितवाक्य ५:१३) परमेश्वर अपनी सृष्टि और रचनाओं पर राज करता है और शासन करता है!

परमेश्वर जो पुत्र है! परमेश्वर ने जो पिता है, यीशु को अपना सारा प्राधिकरण दिया है| यीशु ने कहा, "स्वर्ग और पृथ्वी का सारा अधिकार मुझे दिया गया है|"(मत्ती २८:१८) प्रेरित पौलुस ने यीशु के परम प्राधिकरण को बार-बार व्यक्त किया है| इफिसियों को लिखी अपनी पत्री में पौलुस ने उस आधिकारिक शक्ति का वर्णन किया है!

> *और उस की सामर्थ्य हमारी ओर जो विश्वास करते हैं, कितनी महान है, उसकी शक्ति के प्रभाव के उस कार्य के अनुसार जो उसने मसीह के विषय में किया,कि उसको मरे हुओं में से जिलाकर स्वर्गीय स्थानों में अपनी दाहिनी ओर सब प्रकार की प्रधानता और जो अधिकार और सामर्थ्य और प्रभुता के और हर एक नाम के ऊपर, जो न केवल इस लोक में पर आनेवाले लोक में भी लिया जाएगा, बैठाया....*

यीशु कौन है इसे समझाते हुए, इब्रानियों के लेखक ने पुत्र का वर्णन इब्रानियों १:३ में यों करते हैं :

- वारिस – उसके पिता ने यीशु को सभी चीज़ों का वारिस नियुक्त किया है|
- सृजनहार- पिता और पवित्र आत्मा के साथ मिलकर यीशु ने "पूरे विश्व को रचा|
- प्रतिक्षेपक/परावर्तक- यीशु हमारे समक्ष परमेश्वरके महिमा की प्रभा को व्यक्त करता है| यीशु परमेश्वर की अनुकृति है: उसके अस्तित्व का हूबहू प्रतिनिधित्व है|
- निर्वाहक- यीशुने प्रति सेकंद, विश्व की हर व्यवस्था को अपने सामर्थ्यशाली वचन से एक साथ धारण किया है|
- शोधक-अपने आपको क्रूस की मृत्यु के लिए समर्पित कर, यीशु ने "पापों का शुद्धिकरण" उपलब्ध करवाया|
- शासक- मृतोत्थान के पश्चात्, यीशु स्वर्ग की महिमा के दाहिने हाथ में बैठा" जहाँ से वह राज और शासन करता है|

निःसंदेह यीशु प्रभु है| और एक दिन " जो स्वर्ग में और पृथ्वी पर और जो पृथ्वी के नीचे हैं, वे सब यीशु के नाम पर घुटना टेकें और परमेश्वर पिता की महिमा के लिए हर एक जीभ अंगीकार कर लें कि यीशु मसीह ही प्रभु है|" (फिलिपियों २:१०-११)

परमेश्वर जो पवित्र आत्मा है| पुत्र ने, तब, पवित्र आत्मा को हमारे अन्दर वास करने के लिए आमंत्रित किया ताकि हम समझ सकें कि परमेश्वर कौन है, यीशु ने हमारे लिए क्या किया है, तथा आत्मा के सामर्थ्य में कैसे जीते हैं| प्रेरित पौलुस हमसे कहते हैं कि "और तुम जो पुत्र हो, इसलिए परमेश्वर ने अपने पुत्र के आत्मा को, जो हे अब्बा, हे पिता कहकर पुकारता है, हमारे हृदय में भेजा है| (गलतियों ४:६) इसलिए तू अब दास नहीं, परन्तु पुत्र है; और जो पुत्र हुआ, तो परमेश्वर द्वारा वारिस भी हुआ| (गलतियों ४:७)

चूँकि पवित्र आत्मा हममें वास करता है, वह भरपूरी से यीशु का अनुसरण करने का जोश प्रदान करता है, उसकी मर्जी के अनुसार जीने के लिए हमें सामर्थ्य देता है, और हमारे लिए अनंतकाल हेतु जो कुछ वादे हैं वे भी देता है| चूँकि यह सत्य है, प्रेरित पौलुस हमें चुनौती देते हैं, "पर मैं कहता हूँ, आत्मा के अनुसार चलो,तो तुम शरीर की लालसा किसी रीति से पूरी न करोगे... यदि हम आत्मा के द्वारा जीवित हैं, तो आत्मा के अनुसार चले भी|" (गलतियों ५:१६,२५)

हम निष्कर्षतः कह सकते है कि पिता, पुत्र और पवित्र आत्मा समस्त विश्व पर शासन करते हैं और इसमें हम पर शासन करना भी शामिल हैं| परमेश्वर के साथ एक अति आत्मीय सम्बन्ध में प्रवेश करने की वजह से हम परमेश्वर के पुत्र और पुत्री हैं तथा मसीह की प्रभुता में परमेश्वर के राज और शासन के अधीन होकर जीने का चुनाव भी हमने किया है| अपने दैनंदिन निर्णयों में हम यह स्वीकार करते हैं कि "तू परमेश्वर है, मैं नहीं!" अपने विचारों, भावनाओं, व्यवहारों तथा कार्यों को मसीह के अधीन करने की एक प्रबल इच्छा होती है|

सत्र २- मसीह के साथ और गहरे सम्बन्ध स्थापित करें

परमेश्वर के अनुग्रह से| हमारे जीवन में यीशु की प्रभुता का अर्थ है कि वह हमारे साथ एक आत्मीय और व्यक्तिगत सम्बन्धको बढ़ाने की कोशिश लगातार कर रहा है| इस सम्बन्ध में अपना सही स्थान ढूँढने के लिए और मसीह के साथ आत्मीयता के साथ जीने के लिए, हमें वही करने का चयन करना है जो वह हमसे करवाना चाहता है| जब हम अपनी उम्मीदों, सपनों, इच्छाओं और निर्णयों को दैनंदिन रूपसे उसे सौंपते हैं, तब हम उसकी उपस्थिति में पल-पल जी सकते हैं, उसका आनंद लेते हुए|

यीशु की प्रभुता में जीने का अर्थ क्या होता है उसका एक शीशे से भी साफ़ चित्र प्रेरित पौलुस ने हमें दिया है| पौलुस एक "चुभते हुए काँटे" का अनुभव करते थे| हमे भी इनका अनुभव मिलता ही रहता है| शायद यह शारीरिक कमज़ोरियों की ओर संकेत कर रहा है या फिर किसी नाकामयाब रिश्ते की ओर, किसी प्रिय व्यक्ति के खोने के सम्बन्ध में या फिर कोई पापमय आदत| हम रिक्त स्थान की पूर्ति कर सकते हैं| परमेश्वर ने पौलुस के "काँटे" का प्रयोग उसके अन्दर एक निरंतर टूटेपन का निर्माण करने के लिए किया| और परमेश्वर चाहते हैं कि हम भी टूटेपन का अनुभव करें| केवल टूटेपन की अवस्था में हम यीशु की प्रभुता को समर्पित होंगे| पौलुस ने प्रभु से विनति की कि वह उस काँटे को निकाल दे| परन्तु उसने नहीं निकाला| उलटे परमेश्वर ने उससे कहा कि मेरा अनुग्रह तेरे लिए बहुत है क्योंकि मेरी सामर्थ्य निर्बलता में सिद्ध होती है| (२ कुरिन्थियों १२:९)

हम मसीही जीवन अपने बलबूते पर नहीं जीते हैं| अपितु परमेश्वर के अनुग्रह से जीते हैं – क्रूस और मृतोत्थान के ज़रिए उसकी अलौकिक योग्यता से |अपने टूटेपन, हम परमेश्वर के अनुग्रह में जीना सीखते हैं| उसी अनुग्रह में, वह अपना सामर्थ्य प्रदान करता है|

तब, पौलुस के समान, हम कह सकते हैं, और उसने मुझसे कहा, मेरा अनुग्रह तेरे लिए बहुत है; क्योंकि मेरी सामर्थ्य निर्बलता में सिद्ध होती है, इसलिए मैं बड़े आनंद से अपनी निर्बलताओं पर घमंड करूँगा, कि मसीह की सामर्थ्य मुझ पर छाया करती रहे | इस कारण मैं मसीह के लिए निर्बलताओं और निंदाओं में और दरिद्रता में और उपद्रवों में और संकटों में प्रसन्न हूँ; क्योंकि जब मैं निर्बल होता हूँ, तभी बलवंत होता हूँ|

२ कुरिन्थियों १२:९-१०

अपने टूटेपन में, हम मसीह की उपस्थिति और सामर्थ्य का अनुभव करते हैं |

हे परमेश्वर, मैंने तेरी भलाई चखी है और इसने मुझे तृप्त किया है और अधिक के लिए मेरी प्यास भी बढ़ाई है| और अधिक अनुग्रह की ज़रुरत के प्रति मैं कष्टमय सचेतता रखता हूँ| हे परमेश्वर जो त्रैक्य है, मैं अपनी इच्छा हीनता के लिए बहुत शर्मिंदा हूँ, मैं चाहता हूँ कि तुझे चाहूँ; मैं और अधिक लालसा से भर जाना चाहता हूँ; मैं और अधिक प्यासा होने के लिए प्यासा हूँ|

२ कुरिन्थियों १२:९-१०

आत्मीयता के लिए आमंत्रण| परमेश्वर जो पूरे विश्व पर राज और शासन करता है, अति गहराई से हमसे प्रेम करता है और बड़े आनंद से हमसे प्रसन्न होता है| वह बड़े जोश से हमें पाने की कोशिश करता है | मसीह के माध्यम से उसने हमारे लिए मार्ग बनाया है ताकि हम उस तक पहुँच सके| उसे समझने के लिए और उससे प्रेम करने के लिए हमें सारे साधन जुटाए है| वह हर एक को बुलाता है ताकि "हम अपने प्रभु परमेश्वर से पूरे दिल से, पूरे प्राण से और पूरे मन से प्रेम कर सके|" (मत्ती २२:३७) वह हमें रोज़ बुलाता है कि हम उसके साथ आत्मीय सम्बन्ध स्थापित करें और यीशु की प्रभुता में उसे पाने के लिए पूरे जोश से कोशिश करें| जैसे-जैसे हम उसके और करीब आने की इच्छा लेकर एक-एक दिन जीते हैं, वैसे-वैसे हम यीशु को अपने प्रभु के रूप में व्यक्तिगत रूपसे जानने लगते हैं!

आत्मसमर्पण की प्रार्थना

हे पिता, मैं तेरे हाथों में आत्मसमर्पण करता हूँ;
जो तू चाहे मेरे साथ कर|
तू जो कुछ करे, मैं धन्यवाद देता हूँ|
मैं सब बातों के लिए तैयार हूँ,
मैं सभ कुछ स्वीकार करता हूँ |

मैं तेरे हाथों में अपने प्राण देता हूँ;
अपने ह्रदय के समस्त प्रेम से मैं इसे अर्पित करता हूँ,
क्योंकि मैं तुझसे प्रेम करता हूँ, प्रभु,
इसलिए अपना सर्वस्व देना मेरी ज़रुरत है,
अपने आपको तेरे हाथों में समर्पित करना,
निःसंकोच,
और असीम विश्वास के साथ,
क्योंकि तू मेरा पिता है|
आमीन!

चार्ल्स डे फकाउल्ड

कठिन सवाल

अपने आपको १-१० के पैमाने पर रखते हुए इन प्रश्नों के उत्तर दें| उन उत्तरों के आधार पर एक संक्षिप्त अनुच्छेद लिखें जिसमें आपने यीशु के साथ आत्मीयता बढ़ाने के लिए कौन से सच्चे और विशिष्ट निर्णय लिए हैं उनका वर्णन हो |

१. आप परमेश्वर के प्रति अपने जोश को किस पैमाने पर रखते हैं ?

१ २ ३ ४ ५ ६ ७ ८ ९ १०

२. आप परमेश्वर के प्रति परमेश्वर के जोश को किस पैमाने पर रखते हैं?

१ २ ३ ४ ५ ६ ७ ८ ९ १०

३. आपके बारे में सब कुछ जानते हुए भी परमेश्वर आप से कितना प्रेम करते हैं, इसके बारे में आपका सच्चा अनुमान क्या है?

१ २ ३ ४ ५ ६ ७ ८ ९ १०

४. आप अपने मन में, ह्रदय में, जीवन में तथा संबंधों में कितने शुद्ध हैं?

१ २ ३ ४ ५ ६ ७ ८ ९ १०

५. परमेश्वर की दृष्टि में आप कितने पवित्र हैं?

१ २ ३ ४ ५ ६ ७ ८ ९ १०

६. आप के और परमेश्वर के बीच में जो घनिष्ठता है उसे आप किस पैमाने पर रखते हैं?

१ २ ३ ४ ५ ६ ७ ८ ९ १०

मेरे जीवन में यीशुके प्रभुत्व से सम्बंधित सच्चे और विशिष्ट निर्णय :

युवा सेवकाई के सिद्धांत

यीशु के साथ आप एक ऐसे आत्मीय सम्बन्ध में कैसे आगे बढ़ सकते हैं जो आपको पहले से अधिक गहरे प्रेम में ले जाएँ ?

लक्ष्य: प्रेम

१ तीमुथियुस १:५ को तीन बार पढ़ें| टिप्पणियाँ बनाएँ और नीचे दिए गए शब्दों को परिभाषित करें| हर वचन को आप जितने बार पढ़ते हैं उसमें एक सूक्ष्म दृष्टि जोड़ते जाएँ|

> *आज्ञा का सारांश यह है कि शुद्ध मन और अच्छे विवेक और कपट रहित विश्वास से प्रेम उत्पन्न हो|*
>
> *१ तीमुथियुस १:५*

प्रेम आता है.....

- शुद्ध मनसे
- अच्छे विवेक से
- निष्कपट विश्वास से

यीशु से घनिष्ठता की ओर

इन प्रश्नों से अपने-आपको चुनौती दें तथा दिए गए वचनों पर विचार करें ताकि यीशु से घनिष्ठता बढ़ाने में यह सहायक हो|

शुद्ध हृदय

१. क्या विरुद्ध लिंग के व्यक्ति के प्रति मेरे मन में अशुद्ध विचार हैं? (२ तीमुथियुस २: २२)

२. क्या मैं कष्ट पहुँचाता हूँ, शिकायत करता हूँ, या मैं आलोचनात्मक रवैया रखता हूँ? (फिलिपियों २:१४-१५)

अच्छा विवेक

३. क्या मैं अपने माता-पिता और परिवार का सम्मान और आदर करता हूँ? (इफिसियों ६: १-४)

४. क्या कड़वाहट या क्रोध मुझे किसी को क्षमा करने से रोक रहा है? (मत्ती ६: १४-१५)

५. क्या मैंने किसी के साथ कोई गलत बर्ताव किया है?(मत्ती ५: २३-२४)

सच्चा/निष्कपट विश्वास

६. क्या मैं झूठ बोलता हूँ, चोरी करता हूँ, या ठगता हूँ? (कुलुस्सियों)

७. मेरे जीवन में क्या कोई ऐसा क्षेत्र है जहाँ यीशु प्रथम नहीं है? (मत्ती ६:३३)

व्यावहारिक कदम

- आज,पंद्रह मिनिट निकालकर विचार करें और लिखें कि परमेश्वर आपमें प्रसन्न किन-किन बातों से होते हैं|

- पूर्व पन्ने में दिए गए समस्याओं में से उस समस्या को चुनें जहाँ आप सर्वाधिक संघर्ष करते हैं और आप आज्ञाकारिता के किन कदमों को लेंगे उन्हें लिखें| इस समस्या में यदि आप आज्ञाकारिता दिखाएँगे तो आप यीशु के साथ अपने सम्बन्ध में और गहराई में जायेंगे|

- एक समस्या पर कार्य कर लेने के बाद,आज्ञाकारिता के अगले कदम के बारे में परमेश्वर से पूछते हुए दूसरी समस्या की ओर बढें| इस प्रक्रिया को तब तक दोहराते रहें जब तक आप इस समस्या से सम्बंधित हर कदम पर आज्ञा का पालन नहीं करतें|

- सबसे अधिक पूछे जाने वाले प्रश्न' इस विभाग में 'मसीह के साथ और गहराई में जाओ' पर आधारित जो पाँच प्रश्न और उत्तर दिए गए हैं उन्हें पढ़िए| आप जानेंगे कि क्षमा कैसे पाएँ और करें, गलत बर्ताव को कैसे बदलें, जीवन के हावी होने वाली समस्याओं का सामना कैसे करें और यीशु और बेहतर कैसे जानें|

- परमेश्वर के साथ रोज़ अकेले में समय बिताते रहिए | कुछ समय पश्चात् यही आदत यीशु के साथ आपकी घनिष्ठता को गहरा करेगा |

आज्ञाकारिता ही आत्मिक समझ के लिए सुनहरा नियम है, न कि बुद्धिमत्ता|
आज्ञाकारिता के कार्यों के पीछे सर्वशक्तिमान परमेश्वर की वास्तविकता है|

ओसवाल्ड चैम्बर्स

मसीह के साथ और अधिक गहराई में जाने हेतु उपकरण

व्यावहारिक कदम

बैरी सेंट क्लेयर आपको परमेश्वर के पुत्र के साथ एक जोशीले भेंट के उद्देश्य से ले जाते हैं | आप यीशु कौन हैं इस बात को पहचान जाएँगे|

यीशु के समान नहीं इस पत्रिका में, आप परम “सड़क-सफ़र” लेंगे|

यीशु के समान नहीं इस पत्रिका में, यीशु के जीवन, मृत्यु, मृतोत्थान, स्वर्गारोहण, और द्वितीय आगमन का जो सड़क-सफ़र है वह चालीस दिन तक चलता रहेगा |

आप यीशु के बारे में जो कुछ सोचते हैं उसको एक चुनौती मिलेगा और आप जो है वह भी बदल जाएगा|

परमेश्वरके साथ एकांत में समय बिताना

यीशु के साथ आप अपने रिश्ते को अधिक गहरा कैसे बना सकते है? अन्य किसी भी रिश्ते के समान आप यीशु को आत्मीयता से तभी जान सकते हैं जब आप उसके साथ समय बिताते हैं| जैसे आप यीशु के करीब आते हैं वैसे वह भी आपके करीब आना चाहता है| परमेश्वर के साथ एकांत में समय बिताने के लिए यह पुस्तक आपकी सहायता करेगी जब आप

- बाइबिल का अध्ययन करेंगे
- वचन कंठस्थ करेंगे
- प्रार्थना का आनंद उठाएँगे
- स्तुति का उत्सव मनाएँगे
- धन्यवाद देंगे
- अपने पापों को कबूल करेंगे
- खुद के लिए प्रार्थना करेंगे
- दूसरों के लिए प्रार्थना करेंगे

इन संसाधनों को www.reach-out.org पर प्राप्त कर सकते हैं

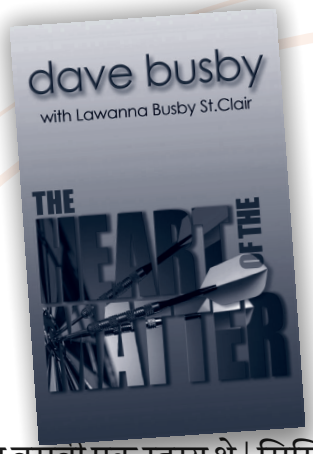

विषय का मूल

डेव बसबी की परमेश्वर के पीछे चलने की जीवनभर की खोज इस किताब के हर पन्ने में आपको स्पष्ट रूपसे दिखाई देगा| मृत्यु से चार वर्ष पूर्व डेव द्वारा लिखित इस पुस्तक की ५०,००० से अधिक प्रतियाँ बिकी| उनकी पत्नी लवान्ना द्वारा उत्परिवर्तित करने के बाद, अब हर अध्याय के पूर्व डेव के व्यक्तिगत पत्रिका डाले गए हैं जिन्हें पहले कभी प्रकाशित नहीं किया गया है| हर अध्याय के बाद आगे के अध्ययन के लिए कुछ प्रश्न और चर्चा-योग्य कुछ विचार दिए गए हैं जिसकी वजह से यह हर उम्र के लिए एक आदर्श बाइबिल-अध्ययन-पुस्तिका बन गई है|

डेव बसबी एक रहस्य थे | सिस्टिक फाइब्रोसिस, पोलियो, मधुमेह, ह्रदय-रोग और जिगर का रोग जैसी शारीरिक व्याधियों के मध्य से एक अद्भुत ऐसी आत्मिक शक्ति आई जो २ कुरिन्थियों १२:१० का जीवित प्रमाण है: “क्योंकि जब मैं निर्बल होता हूँ तब मैं सशक्त होता हूँ|” यह कहना कि यीशु ही डेव का एकमात्र आशा था कोई घिसीपिटी बात नहीं थी अपितु एक रोज़ाना की वर्तमान वास्तविकता थी| आप इस बात से अचम्बित मत हो जाइए यदि मामले के तह तक छानबीन करते वक्त आप परमेश्वर की उपस्थिति से प्रभावित हो जाएँ |

www.reach-out.org से इन संसाधनों को मंगवाइए

अन्य अनुशंसित वाचन

- ब्रेन्नन मैन्निंग रचित अब्बाज़ चाइल्ड
- बिल थ्राल,ब्रूस मक्निकोल,और जॉन लिंच द्वारा रचित टू फेस्ड
- पीटर स्कज़्ज़ेरो रचित इमोशनली हेल्दी स्पिरिचुअलिटी
- ब्रेंट कर्टिस और जॉन एल्द्रेज़ रचित द सेक्रेड रोमांस

कार्य योजना

यीशु के साथ अपनी घनिष्ठता बढ़ाने के लिए आप वर्तमान में क्या प्रयास कर रहे हैं ?

आगे बढ़ते हुए ... अपने आविष्कारों को इस सत्र से आगे बढ़ाते हुए एक निराली कार्य योजना बनाइए|

यीशु के साथ अपनी घनिष्ठता बढ़ाना आपके लिए **महत्वपूर्ण क्यों हैं?**

यीशु के साथ अपनी घनिष्ठता बढ़ाने के लिए आपका **लक्ष्य क्या होगा?**

यीशु के साथ अपनी घनिष्ठता बढ़ाने के लिए आप **किस के प्रति उत्तरदायी होंगे?**

यीशु के साथ अपनी घनिष्ठता बढ़ाने के लिए आप उससे **कहाँ मिलेंगे?**

यीशु के साथ अपनी घनिष्ठता बढ़ाने के लिए आप **कब समय निकाल पाएँगे?**

जोश से प्रार्थना करें

लक्ष्य

जोशपूर्ण प्रार्थना के लिए माहौल की निर्मिती करना

सत्र ३

जोश से प्रार्थना करें
सत्र ३

यीशु केंद्र

मेरे बेटे के पास एक टी-शर्ट था जिस पर यह वाक्य लिखा हुआ था: "यीशु में मैं शैतान के लिए एक दुस्वप्न हूँ |" जोश से पूर्ण प्रार्थना का अर्थ है यीशु के निकट आना और फिर उसे शैतान के अंधकारपूर्ण राज्य को पीछे ढकेलते देखना और उसके स्थान पर यीशु के प्रकाश के राज्य को आते देखना |जब हम नियमित रूपसे जोशीले प्रार्थना में नहीं रहते, शैतान हमारा व्यक्तिगत दुस्वप्न बन जाता है| अंधकार के राज्य की जकड़ में कई बच्चे हैं|परमेश्वर के सामर्थ्य के प्रदर्शन के द्वारा गड्ढ़े से लोगों को निकालकर उनके पैर चट्टान पर स्थापित करने के लिए तथा उन्हें अंधकार के राज्य से बाहर लाकर प्रकाश के राज्य में लाने के लिए जोशीली प्रार्थना ही एकमात्र हथियार है | तब वे शैतान के लिए एक दुस्वप्न बन जाते हैं|

इब्रानियों के रचयिता ने एक ऐसे चित्र की रचना की है जो हमें यह दर्शाता है कि क्यों जोशीली प्रार्थना हमारे व्यक्तिगत जीवन के लिए, छात्रों के लिए और उन हजारों किशोरों के लिए रक्षा की पहली पंक्ति होनी चाहिए जो हमारे आस-पास हैं और जिन्हें यीशु की ज़रुरत हैं

> *इसी लिए जो उसके द्वारा परमेश्वर के पास आते हैं, वह उनका पूरा-पूरा उद्धार कर सकता है, क्योंकि वह उनके लिए विनती करने को सदा जीवित है|*
>
> *इब्रानियों ७:२५(RSV)*

यीशु काबिल है ! इस तथ्य को न समझने की वजह से ही जोशीली प्रार्थना का अभाव रहता है| इब्रानियों के रचयिता ने इसे पहले ही ग्रहण कर लिया है | इब्रानियों १:२-३ की ओर मुड़ने पर इसी बात का बोध होता है कि यीशु काबिल है क्योंकि:

- वह "हर एक चीज़ पर वारिस है|" अपने पिता से उसने बिल गेट्स से भी अधिक विरासत में पाई है------ और बहुत सारा पीछे भी छूट गया है |
- वह " वह है जिसके द्वारा परमेश्वर ने यह सारा विश्व बनाया है|" चूँकि दुग्धमेखल के एक छोर से दूसरे तक सफ़र करने के लिए १००,००० प्रकाश वर्ष लग जाते हैं और एक प्रकाश वर्ष ५.८८ खरब मील है और दुग्धमेखल अनेक आकाशगंगाओं में से केवल एक आकाशगंगा है, यह सिद्ध होता है कि यीशु एक काबिल सृजनहार है|
- वह "परमेश्वर की महिमा को प्रतिबिंबित" करता है| यीशु को देखना परमेश्वर की छवि देखने जैसा है| परमेश्वर जो कुछ है, यीशु वह सब है|

- वह "अपने वचन के सामर्थ्य से सब कुछ संभाले हुए है|" केवल एक ही शब्द से दस लाख जीव – विषाणु से लेकर हाथी तक- और वे ख़रब व्यवस्थाएँ- आकाशगंगाओं से लेकर पर्यावरण-व्यवस्था – सबका निर्वहन होता है |
- उसने "पापों का शुद्धिकरण" किया| अपने लहू बहाने के ज़रिए, उसने हमारी शुद्धि का मार्ग खुला किया – उसके साथ एक रिश्ता और हमारे पापों के लिए क्षमा |
- चूँकि वह "उच्च महिमा के दाहिने हाथ में बैठा है" वह शासन करता है| क्रूस और पुनर्जीवन के बाद, यीशु अब परमेश्वर के दाहिने हाथ पर विराजमान होकर समस्त विश्व पर राज करता हैं |

मित्रों को ला सकते हैं और कम से कम खर्च में यीशु को प्रस्तुत किया जा सकता है|

यीशु की योग्यता अद्भुत है| यह निर्विवाद है: वह "पूर्णतः बचा" सकता है! वह अपनी योग्यता उन लोगों की ओर से कार्यान्वित करता है " जो उसके माध्यम से परमेश्वर के निकट जाते हैं" (इब्रानियों ७:२५)

प्रार्थना एक ऐसा संचार का उपकरण है जो परमेश्वर ने हमें "अपने पास आने" के लिए दिया है|

हम उसके करीब आ सकते हैं | क्योंकि "हमारे पास एक महान और उच्च याजक जो स्वर्गीय अथ्स्रों में रह चुका है, परमेश्वर का पुत्र, यीशु ... जो हर तरीके की परीक्षा में से गुज़रा है, ठीक जैसे हम गुज़रते हैं ---- फिर भी वह पाप रहित रहा," अब हम मुक्त भाव से उसकी उपस्थिति में प्रवेश कर सकते हैं| हम बड़े विश्वास और जोश के साथ उसके करीब जा सकते हैं |(इब्रानियों ४: १४-१६)

और जैसे हम जोश के साथ प्रार्थना करते हुए परमेश्वर के निकट जाएँगे, हम जानते हैं कि "वह हमारे लिए मध्यस्थी करने के लिए हमेशा के लिए जिन्दा हो गया है" (इब्रानियों ७: २५)| जैसे हम यीशु के साथ संपर्क करते हैं, वह भी पिता के दाहिने हाथ में बैठकर हमसे संपर्क करता है| परमेश्वर की नज़र में हमारी प्रार्थना क्या है इसका एक अद्भुत चित्रांकन प्रेरित यूहन्ना ने किया है|

और उस धूप का धुआँ पवित्र लोगों की प्रार्थना सहित स्वर्गदूत के हाथ से परमेश्वर के सामने पहुँच गया| और स्वर्गदूत ने धूपदान लेकर उसमें वेदी की आग भरी और पृथ्वी पर डाल दी, और गर्जन और शब्द और बिजलियाँ और भूईडोल होने लगे |

प्रकाशितवाक्य ८: ४-५

केवल भोजन से पूर्व प्रार्थना करने के बजाय, अपनी योजना को परमेश्वर के समक्ष रखने तथा सभा को आशीषित करने की विनती करने के बजाय, या एक पारम्परिक आरंभिक या अंतिम प्रार्थना करने के बजाय, परमेश्वर हमें "उसके निकट आने का" आमंत्रण देता है| जब हम उसके निकट आते हैं, उसके अनुग्रह से परिपूर्ण सिंहासन के पास हमें सब कुछ मिलता है- दिशा, अंतर्दृष्टि, नज़रिया, सामर्थ्य, प्रोत्साहन, आत्मविश्वास और अन्य हमारी सारी ज़रूरतें | यह सब जोश से पूर्ण होकर प्रार्थना का नतीजा है|

कठिन सवाल

अपने आपको १ से १० के पैमाने पर रखते हुए, निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए| अपने उत्तर के परिणामस्वरूप, जोशीली प्रार्थना की आवश्यकताओं के लिए अपने सच्चे और विशिष्ट निर्णयों का वर्णन करते हुए एक संक्षिप्त अनुच्छेद लिखिए

१. प्रार्थना करना आपको कितना पसंद है?

१ २ ३ ४ ५ ६ ७ ८ ९ १०

२. परमेश्वर के साथ अकेले समय बिताने के लिए आप किस हद तक अपने आपको अनुशासित करते हैं?

१ २ ३ ४ ५ ६ ७ ८ ९ १०

३. अपने छात्रों के लिए प्रार्थना करने के लिए आप अपने युवा अगुवाओं से कितनी बार मिलते हैं?

१ २ ३ ४ ५ ६ ७ ८ ९ १०

४. अपने स्थानीय विद्यालय के परिसर में/ के लिए प्रार्थना करने के लिए आप अपने युवा अगुवाओं से कितनी बार मिलते हैं ?

१ २ ३ ४ ५ ६ ७ ८ ९ १०

५. आपके छात्रों में से कितने प्रतिशत छात्र परमेश्वर के साथ रोज़ाना अकेले प्रार्थना करते हैं ?

१ २ ३ ४ ५ ६ ७ ८ ९ १०

६. आपके छात्रों में से कितने प्रतिशत छात्र छोटे प्रार्थना दल में साप्ताहिक तौर पर सहभागी होते हैं?

१ २ ३ ४ ५ ६ ७ ८ ९ १०

जोश के साथ प्रार्थना करने हेतु मेरे सच्चे और विशिष्ट निर्णय :

युवा सेवकाई के सिद्धांत

हम प्रार्थना के लिए अपने जोश को कैसे बढ़ाएँ और जोश के साथ प्रार्थना करने के लिए दूसरों के लिए एक माहौल कैसे बनाएँ?

क्या आप प्रार्थना करना पसंद करते हैं?

क्या आप प्रार्थना करना पसंद करते हैं? या यह केवल एक कार्य है, एक दायित्व, परमेश्वर से अपनी माँग पूरी करवाने का एक तरीका?

प्रार्थना करना पसंद हैं |दिन भर में कई बार प्रार्थना करने की ज़रुरत महसूस होती है और प्रार्थना करने के लिए कष्ट उठाते हैं| प्रार्थना हमारे ह्रदय को इतना विशाल कर देता है कि वह परमेश्वर रुपी उपहार को समाने के काबिल बन जाए| माँगो और ढूँढो, और आपका ह्रदय इतना विशाल बन जाएगा कि आप उसे अंगीकार करके उसे अपने लिए रख सके|

मदर टेरेसा

यीशु को प्रार्थना करना पसंद है !

यदि हम यीशु के जीवन को एक नाटक के रूप में देखते हैं, तो यीशु सितारा है, अन्य सभी किरदार सहायक पात्र हैं और प्रार्थना पृष्ठभूमि है|

उसने प्रार्थना से शुरुआत की| (लूका ३: २१-२२)

वह प्रार्थना में जारी रहा| (यूहन्ना ५:१६)

- उसने रोज़ाना प्रार्थना की| (मार्क १:३५)
- उसने बड़े निर्णयों और आयोजनों से पूर्व प्रार्थना की |

लूका ६: १२-१३ ... शिष्यों को चुना

मत्ती १५:३६ ... ४००० को खिलाना

मत्ती१४ :२२-२३ ... पानी पर चलना

यूहन्ना ११: ४१-४२ ... लाजर को जिलाना

लूका ६:१६ ... ५००० को खिलाना

मत्ती २६:२६-२६ ... आखिरी भोजन

• उसने अपना सारा जीवन और अपनी सेवकाई प्रार्थना से ही संचालित किया| (लूका ५:१६)

उसने प्रार्थना में ही अंत किया| (लूका २२: ३६-४४, लूका २३:४६)

वह प्रार्थना करता ही रहता है| (इब्रानियों ७: २५)

प्रभु यीशु अभी भी प्रार्थना कर रहा है| ३० साल का जीवन, ३० साल की सेवकाई, मरने का एक भयानक कार्य| २००० वर्षों की प्रार्थना| प्रार्थना पर कितना ज़ोर है|

एस.डी.गॉर्डन

यीशु को अपने पिता से संपर्क करने का जोश था| वह चाहता है कि हम भी अपने स्वर्गीय पिता से संपर्क करने के लिए वही प्रेम महसूस करें|

क्या आप परमेश्वर के सामर्थ्य का अनुभव करते हैं?

हमारे सबसे अच्छे प्रयास में कोई शक्ति नहीं है|

निम्नलिखित शब्दों के प्रकाश में प्राप्त करने की, निष्पादन करने की और उसे पूरा करने की अपनी अभिलाषा के बारे में सोचिए:

"प्रार्थना केवल हमारी सर्वोच्च विशेषाधिकार और सबसे प्रिय आनंद ही नहीं...अपितु हमें उपलब्धि प्राप्त करने का सबसे प्रभावशाली शस्त्र भी है| बाकी सब कुछ हमें स्व-प्रयास के कीचड़ में लडखडाता हुआ और अव्यवस्था में फँसा हुआ छोड़ देता है, जो हमेशा से केवल एक अंधी गली ही रही है| बाकी सब हमें एक नाज़ुक छाल के समान जीवन की तूफानी नदी में बिना पतवार के, बिना दिशा सूचक यंत्र के, बिना चालक के छोड़ देता है| यदि हम परम प्रधान के मार्गदर्शन के बिना निर्माण करते हैं, जो एक सार्वकालिक योजना के तहत सारी बातों की आज्ञा देता है, हमारी मेहनत, कितनी भी मेधावी क्यों न हो, अंततः निष्फल ही होकर रहता है|" (एफ.जे. हेगेल, "प्रेयर: आवर हाईएस्ट प्रिविलेज," डिसिशन, जून, १९६६)

परमेश्वर के सबसे छोटे प्रयास में भी बहुत सामर्थ्य है

सामर्थ्य/प्रयास का जो अनुपात है उसे समझना कठिन नहीं है| परमेश्वर यिर्मयाह के माध्यम से कहता है:

मुझे पुकार और मैं तेरी सुनकर तुझे बड़ी-बड़ी और कठिन बातें बताऊँगा जिन्हें तू अभी नहीं समझता|

यिर्मयाह ३३:३

जब हम प्रार्थना करते हैं("मुझे पुकारो"), परमेश्वर हमें एक वचन देते हैं("मैं उत्तर दूँगा") कि वह अपनी शक्ति हमारी जगह जारी करता है("तुझे बड़ी-बड़ी और कठिन बातें बताऊँगा जिन्हें तू अभी नहीं समझता")

१६वीं सदी के जाने-माने पासबान, चार्ल्स स्पर्जिअन, अक्सर अपनी कलीसिया की सेवा-क्रम से पूर्व उस की यात्रा पर ले जाते थे| वे लोगों को तलघर में ले जाना पसंद करते थे| "यहाँ, मैं आपको इस कलीसिया का शक्ति संयंत्र दिखाना चाहता हूँ," उन्होंने कहा| जब स्पर्जिअन ने दरवाज़ा खोला, वहाँ कक्षभर पुरुष और स्त्रियाँ अपने घुटनों के बल बड़े जोश से प्रार्थना कर रहे थीं|

क्या आप अपनी युवा सेवकाई दल की कल्पना उस कमरे में बैठे लोगों के समान करते हैं?

आप जोश से पूर्ण प्रार्थना करना कैसे ज़ारी रखते हैं?

परमेश्वर के साथ रोज अकेले समय बिताकर

परमेश्वर के साथ रोज़ समय बिताने से उसके प्रति हमारा प्यार और हमारी आत्मीयता गहरी होती हैं|अब्राहम से मूसा से प्रेरित पौलुस ... से हम सब के लिए, परमेश्वर के साथ अकेले समय बिताना ही मसीही जीवन की सबसे महत्त्वपूर्ण अनुशासन है. परमेश्वर चाहते हैं कि हम भी इसको अपनाएँ!

बाइबिल नहीं | नाश्ता नहीं |

दूसरों के साथ प्रार्थना करने के माध्यम से

परमेश्वर के सारे संसाधन जो स्वर्ग में, यह पृथ्वी पर वे सारे निःशुल्क पेश किए गए हैं |

मैं तुमसे सच कहता हूँ, जो कुछ तुम पृथ्वी पर बाँधोगे, वह स्वर्ग में बँधेगा और जो कुछ तुम पृथ्वी पर खोलोगे, वह स्वर्ग में खुलेगा|फिर मैं तुमसे कहता हूँ, यदि तुम में से दो जन पृथ्वी पर किसी बात के लिए जिसे वे माँगे, एक मन के

मत्ती १८:१८-२०

जब हम “दो या तीन”मिलकर प्रार्थना करते हैं शक्ति ज़ारी की जाती है|

हम दो या तीन के साथ वैसी प्रार्थना कैसे करें जैसे यीशु ने हमें करने के लिए प्रोत्साहित किया है ?

नीचे दिए गए वाक्य और यीशु के शब्दों में जो व्यावहारिक गतिशीलता है उसको पहचानिए:
“जहाँ मेरे नाम से दो या तीन इकट्ठा होते हैं, वहाँ मैं मौजूद हूँ|”

गैर- मसीहियों के लिए प्रार्थना करने के लिए मसीही सप्ताह में बार मिलते हैं

हम दो या तीन के रूप में इकट्ठा हो सकते हैं—जैसे यीशु ने प्रोत्साहित किया—प्रार्थना त्रिक| व्यावहारिक कदमों में, आप प्रार्थना त्रिक कार्यनीति को अपनाएँगे|

प्रार्थना यीशु की शक्ति को आपके माध्यम से ज़ारी करती है जिससे आप लोगों को बदल सकें!

व्यावहारिक कदम

• यूहन्ना ५:१६ को स्मरण कीजिए|

• परमेश्वर के साथ अकेले में कम से कम २० मिनिट बिताने की प्रतिबद्धता रोज़ रखें जब तक यह आदत नहीं बन जाती| मूविंग टुवर्ड मचुरिटी सीरीज की टाइम अलोन विथ गॉड नोटबुक का इस्तेमाल एक मार्गदर्शिका के रूप में करें|

• अन्य दो युवा अगुवाओं को आमंत्रित करें--- अन्य कलीसियाओं और सम्प्रदायों से भी—प्रार्थना त्रिक में आपके साथ प्रार्थना करने के लिए निम्नलिखित तालिका में से ३ नाम चुनें, अपने नाम सहित, ३ सभाओं का समय और ३ अविश्वासी छात्रों का जिनके लिए आप प्रार्थना करेंगे |

अपने गैर-मसीही मित्रों के लिए प्रार्थना करने के लिए मसीही तीन बार सप्ताह में मिलते हैं

• अपने छात्रों को परमेश्वर के साथ एकांत में समय व्यतीत करना सिखाकर जोशपूर्ण प्रार्थना करने के लिए संघटित करें| मूविंग टुवर्ड मचुरिटी सीरीज की टाइम अलोन विथ गॉड नोटबुक का इस्तेमाल एक मार्गदर्शिका के रूप में करें|

• अपने छात्रों को प्रार्थना त्रिक में प्रार्थना करने के लिए सुसज्ज करके उन्हें जोशपूर्ण प्रार्थना करने के लिए संघटित करें| प्रार्थना त्रिक के खाके की जो कार्यनीति यहाँ उल्लिखित है और “एन ऑसम वे टू प्रे” में विस्तृत रूप से दिया गया है, उसका इस्तेमाल करें|

जोश के उपकरणों के साथ प्रार्थना करें

टाइम अलोन विथ गॉड नोटबुक

जब आप परमेश्वर के साथ एकांत में समय बिताते हैं तब आप क्या करते हैं ? बोलते हैं और सुनते हैं ! आप परमेश्वर के साथ बात करते हैं और उसे आप बात करने देते हैं | यदि आप नींद से उठते समय संघर्ष करते हैं, आप ऊब जाते हैं, या क्या करें आप

- नहीं जानते हैं, तो यह नोटबुक आप के लिए है|
- यह आपको सुबह उठ कर परमेश्वर से भेंट करने के लिए प्रोत्साहित करेगा|
- परमेश्वर के साथ समय व्यतीत करने के लिए यह आपको प्रायोगिक उपकरण देगा|
- आपकी अपनी अंतर्दृष्टि के जरिए यह बाइबिल को सजीव करेगा|
- एक साधारण प्रार्थना योजना के माध्यम से यह आपको परमेश्वर के संपर्क में लाएगा|

“एन ऑसम वे टू प्रे”

छात्र प्रार्थना के जरिए अपना जीवन जीने के लिए, अपने मित्रों से प्रेम करने के लिए और अपने जीवनी कहने के लिए उत्साहित होंगे| यह आठ-सप्ताह की अवधारणा उनके जीवन को, उनके परिसर को, और आपकी छात्र सेवकाई को प्रार्थना के माध्यम से बदलेगा | यह ८० पन्नों की जो छात्र-पत्रिका(Student Journal) है, वह मुफ्त में उपलब्ध है तथा आप इसे डाउनलोड भी कर सकते हैं | जो अगुओं की मार्गदर्शिका है (Leaders Guide) वह आठ सम्पूर्ण समूह-सत्र प्रदान करता है जिसमें प्रतिलिपि करने योग्य विज्ञप्ति-पत्रक, सुझाव और गतिविधियाँ हैं |

कार्य-योजना

फिलहाल ... जोश से पूर्ण प्रार्थना करने के लिए आप क्या कर रहे हैं ?

आगे बढ़ते हुए ... इस सत्र से अपनी खोजों के आधार पर अपनी निराली कार्य-योजना बनाइए|

आपके लिए और आपकी सेवकाई में जो अन्य लोग हैं उन सब के लिए जोशपूर्ण प्रार्थना करना **क्यों** ज़रूरी है?

आपके लिए और आपकी सेवकाई में जो अन्य लोग हैं उन सब के लिए जोशपूर्ण प्रार्थना करने के लिए आप **क्या** लक्ष्य स्थापित करेंगे?

आपके लिए और आपकी सेवकाई में जो अन्य लोग हैं उन सब के लिए जोशपूर्ण प्रार्थना करने के लिए आप **क्या** लक्ष्य स्थापित करेंगे?

आपकी प्रार्थना त्रिक प्रार्थना करने के लिए **कहाँ** मिलेंगी ?

आपकी प्रार्थना त्रिक **कब** मिलेंगी ?

अगुओं का निर्माण करें

लक्ष्य

गहरी और दीर्घकालीन सेवकाई के
लिए अगुओं का निर्माण करें

सत्र ४

अगुओं का निर्माण करें
सत्र ४

यीशु केंद्र

अगुआई में सबसे आसान तरीका है जो कोई भी मार्ग में लडखडाता है उसका इस्तेमाल करें|जिसमें भी आपको एक अगुआ की विशेषताएँ दिखेगी उस व्यक्ति को चाहे स्त्री हो या पुरुष, उसे एक अगुआ के स्थान पर स्थापित करें| यह दृष्टिकोण मुसीबत को आमंत्रण देता है| यीशु के नेतृत्व शैली से कितना अलग है!

जब हम यीशु द्वारा चुने गए शिष्यों को देखते हैं बाह्य स्तर वे सभी अजीब और निम्न वर्गीय लोगों का समूह लगते हैं जिनके लिए किसी भी प्रकार की सफलता पाना संभव नहीं है| यीशु ने उनमें ज़रूर कुछ देखा जो एक औसत व्यक्ति नहीं देख सकता| नहीं तो रोम के लिए चुंगी इकट्ठा करने वाले मत्ती को तथा अपने जीवन काल में रोम के विनाश की शपथ लेने वाले जोशीले शिमोन का चुनाव कौन करता ? केवल कल्पना कीजिए इन दो रिश्तों के कारण कितने संघर्ष निर्माण हुए| फिर शंकाशील थोमा का क्या? या डींगे हाँकने वाले अविवेकी पतरस? फिर विश्वासघाती यहूदा भी था| इतिहास गवाह है कि इनमें से अधिकांश किशोर थे |कौनसी वह कलीसिया होगी जो इन्हें नेतृत्व के गोपनीय दल में स्थान देती ? यीशु क्या सोच रहे थे?

हम दावे के साथ कुछ कह नहीं सकते| परन्तु एक बात स्पष्ट है| जब उन्होंने तीन साल के अगुवों का प्रशिक्षण इन 'सर्वोत्तम से भी कम' समूह के साथ पूरा किया तब उन्होंने पूरी दुनिया को उलट-पुलट दिया| हम यीशु से कौन-सी ऐसी बात सीख सकते हैं जिससे हम भी ऐसे अगुओं का निर्माण कर सके दो उनके समान करें |

टूटे हुए टुकड़े जब यीशु ने इन बारह लोगों के हृदय में देखा जिन्हें वे बुलाने वाले थे, उन्हें वहाँ घमंड, उद्दंडता और व्यक्तिगत ताकत दिखाई दिया| फिर भी, तीन साल के अंत में, वे टूटे हुए लोग थे, जो अपने जीवन के बिखरे हुए सपनों को देखकर सोच रहे थे ," अब वह तो ख़त्म हुआ, अगला क्या? वे ऊपरी कक्ष में अपने जीवन के दर से छिपे हुए थे - अपनी परिस्थिति को खुद से बदलने की अक्षमता से पूरी तरह से वाकिफ़| यीशु उनको अपनी काबिलियतों के अंत तक ले गए ताकि वे देख सके कि अगुआई "न ताकत से, न सामर्थ्य से परन्तु मेरे आत्मा के द्वारा" कहता है सर्वशक्तिमान प्रभु (ज़कर्याह ४:६) तब जाकर यीशु ने कहा "...तुम्हें सामर्थ्य मिलेगा..." (प्रेषितों के कार्य १:८)हमारे अन्दर नेतृत्व पनपेगा जैसे-जैसे हम क्रूस को गले लगाएँगे, और हम यीशु को हमें तोड़ने देंगे और फिर ऐसे व्यक्ति में ढालने देंगे जो उसका

प्रतिबिम्ब बने| हमारे अगुआ भी विकसित तब होंगे, जब वे भी क्रूस को अपनाकर, टूटेपन की अनुभूति पाएँगे और परमेश्वर को ढालने देंगे| अगुओं के दल को यह इज़ाज़त दी जाती है कि वे टूटे और ढाले जाए|रात बिताना अपने बारह शिष्यों के चयन को यीशु ने हलके में नहीं लिया| लूका हमसे कहते हैं, "यीशु प्रार्थना करने के लिए एक पर्वत पर गए और परमेश्वर से प्रार्थना करते हुए पूरी रात बिताई|" (लूकाकृत शुभवर्त्तमान ६:१२) यह अगले दिन उन बारहों को चुनने से ठीक पहले था | किसी ने कहा है, "किसी को पदच्युत करने का सही समय है उसके पदासीन होने से पूर्व का समय है|" उस सूक्ति को इस सन्दर्भ में देखते हुए हम कह सकते हैं कि "गलत अगुओं के चुनाव को टालने का उत्तम तरीका है उनका चुनाव ही न करना|" अपने निर्णय को परमेश्वर के हाथ में सौंपना ही एकमेव तरीका यह जानने का कि वे सही अगुआ हैं या नहीं है| और केन्द्रित प्रार्थना के माध्यम से परमेश्वर को उनका चुनाव करने दे| जितना अगुओं का दल सही अगुओं के लिए परमेश्वर को ढूँढेंगे, उसी अनुपात में उन्हें चुने हुए लोगों के साथ क्या करें यह जानने में सफलता मिलेंगी|

दिव्यदृष्टि की पूर्ति के लिए चयन करना यीशु ने बारहों को चुना| लेकिन एक अर्थ में तो उन्होंने यीशु को चुना था| उन्होंने उनसे कहा, " मेरे पीछे चलो, मैं तुम्हें मछुआरे बनाऊँगा|"(मत्ती ४ :१६) पर ध्यान रहे कि यीशु ने यह चुनाव यीशु ने एक-एक करके या दो जनों का किया, एक साथ पूरे दल का नहीं| उन्होंने उनको आमने-सामने चुनौती दी| उस समय उन सभी को यीशु सम्बन्धी एक व्यक्तिगत चुनाव करना पड़ा| यीशु की इस चुनौती में उनके शिष्यों के सम्बन्ध में उनकी दिव्य-योजना थी| सर्वप्रथम और सबसे महत्वपूर्ण बात यह थी कि वे चाहते थे कि उनके शिष्य उनका 'अनुसरण' करें | आत्मिक नेतृत्व के मूल का सार यही है | यह लोगों के इस्तेमाल के लिए कतिपय पदों को भरने के बारे में नहीं है ताकि उनकी युवा सेवकाई में उपयोग किया जा सके| अपितु यीशु के साथ उनके रिश्ते को प्रोत्साहन, विकास और पोषण देने के बारे में है| इसी से वे शिष्यों की अगुआई ठीक ढंग से कर पाएँगे| दूसरी बात है, यीशु ने अपने शिष्यों को वादा किया था कि वे मनुष्यों के मछुआरे बनेंगे| उन्होंने अपने शिष्यों को 'मत्स्यालय के रक्षक' बनने के लिए नहीं चुना | यीशु का साक्षात नेतृत्व की चुनौती किसी संघटना का निर्माण करने के लिए या संख्या बढाने के लिए नहीं था बल्कि विश्व-परिवर्तन के लिए था| उनकी दृष्टि बहुत ही सीधी और स्पष्ट थी | हम अपने नेतृत्व दल को इसी दृष्टि को समझने के लिए आह्वान दे सकते हैं|

रिश्तों के नियम यीशु रिश्तों के मूल्य को जानते थे| आखिरकार, उन्होंने अपने के संग अनंतकाल व्यतीत किया है और आत्मा के साथ उनका एक परिपूर्ण नाता है|(यह एक परिपूर्ण छोटा दल है)

इसलिए उन्होंने जो कुछ पिता और आत्मा के साथ अनुभव लिया है, वे उसी अनुभव को लेने के लिए अपने शिष्यों को बुलाते हैं|अगले तीन वर्ष के लिए उनका प्राथमिक केंद्र ये ही लोग थे| क्या उनका कोई और रिश्ता था? अवश्य| क्या उन्होंने बड़े समूह को संबोधित किया था? हम जानते हैं कि उन्होंने ऐसा किया था |परन्तु हर दिन के अंत में अपने पिता के नाते के बाद उन बारह शिष्यों के साथ जो उनका नाता था वह उनकी प्राथमिक चिंता थी| युवा अगुआ बच्चों से प्यार करते हैं | और हम उनके साथ काम करते हैं इसके पीछे हमारा प्रमुख कारण यह है कि हम उन्हें समझ सकते हैं | परन्तु हमारे कितने ऐसे अच्छे रिश्ते हो सकते हैं? अवश्य बारह से बढ़कर नहीं |यदि हम यीशु की सेवकाई को ध्यान से देखें और अपनी सेवकाई को उसी के अनुरूप बनाने की इच्छा रखते हैं, और यदि हम मानते हैं कि जवान लोग रिश्तों के कारण प्रभावित होते हैं और बदलते हैं, तो हमें यीशु के समान ही अगुओं का दल बनाना चाहिए| उस वक्त से हमारी सेवकाई उन बालिग़ नेताओं के माध्यम से गुणित जिनको हमने सज्ज और सशक्त किया है|

तुलित कार्य यीशु ने जिन लोगों को चुना, वह इसलिए नहीं चुना क्योंकि वे समान थे, परन्तु इसलिए कि वे अलग थे |उनके व्यक्तित्व की विविधता की वजह से उनमें विवाद तथा टकराव होते थे| परन्तु यीशु को यही पसंद था| उन्होंने उनका चयन उनके विविध आत्मिक दान के कारण भी किया | यीशु ने उनके व्यक्तित्व और वरदान से समूह में एक स्वस्थ तनाव पैदा होने दिया | वे जानते थे कि इन लोगों के पास आत्मिक वरदानों का सही मिश्रण था ताकि उनके संतुलित प्रयास से यीशु के स्वर्गारोहण के पश्चात एक नयी और युवा कलीसिया अचानक से प्रकट हो सके | उदाहरणार्थ पतरस एक प्रेरित था (इस चट्टान पर मैं अपनी कलीसिया बाँधूँगा)तो फिलिप एक इन्जीलवादी प्रचारक था | किसी भी युवा अगुआ में सारे दान नहीं हो सकते| युवा सेवकाई को संतुलित रूप देने के लिए कई अगुओं की आवश्यकता होती है| जब ये सारे गुण एक साथ प्रकट होते हैं तभी एक संतुलित नेतृत्व की कल्पना कर

समय का निवेश करना एक बार अपने शिष्यों का चुनाव कर लेने के बाद यीशु ने ज्यादा से ज्यादा समय उनके साथ बिताया| यदि हमने तीन वर्षों का एक रेखा-लेख बनाया और यीशु द्वारा अपने शिष्यों के साथ और आम लोगों के साथ बिताए गए समय को दो अलग पंक्तियों पर रखा तो शिष्यों के साथ बिताए गए समय की रेखा हमें ऊपर जाती हुई दिखाई देगी और लोगों के साथ बिताए गए समय की रेखा नीचे जाती हुई दिखाई देगी| उन्होंने शुरुआत में आम लोगों के साथ अधिकांश समय बिताया|

परन्तु धीरे-धीरे उन्होंने अपने शिष्यों के साथ अधिकांश समय बिताना शुरू कर दिया| अपनी पार्थिव सेवकाई के अंत में, उन्होंने लगभग अपना सारा समय अपने शिष्यों के साथ ही बिताया | युवा सेवकाई में अधिकतर बड़े-बड़े सामूहिक कार्यक्रम और गतिविधियाँ ही आयोजित की जाती हैं, जिसे बदलने की आवश्यकता है यदि हम यीशु के समान अपने अगुओं का निर्माण करना चाहते हैं| उन अगुओं में जो शिष्यों में अपना जीवन निवेशित करना चाहते हैं, हमें ऐसे अगुओं के निर्माण में अपना ज्यादा-से-ज्यादा समय निवेश करना चाहिए | यही एकमेव तरीका है जिससे सेवकाई अधिक गहरी और विकसित होगी|

बहुगुणित विकास जब यीशु ने अपने शिष्यों में निवेश किया, उनके मन में केवल महान आयोग था |

स्वर्ग और पृथ्वी पर सारा अधिकार मुझे दिया गया है| अतएव जाओ और सारे राष्ट्रों के शिष्य बनाओ, पिता, पुत्र और पवित्र आत्मा के नाम से बप्तिस्मा दो, और जो आज्ञाएँ मैंने तुम्हें दी हैं उनका पालन करना सिखाओ| और निश्चित रूपसे मैं तुम्हारे साथ इस युग के अंत तक हूँ |

मत्ती २८:१८-२०

वह मत्ती का संस्करण है | चारों इंजीलों में यह अभिलेख बद्ध है- साथ ही प्रेरितों के कृत्यों की पुस्तक में| अन्य इंजीलों में इन स्थानों में आपको यां मिलेगा- मरकुस १६:१५-१६, लूक २४:४७-४६, यूहन्ना २०:२१-२२, और प्रेरितों के कृत्यों में १:८| यीशु के अधिकार के अधीन होकर, यीशु के शिष्य दूसरों को शिष्य बनाने जाने वाले थे और वे शिष्य अपनी बारी में अन्य और को शिष्य बनाने वाले थे| और यह निरंतर जारी रहता है जब तक कलीसिया पूरे विश्व को शिष्य नहीं बना लेती|

सारे उपलब्ध पैसे, प्रौद्योगिकी(तकनीकी), साहित्य, और दूरदर्शन के प्रचारकों के रहते, हमें इस कार्य को अब तक पूरा कर लेना चाहिए था| परन्तु स्पष्ट है कि हमने यह पूरा नहीं किया है| क्यों नहीं? क्योंकि हम यीशु की चेले बनाने की आज्ञा को भूल गए हैं | शिष्यों की संख्या गुणित करने के बजाय हम कलीसिया में सदस्यों की संख्या बढ़ाते रहे| निम्नलिखित तालिका इन दो दृष्टिकोणों में जो नाटकीय अंतर है उसे दर्शाता है|

सत्र ४ – अगुओं का निर्माण करें

वर्ष	सदस्य सदस्य जुड़ते हैं	शिष्य शिष्य बहुगुणित होते हैं
पहला	१	१
दूसरा	२	२
तीसरा	४	६
चौथा	८	१८
पाँचवाँ	१६	५४
छठा	३२	१६२
सातवाँ	६४	१,४५८
इक्कीसवाँ	१,०४८,५७६	७,०१६,६१५,५२३

सदस्यों के स्तंभ में, ध्यान दें कि प्रतिवर्ष यदि एक सदस्य एक और सदस्य को जोड़ेगा, तब २१ साल में १,०४८,५७६ नए सदस्य होंगे|

दूसरी ओर, शिष्यों का स्तंभ दर्शाता है कि यदि एक व्यक्ति ने प्रति वर्ष एक शिष्य बनाया तो अगले साल तक दो शिष्य होंगे; फिर वे दो शिष्य अन्य दो शिष्यों बनाएँगे; फिर वे छह और दो शिष्यों को बनाएँगे; और इसी तरह यह बढ़ता जाएगा| गुणा की प्रक्रिया से, इक्कीस वर्ष में शिष्यों की संख्या ७,०१६,६१५,५२३ तक पहुँच जाएगी- इस समस्त विश्व की जनसंख्या अर्थात ६ अरब से भी अधिक | यह सब केवल एक शिष्य से शुरू होकर संभव होगा|

क्या होगा यदि आप अपने अगुओं के दल के माध्यम से बारह शिष्यों को चार से गुणा करेंगे? यीशु जानते थे कि महान आज्ञा(परमेश्वर से प्रेम करो) और महान आयोग (पूरे विश्व को शिष्य बनाओ)को पूरा करने का सबसे उत्कृष्ट तरीका है अगुओं का निर्माण करना | और अद्भुत बात तो यह है कि वह हमें यह करने के लिए विशेषाधिकार भी देता है |

कठिन प्रश्न

अपने आपको १ से १० के पैमाने पर रखते हुए इन प्रश्नों के उत्तर दीजिए| इन उत्तरों के परिणाम स्वरूप अपनी व्यक्तिगत ज़रूरतों और सेवा के लिए नेतृत्व की ज़रूरतों का वर्णन करते हुए एक संक्षिप्त अनुच्छेद लिखिए|

१. आप अपने स्वयंसेवकों, अभिभावकों और शिष्यों पर किस स्तर का प्रभाव रखते हैं?

१ २ ३ ४ ५ ६ ७ ८ ९ १०

२. आपके स्वयं सेवक किस स्तर तक प्रशिक्षण पाने की इच्छा रखते हैं?

१ २ ३ ४ ५ ६ ७ ८ ९ १०

३. आप किल स्तर तक अपने स्वयं सेवकों को प्रशिक्षण देने की इच्छा रखते हैं ?

१ २ ३ ४ ५ ६ ७ ८ ९ १०

४. कुल मिलकर आपके स्वयंसेवक कितनी आत्मिक तीव्रता रखते हैं ?

१ २ ३ ४ ५ ६ ७ ८ ९ १०

५. आपके स्वयंसेवक एक दूसरे के साथ रिश्तें बनाने में किस गहराई तक जाते हैं ?

१ २ ३ ४ ५ ६ ७ ८ ९ १०

६. आपके स्वयंसेवक बच्चों के साथ रिश्तें बनाने में किस स्तर तक शामिल होते हैं ?

१ २ ३ ४ ५ ६ ७ ८ ९ १०

मेरी व्यक्तिगत और सेवकाई के नेतृत्व की ज़रूरतें:

युवा सेवकाई के सिद्धांत

गहरी और दीर्घकालीन सेवकाई के लिए आप ऊँचे दर्जे के अगुआ कैसे बनाते हैं ?

नेतृत्व दल का उद्देश्य

यूहन्ना १७:२०-२६ में यीशु अपने शिष्यों के लिए अपने पिता से तीन प्रार्थना करते हैं | यीशु द्वारा प्रयोग में लाये गए उपर्युक्त वाक्यांशों को नीचे दिए गए वाक्यांशों से मिलाइए|

- यीशु के लिए प्रतिबद्धता
- एक दूसरे के लिए प्रतिबद्धता
- विश्व की सेवा करने की प्रतिबद्धता

यीशु के उपर्युक्त कथन से आप नेतृत्व दल के उद्देश्य को कैसे स्पष्ट करेंगे?

नेतृत्व प्रभाव है

एक अगुआ

- *जानता है कहाँ जाना है*
- *का अनुसरण करने वाले लोग होते हैं*

अगुओं के दल की प्रगति

यीशु के सम्पूर्ण तीन-वर्षीय सेवकाई को देखकर हमें पता चलता है कि यीशु क्रमशः उन्हें चार चरणों में से आगे ले जा रहे थे, कई बार ये चरण एक दूसरे से गूँथे होते थे या परस्पर-व्यापक होते थे |फिर भी हर चरण एक अद्भुत तत्व समान रूप से लिए हुए था | इस भाग और अगले भाग में दिए गए हर आयत का अन्वेषण करें और देखिए आप उसका आविष्कार कर सकते हैं या नहीं|

यीशु के ' नेतृत्व-विकास के चार-चरण:

१. मैं वह करता हूँ | (लूका ४:३१-३७ और ३८-४४)

२. मैं वह करता हूँ और वे मेरे साथ हैं |(लूका ५:१-११)

३. वे करते हैं और मैं उनके साथ हूँ |(लूका १०:१-१७)

४. वे करते हैं और मैं पृष्ठभूमि में रहकर उनको प्रोत्साहन देता हूँ|(लूका २४:४४-४६ और पूरा प्रेरितों के कार्य)

'वह' का सामर्थ्य

निम्नलिखित अनुच्छेदों में हम यीशु को विभिन्न रूपों में- जिसके बारे में भविष्यवाणी की गई थी ऐसे यीशु, रक्त और मांस युक्त यीशु, शिष्य बनाने वाले यीशु और आत्मा का दान देने वाले यीशु- जैसे-जैसे देखते जाएँगे, आपको इसके पूर्व पन्ने पर 'वह' शब्द को ध्यान से देखना, ढूँढना और पहचानना है-
'वह' क्या है? जब आपको 'वह' दिखाई दे, आपको उसपर गोलाकार लगाना है|

मसीहा आएगा 'वह' करने के लिए (यशायाह ६१:१-३)

प्रभु यहोवा का आत्मा मुझ पर है;
क्योंकि यहोवा ने सुसमाचार सुनाने के लिये मेरा अभिषेक किया
और मुझे इसलिये भेजा है कि खेदित मन के लोगों को शान्ति दूँ;
कि बंधुओं के लिये स्वतंत्रता का
और कैदियों के लिये छुटकारे का प्रचार करूँ;

कि यहोवा के प्रसन्न रहने के वर्ष का
और हमारे परमेश्वर के पलटा लेने के दिन का प्रचार करूँ;
कि सब विलाप करनेवालों को शान्ति दूँ

"और सियोन के विलाप करनेवालों के
सिर पर की राख दूर करके सुन्दर पगड़ी बाँध दूँ,
कि उनका विलाप दूर करके हर्ष का तेल लगाऊँ
और उनकी उदासी हटाकर यश का ओढ़ना ओढ़ाऊँ ;
जिस से वे धर्म के बांजवृक्ष और
यहोवा के लगाए हुए कहलाएँ
और जिस से उसकी महिमा प्रगट हो।"

यीशु मसीहा बनकर आए और यह कर दिया (लूका ४:१८-१९)

"कि प्रभु का आत्मा मुझ पर है,
इसलिये कि उस ने कंगालों को सुसमाचार सुनाने के लिये
मेरा अभिषेक किया है,
और मुझे इसलिये भेजा है,
कि बन्धुओं को छुटकारे का
और अन्धों को दृष्टि पाने का सुसमाचार प्रचार करूँ और कुचले हुओं को छुड़ाऊँ।"

शिष्यों ने 'वह' किया (मार्क ६:१२-१३)

फिर वे वहाँ से चले गये। और उन्होंने उपदेश दिया, "लोगों, मन फिराओ।"
उन्होंने बहुत सी दुष्टात्माओं को बाहर निकाला और
बहुत से रोगियों को जैतून के तेल से अभिषेक करते हुए चंगा किया।

अब हम कर सकते हैं यूहन्ना 14:12

मैं तुम से सच-सच कहता हूँ कि जो मुझ पर विश्वास रखता है,
ये काम जो मैं करता हूँ वह भी करेगा,
वरन इन से भी बड़े काम करेगा, क्योंकि मैं पिता के पास जाता हूं।

वह' क्या है?

यीशु ने कहा "जो मैं करता आया हूँ' हम भी करेंगे| यीशु क्या करते आये हैं?

'वह' यीशु की सेवकाई है:

•रोगियों को और भग्नहृदय-लोगों चंगा किया

•शैतान द्वारा कुचले हुओं को छुड़ाया

यीशु को जानने के बाद, युवा अगुओं का सबसे बड़ा विशेषाधिकार यह है कि वे यीशु की सेवकाई को भूखों, पीड़ित और निराश बच्चों तक ले जाए |

व्यावहारिक कदम

एक ऐसे दल की कल्पना करें जो यीशु के साथ एक आत्मीय सम्बन्ध प्रस्थापित कर रहे हैं, एक साथ प्रार्थना कर रहे हैं, और अपने जीवन का निवेश छात्रों में कर रहे हैं| उससे भी एक कदम बढ़कर सोचिए| ऐसे दल की कल्पना कीजिए जो 'वह' करने में सज्ज हैं | वे सुसमाचार की घोषणा कर सकते हैं, भग्न हृदयों को जोड़ सकते हैं, और बंदियों को छुड़ा सकते हैं | वाह! जैसे-जैसे आप इन व्यावहारिक कदमों को कार्यान्वित करेंगे आपकी यही दृष्टि एक यथार्थ में परिवर्तित हो सकती है|

१. प्रार्थना करें

एकाग्रचित्त होकर प्रार्थना में समय बिताएँ यह जानने के लिए कि परमेश्वर आपके नेतृत्व दल में किसे बुला रहा है |

२. अगुआई करे

कई कार्य करने के लिए आप लोगों को नियुक्त कर सकते है, परन्तु किसी दल का नेतृत्व करने के लिए उनमें से कोई नहीं | शुरुआत में प्राथमिक अगुआ ने अगुओं के दल का नेतृत्व करना चाहिए| जब अगुए स्वयं सुसज्ज हो जाते हैं, तब न केवल वे अन्य नेतृत्व दलों को सज्ज कर गुणित कर सकते हैं, अपितु नेतृत्व के लिए छात्र-शिष्यों को भी सज्ज और गुणित कर सकते हैं |

३. चुनाव करें

आप अपने नेतृत्व दल का चयन विभिन्न प्रकार के लोगों में से कर सकते हैं: वर्तमान में जो युवा-सेवा में है, किशोरों के अभिभावक, महाविद्यालयीन छात्र, और अन्य जो छात्रों से प्यार करते हैं और जिन्हें परमेश्वर की बुलाहट का एहसास है| हर किसी को नेतृत्व दल के लिए एक व्यक्तिगत आह्वान दे |

४. प्रतिबद्ध बनें

जब आप एक व्यक्तिगत आह्वान देते हैं, तब युवा सेवकाई सम्बन्धी अपनी बाध्यकारी दृष्टि को लिखित रूप से अभिव्यक्त करें |

५. तैयार करें

'अ पर्सनल वॉक विथ जीज़स क्राइस्ट' से शुरुआत कर अपने नेतृत्व दल को 'बिल्डिंग लीड़र्स सीरीज' पढ़ाएँ| हर व्यक्ति के लिए एक प्रति मंगवाइए| हर सभा से पहले आप स्वयं हर सत्र को पढ़ें| फिर 'बिल्डिंग लीड़र्स सीरीज' हर पुस्तक में से चर्चा-मार्गदर्शिका को पढ़कर प्रार्थनापूर्वक अपनी सभा की तैयारी करें। आपकी व्यक्तिगत तैयारी ही असर लाएगी |

६. मिलें

फिर समय निकालकर लोगों से मिलें जो अधिकांश लोगों के लिए सबसे लाभदायक होता है| यदि संभव हो तो किसी के घर पर मिलें| १ से १-१.५ घंटे के लिए लगातार मिलें | १५ मिनिट प्रार्थना में, ४५ मिनिट चर्चा में और १५ मिनिट युवा सेवकाई के बारे में बातचीत करें|

७. निवेश करें

सप्ताह दर सप्ताह अपने आपको लोगों के जीवन में निवेशित करने से उन्हें यीशु को करीब से जानने का, जो दान यीशु ने उन्हें दिए है उनके बारे में जानने का, तथा उन दानों का निवेश छात्रों के जीवन में कैसे करें यह जानने का अवसर मिलेगा|

हम मसीही जीवन अपने बलबूते पर नहीं जीते हैं| अपितु परमेश्वर के अनुग्रह से जीते हैं – क्रूस और मृतोत्थान के ज़रिए उसकी अलौकिक योग्यता से |अपने टूटेपन, हम परमेश्वर के अनुग्रह में जीना सीखते हैं| उसी अनुग्रह में, वह अपना सामर्थ्य प्रदान करता है|

८. मूल्यांकन करें

हर सामूहिक सभा के बाद, इस बात का मूल्यांकन करें कि आपने क्या किया और आप कैसे सुधार ला सकते हैं, समस्याओं को सुलझा सकते हैं और समायोजन कर सकते हैं |

बिल्ड लीडर्स टूल्स - फॉर वालंटियर्स

बिल्डिंग लीडर्स सीरीज़ बाइबिल से सम्बंधित एक प्रायोगिक योजना प्रदान करता है जो स्वयंसेवक अगुओं को सज्ज करें | वे इससे प्रोत्साहन, दृष्टि और कौशल पाएँगे ताकि वे विश्वासी छात्रों से रिश्ते बना सके और उनको शिष्य बना सके - साथ ही अविश्वासी छात्रों तक मसीह को पहुँचा सके | यह जो इस्तेमाल-के-लिए-आसान परस्पर संवादात्मक, तीन पुस्तकों का समूह है, इसकी हर पुस्तक में १२ सत्रों का समावेश हैं और यह आपकी कलीसिया की कार्य-तालिका के लिए अति अनुकूल है|

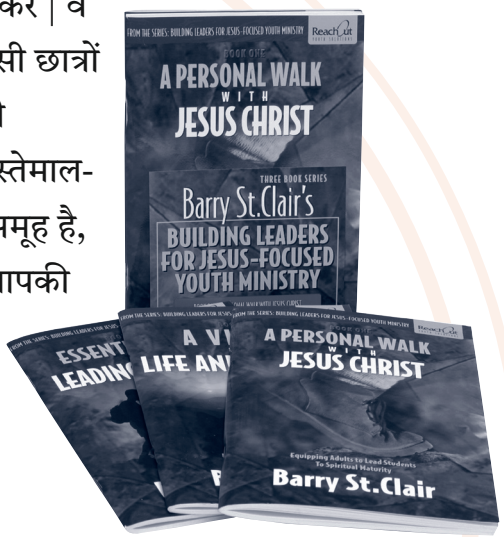

(पुस्तक १) **यीशु के साथ आत्मीयता में बढ़ने के लिए अगुओं को मार्गदर्शन करता है|**

अ विज़न फॉर लाइफ अॅन्ड मिनिस्ट्री (पुस्तक २) अपने जीवन और सेवकाई के लिए अगुओं की दृष्टि को व्यापक बनाता है|

एसेंशियल टूल्स फॉर लीडिंग स्टूडेंट्स (पुस्तक ३) छात्रों को प्रभावी ढंग से प्रभावित करने के लिए अगुओं को जिन कौशलों की आवश्यकता हैं वे जुटाती है |

बिल्डिंग लीड़र्स सीरीज (तीन पुस्तकों का समूह) में अ पर्सनल वॉक विथ क्राइस्ट(पुस्तक १), अ विज़न फॉर लाइफ एंड मिनिस्ट्री (पुस्तक २), एसेंशियल टूल्स फॉर लीडिंग स्टूडेंट्स (पुस्तक ३)- ये पुस्तकें शामिल हैं |

ऑडियो सेट में बैरी सेंट क्लैर, डेव बसबी, और लुई गिग्लियो के मुफ्त में उतारकर संगृहीत करने योग्य ६ सन्देश उपलब्ध हैं

इन संसाधनों को www.reach-out.org पर प्राप्त कर सकते हैं

बिल्ड लीडर्स टूल्स - फॉर पेरेंट्स

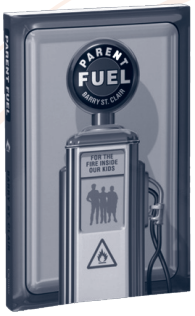

पैरेंट फ्यूल

३यह पुस्तक विश्व के #१ युवा अगुओं को - अभिभावकों को सज्ज करता है | अभिभावक जानते है अपने बच्चों से कैसे जुड़े - ह्रदय से ह्रदय मिलकर |जैसे-जैसे वे इस पुस्तक को पढेंगे वे परमेश्वर से अपने पूरे ह्रदय से प्यार करने के सम्बन्ध में और अधिक जानेंगे और साथ ही अपने बच्चों की अगुआई कैसे करें यह भी जानेंगे |अभिभावकों को इस बात का बोध होता है कि वे अपने बच्चों को शिष्य बनाकर उनके जीवन में तथा उनके बच्चों के दोस्तों के जीवन में आत्मिक निवेश कैसे करें |

पैरेंट फ्यूल किट

द पैरेंट फ्यूल कलीसियाओं को एक सरल, प्रायोगिक और बाइबिल से सम्बंधित उपकरण देता है जो अभिभावकों को सज्ज करें | संसाधनों का यह सम्पूर्ण सेट अभिभावकों के समूह की

- एक पुस्तक जो हमें एक ताज़ा दृष्टिकोण प्रदान करती है और बच्चों को परमेश्वर से जोड़ने के लिए मार्गदर्शन भी करती है |
- एक पत्रिका जो इस पुस्तक से आविष्कृत बातों को कार्यान्वित करने में अभिभावकों की सहायता करती है|
- ऑडियो CDs जो एक साक्षात प्रेरणादायी प्रस्तुतीकरण पर आधारित है|
  DVDs जिनमें ६ अत्यंत परस्पर-संवादात्मक, ५५ मिनिट के सत्र शामिल हैं| इनमें अलग-अलग अभिभावकों ने अपने-अपने संघर्षों और सफलताओं की अभिव्यक्ति की हैं
- एक छोटे से दल की शुरुआत और अगुआई करने के लिए एक अगुआ की मार्गदर्शिका

पैरेंट फ्यूल

पैरेंट फ्यूल पैरेंट पैक अभिभावकों को ३ संसाधन देते हैं- पुस्तकें,cds और पत्रिका जिनकी उन्हें अत्यावश्यकता है और जिनसे उनका प्रभाव किसी भी परिवार पर अधिकतम रहे|

इन संसाधनों को www.reach-out.org पर प्राप्त कर सकते हैं

कार्य-योजना

फिलहाल... अगुओं के निर्माण के लिए आप क्या कर रहे हैं ?

आगे बढ़ते हुए ... इस सत्र से अपने आविष्कारों को लेकर अपने लिए एक निराली कार्य-योजना बनाएँ|

अगुओं का निर्माण करना महत्वपूर्ण क्यों है?

अगुओं के निर्माण के लिए आपका लक्ष्य क्या होगा?

आप जिन अगुओं का निर्माण करेंगे वे कौन हैं ?

आप अपने नेतृत्व दल से कहाँ मिलेंगे ?

आप अपने नेतृत्व दल से कब मिलना आरम्भ करेंगे और कब तक जारी रखेंगे?

छात्रों को अनुयायी बनाएँ

लक्ष्य

जिन छात्रों को जीवन-परिवर्तन का अनुभव मिला हैं,
उन्हें शिष्य बनाएँ, ताकि वे दूसरों के जीवन में परिवर्तन ला सकें

सत्र ५

छात्रों को अनुयायी बनाएँ

सत्र ५

यीशु केंद्र

मसीही परिपक्वता की ओर बढाने के लिए छात्रों को अनुयायी बनाएँ

मसम्पूर्ण इतिहास में, परमेश्वर ने अपना सबसे महत्वपूर्ण कार्य अल्पसंख्यक के माध्यम से करवाया न कि बहुसंख्यक से| यीशु द्वारा एक छोटे से दल में किए गए निवेश ने पूरे विश्व में उथल-पुथल मचा दिया| (प्रेरितों के कार्य १७:६) अपने शिष्यों के जीवन में यीशु की सहभागिता पर एक केन्द्रित झलक डालने पर इस बात का एक स्पष्ट निर्देश मिलता है कि हमें अपने छात्रों को शिष्य बनाने के सबसे ज़रूरी और अहम् कार्य को कैसे करें|

चयन करें छात्रों को शिष्य बनाने की प्रक्रिया की शुरुआत उनके चयन से होती है | लूका ६:१२-१६ में हम पाते हैं कि यीशु ने परमेश्वर से प्रार्थना करने में पूरी रात बितायी(६:१२) अगले दिन यीशु ने अपने शिष्यों को अपने पास बुलाया (६:१३) उन्होंने अपने चुने हुए शिष्यों को आह्वान भी दिया और अवसर भी दिया ताकि वे उनके करीब आ सकें, उनका अनुसरण कर सकें और उनके सबसे नज़दीकी साथी बन सकें| उन्होंने उन्हें 'प्रेरित' कहकर संबोधित किया | अग्रिम रूप में उन्होंने यह स्पष्ट कर दिया कि वे यीशु के संदेशवाहक बनने वाले थे | उन्होंने केवल बारह शिष्यों को चुना, और वे कितने अनोखे और विविध थे ! यीशु ने अपनी सेवकाई का सम्पूर्ण भविष्य उन अत्यंत साधारण बारह लोगों के हाथों में इस विश्वास से रख दिया था कि उनके पीछे चलकर वे बारह लोग पूरे विश्व को बदलने के लिए तैयार हो जाएँगे| अपरिपक्व और अप्रशिक्षित छात्रों के दल को लेकर और उन्हें अपने साथ टखने का चुनाव करने से न केवल वे बदलेंगे बल्कि समयांतर से वे पूरे विश्व को बदलने में अपनि भूमिका भी निभाएँगे|

संबद्ध बनाएँ अपने शिष्यों के साथ सम्बद्धता बनाकर यीशु ने अपने चुने हुए शिष्यों को सिखाना जारी रखा| सम्मलेन में उपस्थित रहकर या किसी कक्षा में अपना नाम दर्ज करवाकर प्रशिक्षण नहीं दिया गया| बल्कि यीशु ने उनके साथ रहकर उन्हें प्रशिक्षित किया |

(मार्क ३:१४) यीशु के साथ समय बिताना, उनके साथ निरंतर एक आत्मीय सम्बद्धता में रहना उनके पाठ्यक्रम में शामिल था| यीशु ने अपने शिष्यों से कहा "मेरे पास आओ" और "मुझसे सीखो"| (मत्ती ११:२८-३०) और उन्होंने वह किया | उन्होंने जो देखा उससे वे चमत्कृत हुए- पानी द्राक्ष रस में परिवर्तित होना; ५००० लोगों को खिलाया जाना ; भयंकर तूफ़ान का शांत हो जाना|यीशु के कंधे से कंधा मिलकर चलते समय उन्होंने विश्वास को कार्यान्वित होते देखा| उनके साथ सम्बद्ध होकर उन शिष्यों ने परमेश्वर पर भरोसा करना सीखा | आपके साथ संबद्ध होने पर चुने हुए शिष्यों का दल विश्वास को क्रियाशील देखेंगे और परमेश्वर पर भरोसा करना सीखेंगे

प्रतिष्ठित करना कई लोग यीशु के पीछे चले| लूक कहते हैं कि वे "यीशु के साथ सफ़र कर रहे थे"(लूका १४:२५) उन्हें चमत्कार देखना ,यीशु की लोकप्रियता को बढ़ते देखना और उनकी सफलताओं का मज़ा लेना बड़ा पसंद था| परन्तु यीशु ने फौरन उनको प्रतिष्ठित कर अपने शिष्यों को एक अलग श्रेणी में रख दिया

लूका १४:२५-३४, हम यीशु को साधारण दर्शकों से अपने विश्वासी चेलों को अलग करते देखा| उन्होंने अपने शिष्यों को आह्वान दिया कि वे उन्हें अन्य सभी रिश्तों से ऊपर रखें(१४:२६), अपनी स्वार्थी अभिलाषाओं से बढ़कर यीशु को स्थान देना(१४:२७) और यीशु के पीछे चलने में जो कष्ट और बलिदान निहित है उन्हें अंगीकार करना (१४:२७)| फिर यीशु ने उन्हें एक कथा सुनाई जिसने उन्हें यह सोचने का मौका दिया कि उन्हें यीशु के पीछे चलने का कितना दाम चुकाना पड़ेगा | उन्होंने निष्कर्षतः कहा: " आप में से जो अपना सर्वस्व त्यागने को तैयार नहीं है वह मेरा शिष्य नहीं बन सकता है"(१४:३३) कई छोड़कर चले गए| बारह रह गए | यह जो अलग से प्रतिष्ठित करने की क्रिया थी इससे यीशु के शिष्यइस स्वादहीन जगत में एक विशिष्ट स्वादयुक्त "नमक" बन पाएँ| छात्रों को शिष्य बनाने का अर्थ है यीशु को सारे रिश्तों से ऊपर, विद्यालयीन गतिविधियों से ऊपर, अपनी अभिलाषाओं से ऊपर यहाँ तक कि स्वयं जीवन से भी ऊपर रखने के लिए मार्गदर्शन करना| फिर हमारे छात्र अपनी बोल-चाल में अपने को दूसरों से अलग रखेंगे और दूसरे छात्र उस नमक का स्वाद लेना चाहेंगे |

प्रदान करना यीशु अपनी बातचीत के माध्यम से अपने शिष्यों को जीवन प्रदान कर रहे थे |उन्होंने यह जीवन के हर क्षेत्र में किया | यीशु ने कोई भी सार शिक्षण नहीं दिया न ही यह कहकर कक्षा कार्य की

घोषणा की, " आज हम प्रार्थना के बारे में अध्ययन करने वाले हैं|"उलटे यीशु को प्रार्थना करते हुएदेखकर इतने प्रेरित हुए कि वे उत्सुक होकर उनसे कहा कि वे उन्हें प्रार्थना करना सिखाए (लूक ११:१-४) यीशु के शिष्य निरंतर उनसे पाते गए |उन्होंने नज़रिया, अंतर्दृष्टि, समझ, परिप्रेक्ष्य और सच्चाई, और बिना विशेष उल्लेख किए जीवन पाया- जीवन उन्हें यीशु में प्राप्त हुआ |(यूहन्ना १:४, ६:३५) छात्रों को शिष्य बनाने की प्रक्रिया वास्तविकता की महक पाएगी जब वे हमें जीवन जीते हुए देखेंगे- जो अच्छा है, जो बुरा है और जो कुरूप है| वे यीशु को हमारे ज़रिए अपने आपको अभिव्यक्त करते हुए पाएँगे|

प्रेम करना यीशु के संबंधों से प्रेम को मिटाने पर हम पाएँगे कि सबसे महत्वपूर्ण हिस्सा ही गायब है| यीशु अपने शिष्यों से प्यार करते थे| जब यूहन्ना को अपने जीवन का सबसे विकट समय याद आया तब उसे और क्या याद आया? यीशु ने "अपना सर्वोत्तम प्रेम कैसे दिखाया" वह याद आया|(यूहन्ना १३:१) यीशु के शिष्य होने का परिचायक चिह्न है प्रेम- यीशु के लिए प्रेम और एक दूसरे के लिए प्रेम| और यीशु ने अपना प्रेम कैसे प्रकट किया? यूहन्ना १३ में उन्होंने अपने शिष्यों के पैर धोने के सबसे नीच कार्य को करके अपना प्रेम व्यक्त किया | यह एक सेवा-रुपी प्रेम का कार्य था| आप जिन छात्रों को शिष्य बनाना चाहते हैं वे यीशु को कैसे जानेंगे? आप जो प्रेम उन्हें दर्शाते हैं उससे वे जानेंगे | वे कैसे जानेगे कि आपका प्रेम सच्चा है? आप उनकी सेवा कैसे करते हैं उससे|

कार्यभार सौंपना यीशु के पास निश्चय ही इतनी काबिलियत थी कि बे सारे काम अकेले कर सकते थे| परन्तु हम उन्हें सपने शिष्यों में कार्यभार का बँटवारा करते हुए देखते हैं (मत्ती १०) कार्यभार सौंपकर यीशु उनको अपनी मृत्यु के पश्चात कार्य को आगे बढ़ाने के लिए सुसज्ज कर रहे थे| वे जा रहे थे| उनके शिष्य पीछे रहने वाले थे | उन्होंने उन्हें वे सारी बातें सिखाई जिनकी उनके शिष्यों को आवश्यकता थीं | उन्होंने उन सारी बातों का प्रदर्शन उनके सामने किया | फिर उन्होंने अपनी सेवकाई और अधिकार उन्हें सौंपा परन्तु उन्हें कार्य करते हुए देखने के बाद ही|(१०:१) उन्होंने अपने शिष्यों को विशिष्ट निर्देश दिए(१०:५ और आगे) उन्होंने अपने शिष्यों को वैर-विरोध और धार्मिक अत्याचार के लिए तैयार किया| उन्होंने उन शिष्यों को वादा किया कि उन्हें कार्य करने के लिए जिन चीजों की ज़रूरत पड़ेगी, वे उन सबको पाएँगे|(१०:१६-२०).

उन्होंने उनसे कहा कि वे डरें नहीं (१०:२६) उन्होंने उन्हें यह परिप्रेक्ष्य दिया कि स्वर्ग उनका लक्ष्य है|(१०:३२-३६)और यीशु ने कहा कि कुछ लोग प्रतिसाद देंगे|(१०:४०-४२) और यीशु ने कहा कि कुछ लोग प्रतिसाद देंगे (१०:४०-४२)अपने छात्रों को शिष्य बनाते समय एक स्थान पर आएँगे जहाँ हमें लगेगा कि हमें कार्यभार सौंपने का समय आ गया है| उस स्थल पर, हम बुद्धिमानी से यीशु की सलाह को मान सकते हैं जो उन्होंने अपने शिष्यों को मत्ती के १० वे अध्याय में दिया है |

मध्यस्थी करना यीशु को हम अपने शिष्यों के लिए मध्यस्थी करते हुए पाते हैं| परन्तु यूहन्ना के अलावा हम यीशु के और किसी स्थान पर इना जोशीला और विशिष्ट होते हुए नहीं देखते हैं| ऐसे समय पर जब क्रूस करीब था और उनके शिष्य लड़खड़ा रहे थे, तब अपने शिष्यों के लिए जो प्रार्थना यीशु कर रहे थे, उसने उनके शिष्यों को एक आधार दिया जिससे वे ऐसे विकट समय में परमेश्वर की देखभाल द्वारा संभले रहे | परन्तु इसके अलावा यीशु ने उनकी दीर्घकालीन कुशलता के लिए भी प्रार्थना की| उन्होंने अपने पिता से उन्हें सुरक्षा की(१७:११-१२), उन्हें आनंद देने(१७:१३) तथा उन्हें पवित्र रखने की प्रार्थना की(१७:१७-१६) संरक्षण, आनंद और पवित्र वातावरण इसके अलावा| कितनी महान प्रार्थना है यह जो हम अपने छात्रों के लिए कर सकते हैं जिन्हें हम शिष्य बना रहे हैं |उनके लिए विशेष रूप से और निरंतर प्रार्थना करते रहें|

मूल्यांकन करना एक अहम् भूमिका जो यीशु ने निभाई है वह है अपने शिष्यों का मूल्यांकन करना| जो मूल्यांकन यीशु ने अपने शिष्यों को मार्गदर्शन देने के लिए किये वे समयोचित और सच्चे थे| उन्होंने अपने शिष्यों को उनके कमज़ोर क्षेत्रों से अवगत कराया | उदाहरणार्थ, अविवेकी विधान(लूक १०:१७-२०), झूठी राय(यूहन्ना १३:३६-३८) और गलत मार्गदर्शित लक्ष्य(मार्क १०:३५-४५)| उन्होंने अपने शिष्यों को डांटा(लूक ६:५१-५६, मार्क ८:३१-३३)| उन्होंने प्रश्नों के उत्तर दिए(मत्ती १८:२१-३५, मत्ती १६:२३-२६ और कई उदाहरण) जब आप अपने छात्रों को सीखते हैं तब सबसे प्राथमिक लाभ जो उन्हें होता है वह है प्रेमभरा और सच्चा मूल्यांकन जो आप और दल के अन्य सदस्य उन्हें देते हैं |हम सब कई बार संतुलन खोकर अपना आधार भी खो देते हैं| हमारी कमजोरियाँ हमसे गलतियाँ करवाती हैं और हमें इस बात का बोध भी नहीं होता है |अपने छात्रों को सही प्रतिपुष्टि देने से वे यीशु की समानता में विकसित होंगे|

प्रजनन / उत्पन्न करना यीशु इस बात को जानते थे कि हम केवल शिष्य बनाकर रुक नहीं सकते| इसका अंत प्रजनन ही होना था अर्थात यीशु के लिए अपने जैसा ही और शिष्यों को उत्पन्न करना अपनी सेवकाई की शुरुआत में यीशु ने अपने शिष्यों को "मनुष्य के मछुआरे" बनने के लिए प्रोत्साहन दिया|(मार्क १:१७) बाद में उन्हें "शिष्य बनाने" का निर्देश दिया(मत्ती २८:१८-२०) जो कुछ यीशु ने अपने शिष्यों के साथ किया, उसी तरीके से प्रारंभी कलीसिया ने कार्य किया| उनके "आत्मिक पुनरुत्पादन" ने ही तो विश्व में उथल-पुथल मचा दिया| यीशु के समान शिष्य बनाने के कारण बड़े शिष्य अपने से छोटे लोगों को शिष्य बनाने में फौरन लग जाते हैं| फिर असीम आयाम में आपकी सेवकाई अधिकतम क्षमता में गुणित होगा|

जो यीशु ने अपने शिष्यों के साथ किया वह व्यावहारिक और असली था| जब हम अपने छात्रों को यीशु के तरीके से शिष्य बनाने का प्रयास करेंगे, तब हम उन्हें सतही और अपरिपक्व कलीसिया में जाने वाले लोगों से ऐसे शिष्य बनाएँगे जिन्होंने अपने जीवन में परिवर्तन का अनुभव लिया हैं और अब वे जीवन परिवर्तित करने वाले बनने के लिए पूरी तरह सुसज्ज हैं| तब वे विश्व को मूल से ही यीशु के लिए बदल सकेंगे|

**इन विचारों की रूपरेखा शिष्यत्व पर रोबर्ट कोलमन द्वारा लिखी गई 'द मास्टर प्लान ऑफ़ इवंजेलिस्म' नामक एक उत्कृष्ट पुस्तक से ली गई हैं| अन्य विषार "इनसाइट्स फॉर लिविंग" नमक एक रूपरेखा से ली गई हैं जिसमें कोलमन की संकल्पनाओं का सार है|*

कठिन सवाल

अपने आपको १ से १० के पैमाने पर रखते हुए, निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए| अपने उत्तर के परिणामस्वरूप, जोशीली प्रार्थना की आवश्यकताओं के लिए अपने सच्चे और विशिष्ट निर्णयों का वर्णन करते हुए एक संक्षिप्त अनुच्छेद लिखिए

१. कुल छात्रों में से कितने प्रतिशत छात्र आपकी साप्ताहिक सभा में शामिल होते है?

१ २ ३ ४ ५ ६ ७ ८ ९ १०

२. कुल छात्रों में से कितने प्रतिशत छात्र नौवीं से बारहवीं कक्षा के दरम्यान युवा सेवकाई छोड़ देते हैं?

१ २ ३ ४ ५ ६ ७ ८ ९ १०

३. कुल छात्रों में से कितने प्रतिशत छात्र यीशु से अपने संबंध को जोश से आगे बढ़ाते हैं

१ २ ३ ४ ५ ६ ७ ८ ९ १०

४. कुल छात्रों में से कितने प्रतिशत छात्र किसी गहन और प्रतिबंध शिष्यत्व दल के साथ जुड़े हैं?

१ २ ३ ४ ५ ६ ७ ८ ९ १०

५. कुल छात्रों में से कितने प्रतिशत छात्र छोटे छात्रों को शिष्य बनाने मैं लगे है?

१ २ ३ ४ ५ ६ ७ ८ ९ १०

६. आपके स्नातक हो रहे ज्येष्ठ छात्रों में से कितने प्रतिशत यीशु का दिलोजान से अनुसरण करने के लिए प्रतिबद्ध है? सभी ज्येष्ठों की सूची बनाकर उनमें से उन छात्र के नाम लिखें जो दिलोजान से यीशु के अनुयायी हैं

१ २ ३ ४ ५ ६ ७ ८ ९ १०

मेरी स्थिति में छात्रों को शिव्य बनाने की आवश्यकता और उसका मूल्य

युवा सेवकाई के सिद्धांत

आप उन छात्रों को शिष्य कैसे बनाते हैं जिन्होंने अपने जीवन में परिवर्तन का अनुभव किया और जो जीवन परिवर्तित

जब छात्र आपकी सेवकाई छोड़ते हैं, उनका जीवन पहले से अलग कैसे होंगे जब वे प्रथम आए थे ? दूसरे छोर से क्या निकलता है?

शिष्य बनाने के सिद्धांत

२ तीमुथियुस २:१-२ को छह बार पढ़िए| हर बार आप पढ़ते हैं टिप्पणी बनाइए| हर पठन के साथ शिष्य बनाने के एक सिद्धांत ढूँढने का प्रयास करें|

> *इसलिए हे मेरे पुत्र, तू उस अनुग्रह से जो मसीह यीशु में है, बलवंत हो जा| और जो बातें तू ने बहुत गवाहों के सामने मुझसे सुनी है, उन्हें विश्वासी मनुष्यों को सौंप दे; जो औरों को भी सिखाने के योग्य हो |*
>
> *२ तीमुथियुस २:१-२*

१.

२.

३.

४.

५.

६.

यीशु-केन्द्रित युवा सेवकाई

आपके लिए हर सिद्धांत और आपकी सेवकाई क्या मायने रखती है इस सम्बन्ध में आप क्या सोचते हैं इस का एक वाक्य में वर्णन कीजिए|

१. अंगीकार करना

फिर तू मेरे पुत्र, उस अनुग्रह में सशक्त हो जो मसीह यीशु में है |

२. सम्बन्ध

... तू ... मैं ...(पौलुस और तीमुथियुस)

३. विचार करना

... भरोसा करना

४. वास्तविकता

... गवाहियों की उपस्थिति में

५. चुनाव करना

... भरोसेमंद लोग...

६. उत्पन्न करना/प्रजनन

... तू... मैं.... भरोसेमंद लोग.... दूसरे/अन्य |

शिष्य बनाने की परिभाषा

छात्रों को - एक छोटा दल, अनुशासन बद्ध संबंधपरक अनुभव, जवाबदेही, और प्रोत्साहन, जिसका परिणाम प्रेरणा, विकास, कार्य और सेवकाई हो- प्रदान करना

व्यावहारिक कदम

यतीन से बारह बच्चों के दल की कल्पना करें जो मसीह के साथ एक परिपक्व रिश्ते की ओर बढ़ना चाहते हैं| आप ऐसे दल के लिए कौन से कदम उठाएँगे?

१.प्रार्थना करें

परमेश्वर से दिखाने के लिए कहें कि आपको किसे शिष्य बनाना है तथा कैसे बनाना है| अन्य योग्य शिष्यत्व दल एके अगुओं के लिए प्रार्थना करें |प्रार्थना कीजिए कि छात्र प्रतिसाद दें | छात्रों के जीवन में प्रोत्साहन, विकास, कार्य और सेवकाई रहे इसके लिए प्रार्थना करें |

२.सपने देखें

कल्पना कीजिए कि क्या होगा यदि आपके द्वारा शिष्य बनाए गए छात्र अपने जीवन में बदलाव का अनुभव करते हैं और स्वयं एक बदलाव लाने वाले व्यक्ति बनते हैं? आपकी कलीसिया और परिसर कैसे प्रभावित होगा?

३.चयन करें

एक गहन और दीर्घकालीन सेवकाई के लिए उत्कृष्ट अगुओं की रचना कैसे करें? ऐसे वयस्कों को सुसज्ज करें जिनके पास न केवल ह्रदय की तैयारी हो अपितु छात्रों तक पहुँचकर उन्हें अनुयायी बनाने की कुशलता भी हो|(मार्क १:१६-२०)

४.प्रतिबद्ध रहें

यीशु के पीछे चलने की जो व्यक्तिगत प्रतिबद्धता पृष्ठ ११ पर दिया गया है,उसे एक विशेष सभा में उन छात्रों को समझाइए जिन्होंने प्रतिसाद दिया है| उन्हें इस बात का अवबोध कराते हुए आह्वान दें कि उन्हें अपने समय का दाम चुकाना पड़ेगा और उन्हें अपनी प्रधानताओं को बदलना होगा| फिर उन्हें यह कहकर प्रोत्साहित करें कि उन्हें अपनी मसीही चाल, वैयक्तिक विकास, नेतृत्व कौशल और विद्यालयीन प्रभाव जैसी बातों में इसका बहुत लाभ होगा|

५.तैयारी करें

सप्ताह का हर सत्र आप अपनी पुस्तक में पूर्ण करें | मूविंग टुवर्ड मचुरिटी सीरीज नामक पुस्तक में जो द लीडर्स गाइड है वह आपके दल-नेतृत्व से सम्बंधित हर सवाल का उत्तर देगा| द लीडर्स गाइड को ध्यान से पढ़िए और अपने छात्रों को पूछने के लिए महत्वपूर्ण प्रश्न ढूँढ निकालिए ताकि विषय से सम्बंधित एक सजीव और परिपूर्ण चर्चा हो सके| सामूहिक चर्च के लिए एक ३x५ के कार्ड पर उन प्रश्नों को लिख लें| द लीडर्स गाइड दल के पास मत लेकर जाइए | पूरी तैयारी में जाएँ|

६.अगुआई करें

आप अगुआ हैं | समस्त दल के लिए गति निर्धारित करें| प्रभु से प्रार्थना करें कि वह आपको ऐसा अगुआ बनाए जो यीशु को अपने छात्रों के सामने प्रतिबिंबित करता है | यदि वे लड़खड़ाते हैं, मदद करें, प्रोत्साहन दें, बुलाएँ , मिलें और सर्वोपरि उनके लिए प्रार्थना करें | आपकी अगुआई उन्हें जीवन भर के लिए पूरी तरह से प्रभावित करेगी|

७.निवेश करें

इन छात्रों को शिष्य बनाना एक सामूहिक सभा से भी बढ़कर है| यह एक सम्बन्ध परक निवेश है | इस दल का नेतृत्व करके आप एक दोस्त और सलाहकार भी बनते हैं | सामूहिक सभा के बाहर भी अपने आपको इन छात्रों को समर्पित करें|

८.मूल्यांकन करें

हर सप्ताह आपकी सामूहिक सभा के पश्चात, आपने क्या किया और इसमें कैसे सुधार कर सकते हैं इसका मूल्यांकन करें| समस्याओं को सुलझाइए और समायोजन करें |मूल्यांकन के लिए लीडर्स गाइड में दिए गए उपकरणों का इस्तेमाल करें |

इन शिष्यत्व के दलों को गुणित करने के लिए, अपने दल का नेतृत्व करें, फिर अपने नेतृत्व दल को दो भागों में विभाजित करें, और हर दल को चुनौती दें कि वे अपने दल को शुरू करने के लिए उसी प्रक्रिया का अनुसरण करें| समय के बीतते हर छात्र को शिष्य बनने का अवसर मिलेगा|

महान आयोग को पूरा करने का सर्वोत्तम तरीका एक कार्यक्रम नहीं बल्कि एक प्रक्रिया है - शिष्यत्व की प्रक्रिया|

छात्रों को अनुयायी बनाने के लिए उपकरण

मूविंग टुवर्ड मचुरिटी ग्रंथमाला

जिसकी १० लाख से भी ऊपर प्रतियाँ बिक चुकी हैं, ऐसी यह शिष्यत्व पर ८ ग्रंथमाला छात्रों को मसीही परिपक्वता की ओर बढ़ाएँगे |

आरम्भ करने से नए विश्वासी को मसीह के साथ सफलता पूर्वक चलने में सहायक होगी|

यीशु के पीछे चलने से यीशु के साथ एक जीवन परिवर्तित करने वाले रिश्ते की मज़बूत बुनियाद बनाने में तथा मसीह का शिष्य बनने में सहायक होगी|

परमेश्वर के साथ अकेले समय बिताने से छात्रों का यीशु के साथ रिश्ता और अधिक गहरा होता है क्योंकि वह उसके साथ कैसे समय बिताया जाता है यह सीखता है|

यीशु को अपना प्रभु बनाने से छात्रों को यीशु की आज्ञा का पालन करने की और उन्हें अपने दैनंदिन की समस्याओं का नियंत्रण सौंपने की चुनौती का सामना करना पड़ता है|

अपने विश्वास को कार्यान्वित करने से छात्रों को अपने भय पर काबू पाने में और मसीह को साहस से लोगों तक पहुँचाने का खतरा मोल लेने के लिए मार्गदर्शन मिलेगा|

विश्व को प्रभावित करने से हम अपने छात्रों को दिखाते हैं कि अपने आस-पास के लोगों की ज़रूरतों को पूरी करके वे भी प्रभावशाली अगुआ बन सकते हैं|

परमेश्वर के साथ अकेले समय बिताने की मार्गदर्शिका छात्रों को व्यावहारिक उपकरण देते हैं जिससे उन्हें परमेश्वर के साथ बिताने के लिए मार्गदर्शन मिलता है|

लीडर्स गाइड दल के अगुआ को वे सारे संसाधन देते हैं जो उन्हें एक सजीव और जीवन परिवर्तित करने वाले शिष्यत्व दल की अगुआई करने में सहायक हो| इस पुस्तक में अगुआ के लिए मूविंग टुवर्ड मचुरिटी ग्रंथमाला के लिए साड़ी सामग्री मिलई है|

मूविंग टुवर्ड मचुरिटी ग्रंथमाला (८ पुस्तकों का सेट) एक ऐसी सम्पूर्ण, कदम-दर-कदम शिष्यत्व की ग्रंथमाला है जो कि छात्रों को धीरे-धीरे ह्रदय परिवर्तन से परिपक्वता और सेवकाई की ओर ले जाती है|

बैरी सेंट क्लैर, डेव बस्बी और जिम बर्न्स के संदेशों के छह निःशुल्क डाउनलोड योग्य ऑडियो सेट उपलब्ध हैं- हर एक की विशेष रूप से रचना की गई है ताकि छात्रों को शिष्य बनानेवाले शिक्षक के रूप में आप प्रेरित रहे

जीज़स नो इक्वल

बैरी सेंट क्लैर आपको परमेश्वर के पुत्र से एक जोशीले मिलाप के लिए अग्रसर करते हैं| आप यीशु को जानेंगे कि वे वास्तव में कौन हैं?

जीज़स नो इक्वल, में आप एक आखिरी "सड़क-यात्रा" करेंगे| आप यीशु के और बेहतर करीबी दोस्त बनने का मज़ा लेंगे|

जीज़स नो इक्वल जर्नल' में यह मार्गदर्शिका ४० दिनों तक चलेगी और यह आपको यीशु के जीवन, उनकी मृत्यु, पुनरुत्थान, स्वर्गारोहण और द्वितीय आगमन के बारेमें बताएगी|
आप यीशु के बारे में जो कुछ जानते थे उसे चुनौती मिलेगी और आप जो हैं, वह न रहेंगे|

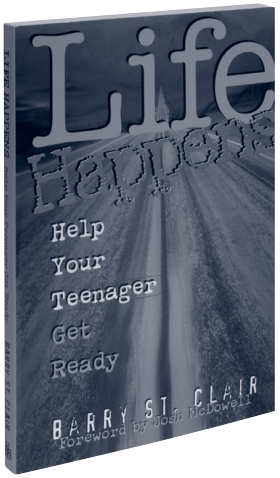

लाइफ हैपन्स

अपने किशोर की सहायता करें

महाविद्यालय| पेशा| जीवनभर के दोस्त| वैवाहिक साथी| अगले पाँच वर्षों में, आपके किशोर अपने जीवन के बहुत ही महत्वपूर्ण निर्णय लेने वाले हैं | *लाइफ हैपन्स* में, बैरी सेंट क्लैर आपको एक सहायक मार्गदर्शिका प्रदान करेंगे ताकि आप अपने बच्चों को सही चुनाव करने में सहायता दे सकें|वे अपनी पहचान और नियति खोज पाएँगे - उनका अपना रास्ता जिसपर उन्हें ज़िन्दगी भर चलना पड़ेगा| अपने किशोरों के व्यक्तित्वगत विशेषताएँ, उनके आत्मिक वरदान, योग्यताएँ और अनुभव, प्रोत्साहन, जीवन का उद्देश्य, मूल्य, लक्ष्य, समय का उपयोग और निर्णय आदि इस मार्गदर्शिका में शामिल हैं |एक अगुआ के नाते यह पुस्तक आपकी ज़रूरतों को पूरी कर सुसज्ज करती है, साथ ही जो निःशुल्क नियति-निर्णायक डाउनलोड हैं वे आपके बच्चों को मार्ग के लिए सुसज्ज करते हैं|

कार्य-योजना

फिलहाल .... छात्रों को शिष्य बनाने के लिए क्या कर रहे हैं ?

आगे जाकर ... इस सत्र से अपनी खोजों को लेकर अपने लिए एक निराली कार्य योजना बनाएँ।

छात्रों को शिष्य बनाना आपके लिए, आपके स्वयंसेवकों के लिए और अभिवकों के लिए क्यों महत्वपूर्ण है?

शिष्य बनाने के लिए आपके लक्ष्य क्या होंगे?

आप स्वयं किन छात्रों को सिखाएँगे और आपके अन्य अगुए किन छात्रों को शिष्य बनाएँगे ?

आप अपने शिष्यत्व दल से कहाँ मिलेंगे ?

आप अपने शिष्यत्व दल से कब मिलना आरम्भ करेंगे और जारी रखेंगे?

संस्कृति को प्रभावित करें

लक्ष्य

यीशु को छात्रों की संस्कृति में लाने के लिए अगुओं, अभिभावकों तथा शिष्यों को सज्ज करना और एकत्रित करना

सत्र ६

संस्कृति को प्रभावित करें

सत्र ६

यीशु केंद्र

यीशु ने हमेशा अपने शिष्यों के लिए गति निर्धारित की | पापियों के साथ सम्बन्ध जोड़ने के अलावा यीशु को कहीं भी अधिक सक्रिय और साभिप्राय नहीं देखा | यीशु ने अपने बारे में कहा, " क्योंकि मनुष्य का पुत्र खोए हुओं को खोजने और बचाने हेतु आया|"(लूक १६:१०)

यह देखने के लिए कि हम, एक अगुए होकर, अविश्वासियों के साथ सम्बन्ध स्थापित करने में अपने छात्रों के लिए गति कैसे निर्धारित करते हैं, भाले की कल्पना करें| अपने शिष्यों के लिए यीशु भाले की नोक थे और उनके शिष्य भाले का दंड थे | दंड नोक का अनुसरण करते हैं | "आओ, मेरे पीछे चलो," यीशु ने कहा, "और मैं तुम्हें मनुष्यों का मछुआरा बनाऊँगा"(मत्ती ४:१६)| हमारी सेवकाइयों में, परमेश्वर हमें यीशु के पीछे चलने के लिए, अविश्वासी किशोरों तक पहुँचने के लिए बुला रहे हैं, और अन्य छात्रों को सुसज्ज करने के लिए बुला रहे हैं | वे हमारे मिसाल का अनुसरण करेंगे - जैसे भाले का दंड भाले की नोक का अनुसरण करता है|

मार्क १-१० में, हमें सत्रह उदाहरण मिलते हैं जिनमें यह दर्शाया गया है कि यीशु ने अविश्वासी संस्कृति को कैसे प्रभावित किया|

- 1:14 *यूहन्ना यीशु ने गलील में आकर परमेश्वर के राज्य का सुसमाचार प्रचार किया।*
- १:२१ *और वे आराधनालय में जाकर उपदेश करने लगा।*
- १:३८ *उस ने उन से कहा, आओ; हम और कहीं आस पास की बस्तियों में जाएं, कि मैं वहां भी प्रचार करूं, क्योंकि मैं इसी लिये निकला हूं।*
- २:१-२ ... और उन्होंने वचन सिखाया |
- २:१३ एक बार फिर यीशु झील के किनारे गया तो समूची भीड़ उसके पीछे हो ली। यीशु ने उन्हें उपदेश दिया।
- ३:१ किसी और समय यीशु आराधनालय गया और एक व्यक्ति जिसका हाथ सिकुड़ गया था, वहाँ आया |

- ४. ३५ उस दिन शाम के समय, उन्होंने अपने शिष्यों से कहा, “चलो हम दूसरे किनारे पर जाए |
- ६.६ तब यीशु ने गाँव-गाँव जाकर उपदेश दिया|
- ६:५६ और जहाँ कहीं भी वे गए - गाँवों में, नगरों में या ग्रामीण क्षेत्र में उन्होंने रोगियों को बाज़ार- हाटों में लाकर बिठाया ... और वे सभी चंगे हुए जिन्होंने यीशु को छुआ|
- ७:२४ यीशु ने उस स्थान को छोड़ दिया और सूर और सैदा के देशों में आया|
- ७:३१ फिर यीशु ने सूर और सैदा के देशों को छोड़ा और सिदोन में से गुजरे...
- ८:२२अ फिर वे सब बेथसैदा आए और कुछ लोगों ने एक अंधे व्यक्ति को लाया और यीशु से विनती की कि वे उसे स्पर्श करें|
- ८:२७ यीशु और उनके चेले कैसरिया फिलिप्पी के गाँवों में गए|
- १०:१अ यीशु ने तब उस स्थान को छोड़ा और यहूदिया के प्रदेश में और यरदन के पार गए|
- १०:१७ जैसे ही यीशु अपने राह पर चलें, एक व्यक्ति दौड़कर आया और उनके चरणों में गिर पड़ा|
- १०:३२ अ वे येरूशलेम की राह पर गए, और यीशु अगुआई कर रहे थे|
- १०.४६अ फिर वे येरिहो में आये| जब यीशु और उनके चेले एक विशाल भीड़ के साथ उस शहर को छोड़ रहे थे, एक अँधा व्यक्ति, बार्तिमुस ... सड़क के किनारे बैठकर भीख माँग रहा था |

यीशु की सेवकाई हमें एक सामर्थ्यशाली और प्रायोगिक अंतर्दृष्टि प्रदान करता है जिससे हम जान सकें कि यीशु ने किसी संस्कृति को प्रभावित करने के लिए क्या किया और वे क्या चाहते हैं कि हम करें| उन्होंने अपनी इच्छा चारों सुसमाचार और प्रेरितों के कृत्यों में महान आयोग के जरिये स्पष्ट रूपसे तथा लगातार व्यक्त की |(मत्ती २८:१८-२०, मार्क १६:१५, लूक २४:४६-४७, यूहन्ना २०:२१, प्रेरितों के कार्य १:८) मत्ती २८:१६ में, उन्होंने हमें आगे बढ़ने का आदेश दिया| युवा अगुओं के लिए, वे कहते हैं, “ चूँकि तुम जा रहे हो, वहाँ जाओ जहाँ छात्र हो ....”| छात्रों के लिए, वे कहते हैं कि, “ चूँकि तुम वैसे भी पाठशाला जा रहे हो, जाओ और अपने समकक्ष लोगों तक पहुँचो |”

यीशु का सन्देश अचूकता से स्पष्ट है:
“ सुसमाचार लेकर जाओ!”

कठिन प्रश्न

अपने आपको १-१० के पैमाने पर रखते हुए, इन प्रश्नों के उत्तर दें | अपने उत्तरों के आधार पर “जहाँ मैं रहता /रहती हूँ वहाँ की युवा संस्कृति को प्रभावित करने की मेरी ज़रूरत” इस विषय में अपना ईमानदार मूल्यांकन देते हुए एक संक्षिप्त अनुच्छेद लिखें|

१. यदि आज आप परिसर में घूमते हैं, आप कितना सहज महसूस करेंगे?

१ २ ३ ४ ५ ६ ७ ८ ९ १०

२. आप कितना समय परिसर में बिताते हैं उसके लिए आप खुद को कितना अंक देंगे?

१ २ ३ ४ ५ ६ ७ ८ ९ १०

३. विद्यालय के जितने बच्चों के नाम आप जानते हैं, उनमें से कितने प्रतिशत बच्चे अविश्वासी हैं ?

१ २ ३ ४ ५ ६ ७ ८ ९ १०

४. आपके कितने प्रतिशत स्वयंसेवक परिसर में जाते हैं ?

१ २ ३ ४ ५ ६ ७ ८ ९ १०

५. अपने छात्रों को यीशु के समान जीने के लिए तथा अपने विद्यालय में उनके नाम से प्रचार करने आपके द्वारा दिए गए अपने प्रशिक्षण को किस पैमाने पर रखते हैं?

१ २ ३ ४ ५ ६ ७ ८ ९ १०

६. आपके छात्रों में से कितने प्रतिशत छात्र अपने आपको अपने परिसर में एक आत्मिक रूपसे प्रभावशाली व्यक्ति मानते हैं ?

१ २ ३ ४ ५ ६ ७ ८ ९ १०

जहाँ मैं रहता /रहती हूँ वहाँ की युवा संस्कृति को प्रभावित करने की मेरी ज़रूरत के विषय में मेरा ईमानदार मूल्यांकन

युवा सेवकाई के सिद्धांत

यीशु को छात्रों की संस्कृति में लाने के लिए हम स्वयंसेवकों, अभिभावकों और छात्रों को सुसज्ज और एकत्रित कैसे करें?

जहाँ छात्र हैं वहीँ जाना बुद्धिमानी है| अमरीका में अठासी प्रतिशत छात्र यीशु को नहीं जानते हैं, परन्तु कलीसिया में बहुत ही कम लोग हैं जो इस सम्बन्ध में कुछ करते हैं|केवल एक ही प्रेरणादायी कारक है जो हमें अपने आराम के घेरे से निकालकर सडकों पर ला सकता है वह है यीशु का हमें आमूल परिवर्तित करके परमेश्वर और उनके लोगों के करुणामय प्रेमी बनाना|

हम यीशु में ऐसे क्या देखते हैं कि हम जाने पर बाध्य हो जाते हैं ?

परमेश्वर का प्रेम हमें प्रोत्साहित करता है| (मार्क ६:३४)

यीशु के मन में लोगों के लिए करुणा थीं| मार्क ६:३४ में, हम देखते हैं कि यीशु के "मन में उनके लिए करुणा थी, क्योंकि वे बिना चरवाहे की भेड़ें थीं|" यीशु की करुणा ही उन्हें हमारे पास खींच लाई| ठीक उसी तरह परमेश्वर हमारी करुणा की मात्रा बढ़ाना चाहते हैं ताकि हम भी उन छात्रों को यीशु की ओर ले आएँ जिन्हें उनकी ज़रूरत है| वह हमें ऐसी दुनिया में ख्याल करने के लिए बुलाता है जो किसी की परवाह नहीं करती|

यीशु हमें अपने आराम के दायरे में से बाहर बुलाता है|(यूहन्ना २०:२१)

यीशु अपने आराम के दायरे में से बाहर आए| कल्पना करें कि यीशु अपने पिता के दाहिने हाथ में बैठकर यह निर्णय ले रहे हैं कि वे एक गर्भ में आकर मानवी जन्म का अनुभव करेंगे, सूखी घास पर लेटेंगे, मानवी शरीर में कैद होंगे, जूतों से पैरों में छालें होंगे, निम्न भोजन करेंगे| उन्होंने अपने पिता के सान्निध्य में प्राप्त आराम को क्या इनके लिए त्यागा! उन्होंने एक कठिन निर्णय लिया और वे चाहते हैं कि हम भी वही करें|

करुणा यह संचारित करती है कि हम एक बेपरवाह दुनिया में लोगों की परवाह करते हैं |

हमें वहाँ जाना चाहिए जहाँ बच्चे हैं (यूहन्ना १:१४)

यीशु ने हमारे बीच में "अपना तम्बू बाँधा" (वास किया)| वह हमारे साथ समय बिताने आया| और अब चूँकि हम उन्हें जानते हैं, हम वहाँ जाते हैं जहाँ बच्चे समय बिताते हैं; ताकि वे भी उन्हें जाने|

किशोरों को अविश्वसनीय पीड़ा है (लूक ५:१२-१६)

पीड़ा जिस रूप में है यीशु ने उसे उसी रूप में समझा| उन्होंने कोढ़ी में पीड़ा देखी| और उन्होंने इससे अपना मुख नहीं फेरा |इस पीढ़ी को अन्य किसी भी पीढ़ी से अधिक पीड़ा है जो इतिहास में हो चुकी है| वे कोढियों के समान हैं जिन्हें चंगाई के एक स्पर्श की ज़रूरत हैं| उन्हें उस घायल चंगा करने वाले ही ज़रूरत हैं |(यशायाह ५३:४-६) वे ही उन सबकी एकमेव आशा हैं| हम भी, यीशु की तरह, छात्रों को उनकी पीड़ा से मुक्त करा सकते हैं|

बच्चों को यह जानने की ज़रूरत है कि कोई उनकी परवाह करता है (लूक १५: १-२)

यीशु ने पापियों के साथ दोस्ती करने का सचेत चुनाव किया| वे जानते थे कि वे इस चुनाव के कारण धार्मिक व्यवस्था से पृथक हो जाएँगे| परन्तु उसकी वजह से वे अपने संकल्प से डिगे नहीं| उनके सामने उनकी प्राथमिकताएँ बिलकुल सुव्यवस्थित थीं| कलीसिया के लोग उन्हें कितना पसंद करते थे यह जानने से भी अधिक वे इस बात की परवाह करते थे कि पापी इस बात को जाने कि वे उनकी परवाह सबसे अधिक करते थे| बच्चे यह जानना चाहते हैं कि कोई उनकी परवाह करता है या नहीं| जब हम बच्चों की परवाह करने लगते हैं तब धार्मिक किस्म के लोग गुस्सा हो जाते हैं| वे "उस प्रकार के लोग" कलीसिया में नहीं चाहते हैं| यीशु के समान बनना हमें बहुत महँगा पड़ेगा खासकर धार्मिक लोगों के साथ| यीशु को अपनी जान देकर दाम चुकाना पड़ा|

छात्रों को यीशु की ज़रूरत हैं (यूहन्ना १७:३)

छात्रों को जीवन चाहिए| परन्तु वे नहीं जानते कहाँ ढूँढे| हम जानते हैं वह कहाँ मिल सकता है| वह केवल यीशु में प्राप्त है और कहीं नहीं| यीशु ने कहा, " अब यह अनंतकालीन जीवन है: कि वे तुम्हें जाने, एकमेव सच्चा परमेश्वर, और यीशु मसीह, जिन्हें आपने भेजा है" (यूहन्ना १७:३) पहले से भी स्पष्ट है, छात्रों को उन्ही में जीवन मिलेगा- हमारे जरिए|

छात्रों यीशु में जीवन पा सकते हैं - आपके जरिए !

यीशु पहले से ही वहाँ हैं (मत्ती २८:७,१०)

यीशु मृतकों से जी उठा ; और जैसे स्वर्गदूत ने कहा, "[वह] तुमसे पहले गलील में जा रहा है" (मत्ती २८:७) पुनरुत्थित मसीह हमें छात्रों की संस्कृति में अकेले नहीं भेजते हैं| वे हमसे पहले वहाँ जा चुके हैं और अब हमें वहाँ पर मिलेंगे | यीशु पहले ही बच्चों के जीवन में कार्य कर रहे हैं| वे हमारा इंतज़ार कर रहे हैं ताकि हम उनसे मिलें |

नए नियम में दो प्रकार के समय का उल्लेख हुआ है- क्रोनोस(chronos) और कैरोस(kairos)| दैनंदिन रूपसे समय का बीतना क्रोनोस है| यह हर किसी के साथ होता है| परन्तु कैरोस एक विशेष महत्त्वपूर्ण ऐतिहासिक क्षण है| यीशु अपने तीन साल के मानवीय रूपमें हर पल कैरोस में जिए: " परन्तु जब वह समय कैरोस पूरी तरह से आया..." (गलतियों ४:४) अब उनके आत्मा से जो हमारे अन्दर वास करता है, हम भी एक कैरोस क्षण में जीते हैं| हमारे दायरे में कई छात्र हैं जिन्हें यीशु की आवश्यकता हैं और हमें जाने बगैर वे कभी भी यीशु को नहीं पाएँगे | इसी कैरोस क्षण में परमेश्वर, अपनी सारी बाधाओं को यीशु के नाम से पार कर उन छात्रों की संस्कृति में उनसे मिलने के लिए हमें अग्रसर कर रहे हैं| समय अब है !

चार दीवारों से परे जाकर अपने से जवान पीढ़ी को यीशु
का अनुसरण करने के लिए प्रेरित करना शायद
आज कलीसिया के लिए सबसे बड़ी चुनौती है|

---

* मेरे मित्र रिचर्ड रौस के "परमेश्वर क्यों चाहता है कि हम इस पीढ़ी के छात्रों तक पहुँचे" इस भक्तिपूर्ण कथन को सुनकर, इस अनुच्छेद के लिए मौलिक विचार प्राप्त हुए | रिचर्ड टेक्सास के फोर्ट वर्थ, में स्थित दक्षिण-पश्चिमी सेमिनरी में युवा सेवकाई का अध्यापन करते हैं|

व्यावहारिक कदम

अपने पास के किसी माध्यमिक विद्यालय या उच्च विद्यालय के परिसर के बाहर की पटरी पर जाइए| ऐसे समय पर जाइए जब या तो छात्र विद्यालय आ रहे हैं या विद्यालय से निकल रहे हैं| फिर अपने आपसे यह सवाल कीजिए: इनमें से कितने लोग व्यक्तिगत रूपसे यीशु को जानते हैं ? यह सत्य-बोध करने वाला व्यायाम आपको उन लोगों के लिए और अधिक बोझ देगा जो यीशु को नहीं जानते हैं | अब, छात्रों के लिए एक बढे हुए बोझ के कारण आप अपने स्थानीय परिसर में इन कदमों को लेने के बारे में सोचें|

१. अनुग्रह के लिए प्रार्थना करें (प्रेरितों के कृत्य २:४७)

'जोश से प्रार्थना करें सत्र' में से जो प्रार्थना त्रिक कार्ययोजना थी उसका अनुसरण करते रहें| आपकी प्रार्थना त्रिक के अलावा, अपने स्वयंसेवकों, अभिभावकों और छात्रों को भी प्रार्थना त्रिक कार्ययोजना में शामिल करें| 'एन ऑसम वे टू प्रे' का एक उपकरण के रूप में इस्तेमाल करें ताकि वह आपकी मार्गदर्शिका बन सके |

२. पुल बनाइए(सम्बन्ध स्थापित करें)- विद्यालय को जानिए (प्रेरितों के कृत्य १७:१६)

विद्यालय को जानने के लिए, इन व्यावहारिक सुझावों में से कम से कम एक का पालन करें:

- विद्यालय की पत्रिका/वार्षिक लेकर उसका अध्ययन करें|
- अपने ही बच्चों का साक्षात्कार लें, और उनके विद्यालय के सम्बन्ध में प्रश्न पूछें|
- छात्रों के कार्यक्रमों में जाएँ और उनके साथ समय बिताएँ तथा टिप्पणियाँ लें|
- 'पेनीट्रेटिंग द कैंपस' में दिए गए 'विद्यालय सर्वेक्षण' को अच्छी तरह से परखें

३. पुल को पार कीजिए(उच्च अधिकारियों से सम्बन्ध बढ़ाइए)- प्रधानाध्यापक से बातचीत करें (इफिसियों ६:७)

प्रधानाध्यापक तक पहुँचने से पहले, आपको एक आधारभूत निर्णय लेना होगा| क्या परिसर में आप अपने कानूनी अधिकारों के लिए खड़े होंगे, या आप विद्यालय की अधीनता स्वीकार कर सेवा करेंगे?सेवा ही वह एकमेव तरीका है विद्यालय के प्रशासन से दीर्घकालीन सम्बन्ध बनाए रखने का|
उस सम्बन्ध को दृढ़ निम्नलिखित बातों का पालन करें:

- अनौपचारिक रूप से मिलें |किसी सामाजिक कार्यक्रम में छात्रों के अभिभावकों द्वारा परिचय करवाएँ|
- मुलाकात के पश्चात प्रधानाध्यापक को एक 'धन्यवाद' ज्ञापन का पत्र भेजें |
- प्रधानाध्यापक से उनके कार्यालय में औपचारिक रीति से मुलाकात के लिए समय नियुक्त करें |
- फिर से मुलाकात के पश्चात प्रधानाध्यापक को एक 'धन्यवाद' ज्ञापन का पत्र भेजें |
- नियमित रूपसे बातचीत करके प्रधानाध्यापक से सम्बन्ध दृढ़ करें |

४. पुल को खुला रखें - विद्यालय की सेवा करें(कलुसियों ३:२३-२४)

'विद्यालय में ऐसी जगह की खोज करना जहाँ परमेश्वर चाहता है कि हम सेवा करें:

- अपनी रूचि के क्षेत्र की या ज़रूरत के क्षेत्र की खोज करें |
- शिक्षकों या छात्रों से पूछें कि उन्हें कौन सी ज़रूरत दिखाई दे रही है|
- यदि आप निश्चित रूपसे नहीं जानते, तो तब तक विविध विद्यालयीन गतिविधियों में सहायता करके अपना समय बिताएँ |

६. स्वयंसेवकों और अभिभावकों को इकट्ठा करें (कुलुसियों ४: ७-१५)

यीशु के समान ही पौलुस ने भी अपने शिष्यों में निवेश किया| कुलुसियों ४:७-१५ में,वे किन्हीं शिष्यों के नाम और उनकी विविध भूमिकाओं का उल्लेख करते हैं |आप अपने स्वयंसेवकों और अभिभावकों को सज्ज करने में जव निवेश करते हैं,उन्हें अपनी सेवकाई और विद्यालय में उनकी निराली भूमिका को समझने में आप उनकी सहायता करते हैं | उनकी अनुसूची, उनके वरदान और बुलाहट, तथा उनके कौशल्य आदि कारकों पर उनकी सेवकाई निर्भर करेगी|

- उनके सीमित समय में अपने अगुओं के दल को अपने साथ बच्चों से बात करने के लिए ले जाकर शामिल करें|
- अपने अगुओं के दल में जो विशिष्ट कुशलताएँ हैं, उनका इस्तेमाल विद्यालय की ज़रूरतों को पूरी करने के लिए करें|
- अपने अगुओं को प्रति सप्ताह कुछ घंटों के लिए छात्रों के एक दल पर केन्द्रित होने के लिए कहें |
- अभिभावकों की सहायता करें ताकि वे अपने बच्चों के मित्रों को घर बुलाकर और उन्हें खिलाकर उनके साथ सम्बन्ध दृढ़ कर सकें|
- महाविद्यालय के छात्रों और अविवाहितों को नियुक्त करें जिनके पास ज्यादा समय हो|
- हर परिसर के लिए अपने स्वयंसेवक अगुओं का एक प्रार्थना दल बनाएँ|
- उस परिसर में जो अन्य मसीही सेवाकाइयाँ हैं उनके संपर्क में रहें|

७.छात्रों को इकट्ठा करें (प्रेरितों के कृत्य ५:४१-४२)

फिर से आप अपने आपको भाले की नोक और छात्रों को दंड के रूप में देखें| आपकी भूमिका है कि आप अपने अगुओं और छात्रों से आगे जाएँ और फिर उन्हें सज्ज करें और मसीह को उनके दोस्तों तक ले जाने का आह्वान दें |

संस्कृति को प्रभावित करें उपकरण

पेनीट्रेटिंग द कैंपस'

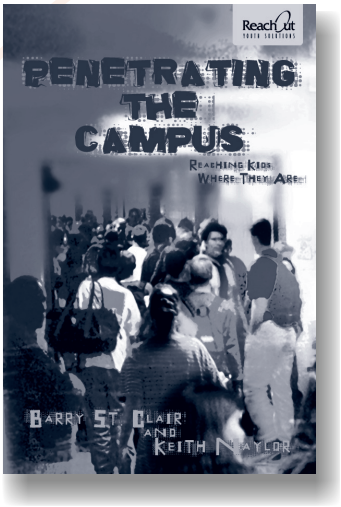

आज छात्रों तक पहुँचने की- विद्यालय में जहाँ वे हैं- बहुत ज़रूरत है| चूँकि छात्र अपने माध्यमिक विद्यालय और उच्च विद्यालय परिसर में किशोरावस्था और जीवन की भावनात्मक, सामाजिक, और आत्मिक चुनौतियों का सामना करते हैं, युवा अगुए उन्हें प्रभावित करने के लिए वहाँ रह सकते हैं जहाँ वे हैं | 'पेनीट्रेटिंग द कैंपस' युवा अगुओं को, अभिभावकों को तथा स्वयंसेवकों को एक गहरा परिप्रेक्ष्य और प्रायोगिक योजना प्रदान करती है जिससे वे परिसर के छात्रों कतक पहुँचने की अपनी इच्छा को पूरी कर सके| यह एक अत्यंत गहरा और प्रायोगिक सुझाव देती है जिससे हम किशोरों से जुड़ सके और उन तक परमेश्वर का प्रेम पहुँचा सके |

यह पुस्तक कलीसिया और पब्लिक स्कूल के परिसर को जोड़ने में सहायक है - शायद यह आज अमरीका का सबसे महत्वपूर्ण कार्य क्षेत्र है|

टेकिंग योर कैंपस फॉर क्राइस्ट

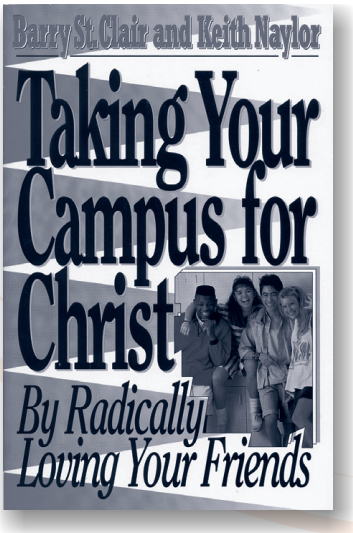

अब यह एक सुधारवादी मौलिक विचार है| परन्तु इसके लिए विलक्षण प्रेम रखने वाले कुछ विलक्षण लोगों की आवश्यकता होगी| हाँ, विलक्षण प्रेम| यही तो अविश्वासी छात्रों की ज़रूरत है| इस पुस्तक में, आपके छात्र जानेंगे कि इसे कैसे पाते हैं और कैसे दिया जाता है| परमेश्वर उनके पीठ थपथपाना चाहते हैं तथा अपने मुख की ओर मोड़ना चाहते हैं और यीशु के सामर्थ्य के माध्यम से अपने मित्रों से प्रेम करने की चुनौती दिलाना चाहते हैं |छात्र अपने विद्यालयों में परिवर्तन ला सकते हैं !

टेकिंग योर कैंपस फॉर क्राइस्ट' आपको एक प्रायोगिक कार्ययोजना देती है ताकि आप विद्यालय के छात्रों को सज्ज करके इकट्ठा कर कर सकें |

इन संसाधनों को www.reach-out.org पर प्राप्त कर सकते हैं

कार्ययोजना

संस्कृति को प्रभावित करने के लिए कार्य योजना

फिलहाल ...संस्कृति में प्रवेश कर उसे प्रभावित करने के लिए आप क्या कर रहे हैं ?

आगे बढ़ते हुए ... इस सत्र से अपनी खोजों को लेकर अपने लिए एक निराली कार्य योजना बनाएँ |

आपके लिए और आपके अगुओं के लिए संस्कृति को प्रभावित करना क्यों ज़रूरी है?

संस्कृति को प्रभावित करने के लिए आपके लक्ष्य क्या हैं?

आपके विशिष्ट दर्शक कौन हैं जिन तक आप पहुँचना चाहते हैं ?

आप किस स्थान विशेष की संस्कृति को प्रभावित करेंगे?

आप संस्कृति को प्रभावित कब करेंगे?

सेवाकार्य के अवसरों का निर्माण करें

लक्ष्य

सांस्कृतिक रूपसे प्रासंगिक सेवाकार्य के अवसरों में यीशु को ऐसे पेश करना, ताकि लोग अपने अविश्वासी मित्रों को लेकर आ सके

सत्र ७

सेवाकार्य के अवसरों का निर्माण करें

सत्र ७

यीशु केंद्र

यीशु जानते थे अपने-आपको कैसे पेश किया जाएँ | यूहन्ना लिखते हैं,

> *पर्व के सबसे अंतिम और महान दिवस पर, यीशु ने खड़े होकर जोरसे कहा,"यदि कोई प्यासा है, उसे मेरे पास आने दें और पीने दें | जो कोई मुझपर विश्वास करता है, जैसे पवित्र शास्त्र कहता है, जीवित जल का स्त्रोत उसके अन्दर से बहेगा|"*
>
> यूहन्ना ७:३७-३८

महान शिक्षक हमें सिखाते हैं कि

यीशु को सांस्कृतिक रूपसे प्रासंगिक अवसरों

के माध्यम से लोग अपने अविश्वासी मित्रों

को कैसे यीशु तक ले आते हैं |

चलें और करीब से देखें कि यीशु ने वह कैसे किया|

यीशु को प्रस्तुत करना| झोपड़ियों का पर्व एक अनुष्ठानिक यादगार है जो इस्राएल के लोगों को याद दिलाता रहेगा कि वे रेगिस्थान में भटकते थे जहाँ पानी दुर्लभ और बहुमूल्य था| अनुष्ठान के दौरान, याजक एक सोने का घड़ा लेकर सिलोम के पोखर के पास जाता था और उसे पानी से भरता था| वह उस पानी को- 'पानी द्वार' नामक एक विशेष द्वार से जो केवल इसी अनुष्ठान के लिए इस्तेमाल होता था- अन्दर ले आता था - और लोग तब तक यशायाह १२:३ को दोहराते थे, "उद्धार के पोखरों में से तुम उल्लास से पानी खींचोगे|" वह उस पानी को उठाकर मंदिर के अन्दर ले जाता था और वेदी पर परमेश्वर को चढ़ाए गए एक अर्पण के रूप में उंडेल देता था|

संभव है कि उस क्षण, यीशु के शब्द गूँजे हो, "यदि कोई प्यासा है, उसे मेरे पास आने दें और पीने दें |" उस सन्देश को कोई भी अनसुना नहीं कर पाया| यीशु ने अपने आपको उस जीवित जल के प्रतीक के रूप में घोषित किया| इस गरम और धूलभरे दिन पर, यीशु ने उन्हें अपने पास आने के लिए निमंत्रित किया ताकि उनकी ज़रूरतें पूरी हो सके- उनसे पीएँ| तब उन्होंने वह वादा किया कि "जो कोई उस पर विश्वास करें, जीवित जल का स्त्रोत उसके अन्दर, उसके जरिए और उसके अन्दर से बाहर बहेगा|"युवा अगुओं के लिए एक चुनौती है कि वे यीशु को उस रूप में प्रस्तुत करें जिस रूप में उन्होंने अपने आपको पेश किया था- बड़े साहस और अरोक तरीके से कि छात्र भी समझ गए कि यीशु कौन हैं और फिर उनके पास उनका अनुभव लेने के लिए आए- पीने के लिए| सेवा और सहायता के सृजनात्मक अवसर यीशु को कुछ इस तरह पेश करते हैं कि छात्र अनायास ही उस जीवित जल को पीने के लिए प्यासे बन जाते|

सांस्कृतिक रूप से प्रासंगिक सेवाकार्य के अवसरों के जरिए

लेवी जानता था यीशु को प्रासंगिक रूप से कैसे प्रस्तुत करें| वह यीशु से हाल ही में मिला था(लूक ५:२७-२८)| वह एक संकेत है| खोए हुए छात्रों की दुनिया में जाने के लिए सबसे उत्तम तरीका है किसी ऐसे छात्र का सहारा लो जो हाल ही में वहाँ से आया है| जब, लेवी के समान, कोई छात्र "सब कुछ छोड़कर उसके पीछे चला" उसे भी यह प्रबल इच्छा होगी कि उसके मित्र भी वही करें|

लेवी चाहता था कि उसके दोस्त यीशु को जाने | लूक समझाते हैं, " फिर लेवी ने यीशु के लिए अपने घर में एक बड़ी दावत दी, और चुंगी लेने वाले और अन्य (पापी) उनके साथ बैठकर भोजन कर रहे थे" (लूक ५:२६) लेवी के घर में दावत थी! उसने दावत की योजना की जो अपने यीशु में प्राप्त नए जीवन को सांझा करने के लिए जानबूझकर किया गई थी |

ध्यान दें कि लेवी ने ऐसा माहौल बनाया जिसमें वह यीशु को अपने दोस्तों के बीच लाकर सहज महसूस करता और उसके दोस्त भी यीशु के सान्निध्य में सहज महसूस करते | अधिकांश युवा सेवकाइयों का यह एक सबसे बड़ा संघर्ष है कि ऐसा सकारात्मक वातावरण कैसे बनाए| मसीही छात्रों को अपने अविश्वासी दोस्तों को यीशु के पास लाते समय सहज महसूस होना चाहिए| और अविश्वासी छात्रों को भी यीशु के पास आकर सहज महसूस होना चाहिए|

यीशु के पास अविश्वासियों को कैसे लाया जाता है, यीशु के हितचिन्तक चेले इस बात को भूल गए थे| मार्क १०:१३ में, वे यीशु को असभ्य और उपद्रवी बच्चों से बचाना चाहते थे | लोग अपने बच्चों को यीशु के पास लेकर आ रहे थे ताकि यीशु उन्हें स्पर्श कर सके, परन्तु शिष्यों ने उन्हें डांटा| अक्सर कलीसिया के लोग "फटकारने वाले" बन जाते हैं | वे ऐसी बाधाएँ निर्माण करते हैं जिसकी वजह से अविश्वासी भी दूर हो जाते हैं| खोए हुए बच्चों के प्रति जो रवैया अपनाया जाता है उनसे ऐसे कुछ कार्य घटित होते हैं कि वे अपने आपको अनचाही मानने लगते हैं |

ध्यान से पढ़ें यीशु ने उस प्रसंग को कैसा घुमाव दिया|

> *यीशु ने यह देख क्रुद्ध होकर उन से कहा, बालकों को मेरे पास आने दो और उन्हें मन न करो, क्योंकि परमेश्वर का राज्य ऐसों ही का है| और उन्होंने बच्चों को गोद में लिया औरउनपर हाथ रखकर आशीष दी|*
>
> *मार्क १०:१४-१६*

उन शिष्यों की तरह, छात्रों को संस्कृति, जातीयता, उम्र, संगीत, दृष्टिकोणों, वेशभूषा और आदतें आदि के आधार पर वर्गीकरण करना हमारे लिए बहुत आसान है| यदि हम इन पूर्वधारणाओं के आधार पर यदि हम सेवाकार्य के अवसर का निर्माण करते हैं, चाहे जाने में हो या अनजाने में हो, हम लोगों को इंजील से परे रखते हैं | फिर हम सोचते हैं कि अविश्वासी क्यों नहीं आते हैं या आते भी हो तो प्रतिसाद क्यों नहीं देते हैं| यीशु का आत्मा हमारे अन्दर वास करता है और उस के प्रतिनिधि होने के नाते, हमें अपनी सेवा-कार्यस्थल पर सारी रुकावटों को दूर कर ऐसा मार्ग प्रशस्त करना है जिसके जरिए छात्र अपने अविश्वासी दोस्तों को यीशु के पास ला सके|

हमारी संस्कृति में जो बच्चे किसी कलीसिया से जुड़े नहीं है - उनमें से कई धार्मिक जोश से प्रेरित होकर खतरनाक जीवनशैली अपना लेते हैं | ऐसे में हमारे युवा दल के बच्चे सुरक्षित कवच में बंद बैठे रहते हैं...

आज के युवा लोगों को यीशु के अनुसरण के लिए खतरा मोल लेने के लिए बुलाना है|उनमें से कई इस इंतज़ार में बैठे हैं कि उनकी कलीसिया उन्हें कुछ बड़ा, कुछ महत्वपूर्ण, कुछ जोखिमभरा करने को दे |

पॉल बोर्थविक

कठिन प्रश्न

अपने आपको १-१० के पैमाने पर रखते हुए, इन प्रश्नों के उत्तर दें | अपने उत्तरों के आधार पर सांस्कृतिक-संगत सेवा के अवसर की ज़रूरत आपकी परिस्थिति में कितनी है इसका वर्णन करते हुए एक संक्षिप्त अनुच्छेद लिखें|

१. अपने समुदाय के हर एक परिसर के हर एक छात्र तक पहुँचने का आपको कितना बोझ है और आप खुद को कितने अंक देंगे ?

१ २ ३ ४ ५ ६ ७ ८ ९ १०

२. छात्रों तक यीशु के ज्ञान को व्यक्तिगत रूपसे पहुँचाने में आप कितने प्रभावोत्पादक हैं और आप अपने आपको कितने अंक देंगे?

१ २ ३ ४ ५ ६ ७ ८ ९ १०

३. कितने प्रतिशत छात्र सेवाकार्य करना चाहते हैं ?

१ २ ३ ४ ५ ६ ७ ८ ९ १०

४. आपके सेवाकार्य के अवसर विधर्मियों के लिए कितना अनुकूल है?

१ २ ३ ४ ५ ६ ७ ८ ९ १०

५. आपकी सेवा अवसरों में उपस्थित रहने वाले कुल छात्रों में से कितने प्रतिशत छात्र यीशु के अविश्वासी हैं ?

१ २ ३ ४ ५ ६ ७ ८ ९ १०

६. आपके वर्त्तमान सक्रिय छात्रों में से कितने प्रतिशत छात्र पिछले साल यीशु को जान पाएँ ?

१ २ ३ ४ ५ ६ ७ ८ ९ १०

मेरी परिस्थिति में सांस्कृतिक-संगत सेवा के अवसर निर्माण करने की ज़रूरत :

युवा सेवकाई के सिद्धांत

सांस्कृतिक रूपसे प्रासंगिक सेवाकार्य के अवसरों में आप यीशु को कैसे पेश करेंगे जहाँ लोग अपने अविश्वासी मित्रों को लेकर आते हैं?

यदि हमें बच्चों को यीशु के साथ एक जीवन-परिवर्तित करने वाले सम्बन्ध में लाना है, तो हमें यह समझना है कि अक्सर हम यीशु को स्पष्ट रूपसे पेश नहीं करते हैं| जमाव सांस्कृतिक रूपसे प्रासंगिक नहीं है और हमारे बच्चे भी अपने अविश्वासी दोस्तों को लाने के लिए कोई प्रोत्साहन नहीं है| उपर्युक्त प्रश्न के उत्तर में हमें अपना दृष्टिकोण बदलना होगा| वह करने के लिए, चलें हम "४-२-५" रवैया अपनाए|

४ विशेषताएँ

यीशु ने सेवाकार्य के अवसरों का निर्माण कैसे किया यह समझने के लिए जब हम इंजील की ओर देखते हैं, तब चार विशेषताएँ हमारे सामने स्पष्ट रूपसे कड़ी हो जाती हैं |

१. यीशु ही ध्यान का केंद्र था (मार्क १: ४०-४५)

यद्यपि वह कोढ़ी चंगा हुआ और एक चमत्कार हुआ, यीशु ही नायक था- यहाँ तक कि लोग सब जगह से आये उसे देखने के लिए|

२. भीड़ उत्साह से भरी थी| (मार्क ४:१)

भीड़ इतनी उत्साहित थी कि उनके धक्कम-धक्के ने यीशु को नाव में चढ़ने पर मजबूर किया|

३. विश्वासी अपने मित्रों को यीशु से मिलने के लिए लेकर आये(लूक ५:२७-२६)

लेवी जो एक तुच्छ चुंगी लेने वाले का सामना यीशु से हुआ| अपने दोस्तों को यीशु से मिलाने का उत्साह उसमें इतना था कि उसने सबको एक दावत में आमंत्रित किया|

४. जीवन हमेशा के लिए बदल गए(मत्ती २०:२६,३४)

जब दो अंधे दया के लिए पुकार उठे, यीशु ने अत्यंत करुणा से भर कर उन्हें स्पर्श किया| वे चंगे होकर यीशु के पीछे चलें- हमेशा के लिए परिवर्तित|

२ दृष्टिकोण

छात्रों के जीवन में सेवाकार्य के अधिकतम प्रभाव के लिए अधिक समय तक देखें| नजरिया समझने के लिए किसी दूरबीन के कांच में से देखने की कल्पना करें| वे दूरस्थ वस्तुओं को निकट ले आते हैं | जब हम लोगों तक पहुँचने के लिए कोई सेवाकार्य करते हैं, हम आसानी से "यहाँ और अब" की गतिविधियों की झड़ी में फँस सकते हैं| उलटे हमें जो अंततः महत्वपूर्ण है उसे इन दो परिप्रेक्ष्यों में देखना है|

शीशा १: यीशु पर ध्यान केन्द्रित करें

यीशु ने सेवाकार्य के अवसरों का निर्माण कैसे किया यह समझने के लिए जब हम इंजील की ओर देखते हैं, तब चार विशेषताएँ हमारे सामने स्पष्ट रूपसे कड़ी हो जाती हैं |

१. यीशु ही ध्यान का केंद्र था (मार्क १: ४०-४५)

सेवाकार्य के दौरान निरंतर यीशु पर ध्यान केन्द्रित रखके आप छात्रों को यीशु का अनुभव लेने में सहायता करें| हम अपना नज़रिया खो देते हैं जब हम सोचते हैं कि केवल कार्यक्रम का आकार ही मायने रखता है| सफलता संख्या से नहीं नापी जाती है बल्कि तब हमें सफलता मिलती हैं जब यीशु को अपना हृदय समर्पित करने और उसका अनुसरण करने में हम छात्रों की सहायता करते हैं |

शीशा २. उद्देश्य जानें

सेवाकार्य का साधारण उद्देश्य क्या है यह आप स्पष्ट रूप से जान लें - सांस्कृतिक रूपसे प्रासंगिक सेवाकार्य के अवसरों में यीशु को पेश करना जहाँ लोग अपने अविश्वासी मित्रों को लेकर आते हैं| और फिर तय करें कि हर सेवाकार्य का क्या विशिष्ट उद्देश्य होगा ताकि आप "उनका मनोरंजन करने के लिए अब मैं क्या करूँ" वाले लक्षणों को टाल सकें|

५ विकल्प

सेवाकार्य के लिए तैयारी करने, उसका संचालन करने तथा कार्यक्रम के बाद उसे समेटने में आपके संबंधों को निखारने के लिए जो समय होता है उसमें से काफी बड़ा समय निकल जाता है| समय की खपत को टालने के लिए, अपने सारे विकल्पों का पहले से ही अन्वेषण करें और फिर उस विकल्प को चुनें जो समय और सम्बन्ध की दृष्टि से सर्वाधिक प्रभावशाली हो|

आप जो कोई भी विकल्प चुनें, सुनिश्चित कर लें कि आप अपने शिष्यों के दल को उसमें शामिल करें| या तो आप अपने हर शिष्यत्व दल को अपना सेवाकार्य निर्माण की ज़िम्मेदारी सौंपें, या हर
शिष्यत्व दल को एक बड़े सेवाकार्य में किसी भी एक क्षेत्र की ज़िम्मेदारी लेने दें|

सत्र ७ - सेवाकार्य के अवसरों का निर्माण करें

१. उधार लें

यहाँ सिद्धांत यह है कि "सूरज तले कुछ भी नया नहीं है" (सभोपदेश १:६) जो सेवाकार्य आपने देखे हैं उनमें से कुछ या सब उधार लें|

२. निर्माण करें

और एक सिद्धांत यहाँ उभरता है: "लोग उसीको आधार देंगे जिसे उन्होंने बनाया है|" यह निश्चित रूपसे कठिन और ज्यादा समय लेने वाली बात है| परन्तु एक सेवाकार्य के विषय में स्वयंसेवकों, अभिभावकों और छात्रों के दल द्वारा किये गए मंथन, बनाई गई योजना और उसे एक साथ कार्यान्वित करने के पश्चात जो सम्बन्ध की पुष्टता रुपी पुरस्कार मिलता है उसके बारे में सोचिए|

३. खरीदें

कई बने-बनाए कार्यक्रम उपलब्ध हैं जिन्हें आप अपनी कलीसिया में ला सकते हैं- संगीतकारों, वक्ताओं, नाटक मंडलियों, हास्य-कलाकारों और अन्य लोगों तक | अपने आस-पास देखें| दाम गिनें| और अनुबंध पर हस्ताक्षर करने से पूर्व कार्यक्रम के बारे में पुनर्विचार विचार करें |

४. किराए पर लें

कई बार,किराए पर लेना खरीदने से बेहतर होता है| मनोरंजन के स्थल, छोटे गोल्फ खेलने के मैदान, गेंद के विविध खेल, तैरने के तालाब, व्यायामशाला, बर्फ के मैदान और थिएटर आदि बने-बनाए सेवाकार्य के अवसर जुटाते हैं|

५. शामिल हो

संगीत समारोह, चलचित्र, सम्मलेन और सुसमाचार के प्रचार जैसे स्थानीय मौकों का पूरा-पूरा फायदा उठाए| यह नज़रिया आयोजन सम्बन्धी परेशानियों को टालकर सम्बन्ध बनाने में निवेश करने में सहायक होते हैं| हम आगे के चरण पर गौर कर सकते हैं जिससे हमारी सेवकाई को फायदा हो |

जब "४-२-५" (४ विशेषताएँ, २ दृष्टिकोण, ५ विकल्प) के बारे में प्रार्थना की गई हो और सुनियोजित ढंग से यीशु को प्रस्तुत करने के लिए आपने एक मजबूत बुनियाद बन ली हो तब सांस्कृतिक दृष्टि से प्रासंगिक सेवाकार्य के अवसर में हमारे युवा अपने अविश्वासी मित्रों को लाने की चुनौती ले सकते हैं |

बच्चों को इंजील से उबा मत दीजिए!

जिम रेबर्न

व्यावहारिक कदम

अपने बत्तखों को कतारबद्ध करें

अपने सेवाकार्य के उद्देश्य की पूर्ति के लिए, सेवाकार्य-योजना बनाने वालों का एक दल बनाइए जिसमें आपकी अगुआई दल के लोग, महत्त्वपूर्ण अभिभावक और शिष्यों का मिश्रण हो | विचारों का मंथन करें|

अपने सेवाकार्य-योजना की प्रक्रिया में प्रायोगिक सृजनात्मकता लाने के लिए, आरेखन दृश्य (स्टोरी बोर्डिंग) की सहायता लें|जब आप हर महत्त्वपूर्ण तत्वों की योजना बनाते हैं, हर व्यक्ति को अपने विचार लिखने के लिए ४ x ६ का पोस्ट-इट-नोट्स का एक ढेर दें | फिर उन्हें उनके अनुरूप तत्वों के नीचे चिपकाएँ |

अपने अगुआई दल के लोगों को, महत्त्वपूर्ण अभिभावकों को और शिष्यों को इस प्रक्रिया के लिए ज़िम्मेदार बनाएँ|

१. **उद्देश्य :** इस सेवाकार्य का विशिष्ट उद्देश्य क्या है ?

२. **निशाना :** आपके विशिष्ट दर्शक कौन हैं?

३. **विषय :** इसका विशिष्ट विषय क्या है ?

४. **लक्ष्य :** इसका विशिष्ट लक्ष्य क्या है?

५. **युक्तियाँ:** किन विशिष्ट रचनात्मक कार्यक्रम की युक्तियों का प्रयोग करेंगे ?

६. **संसाधन:** किन विशिष्ट लोगों की और सामग्रियों की ज़रूरत हैं ?

७. **निर्माण कार्य:** यह विशिष्ट कार्यक्रम कैसा होगा? कौन किन कार्यों के लिए ज़िम्मेदार होगा? कब तक?

अपने बत्तखों को समान दिशा में अग्रसर करें

सेवाकार्य की जटिलता पर आधारित, हो सकता है कि आपको इसे पूर्ण करने में एक से अधिक सभा का आयोजन करना पड़ें| अपने दल को समान दिशा में बढ़ाने के लिए, सार-टिप्पणियों के माध्यम से अपनी प्रगति को बताते रहे, या तो कागज़ के माध्यम से या श्वेत-फलक पर लिखकर | अपनी योजनाओं को सम्पूर्ण प्रक्रिया के दौरान दृश्यमान रखें ताकि सभी समान दिशा में अग्रसर हो|

जब तक कार्य पूरा नहीं होता, अपनी सेवा-दल के साथ अत्यंत प्रार्थना पूर्वक अपनी सेवा-योजना को कार्यान्वित करें| सम्पूर्ण प्रक्रिया में निम्न प्रार्थना को करने के लिए अपने दल को आमंत्रित करें:

प्रभु, हम चाहते हैं
यीशु को प्रस्तुत करना
सांस्कृतिक रूपसे प्रासंगिक तरीके से
ताकि अविश्वासी दोस्त भी तेरे पास खींचा आए
आमीन

इस प्रकार की सेवकाई से यीशु को लोग आसानी से पा सकते हैं !

परमेश्वर के लक्ष्य को याद रखिए: यीशु के साथ एक जीवन परिवर्तित कर देने वाले सम्बन्ध को लेकर हर पाठशाला के हर छात्र तक पहुँचना!

परमेश्वर के लक्ष्य को याद रखिए: यीशु के साथ एक
जीवन परिवर्तित कर देने वाले सम्बन्ध को लेकर
हर पाठशाला के हर छात्र तक पहुँचना!

सेवाकार्य के अवसर निर्माण करने के लिए उपकरण

द मैगनेट इफ़ेक्ट

डिजाइनिंग आउटरीच इवेंट्स देट ड्रॉ किड्स टू क्राइस्ट

आप इंजील सुनने के लिए अविश्वासियों को आकर्षित कर सकते हैं | द मैगनेट इफ़ेक्ट आपको दर्शाएगा कि यह कैसे किया जाता है|

द मैगनेट इफ़ेक्ट में बैरी सेंट क्लैर अत्यंत सरल परन्तु सामर्थ्यशाली कार्यशैलियाँ और सेवकार्य के लिए उपकरण प्रदान करते हैं | युवा अगुओं को पता चलेगा कि छात्रों को सेवाकार्य के अवसरों के लिए कैसे सुसज्ज करें ताकि वे मसीह के लिए अपने दोस्तों तक पहुँच सके |

द मैगनेट इफ़ेक्ट चरण-दर-चरण योजनाएँ प्रदान करती है ताकि वयस्क स्वयंसेवकों और छात्रों के दल का चयन और उनकी तैयारी हो, विज्ञापन की योजना का निर्माण हो, एक यथार्थवादी वित्त-योजना बनें, सेवाकार्य की मेजबानी करें, आगे की प्रभावशाली कार्यवाही हो| इसमें एक सेवाकार्य के कार्यक्रम योजनाकर्ता भी शामिल है जो अगुओं का पूरी प्रक्रिया में मार्गदर्शन करें|

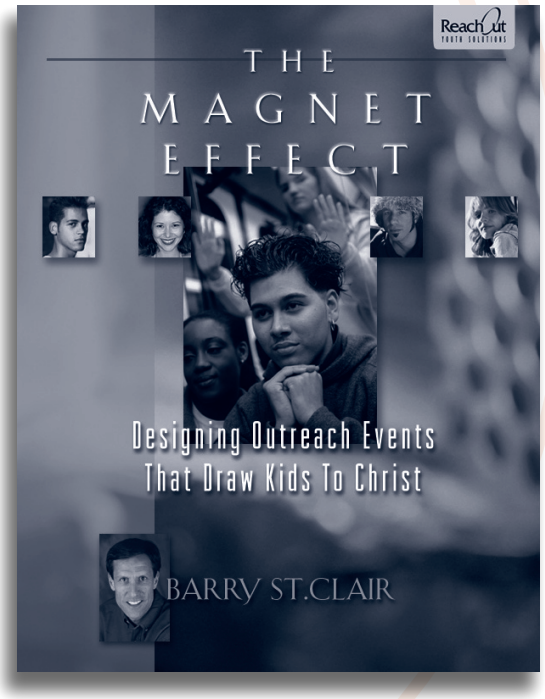

इन संसाधनों को www.reach-out.org पर प्राप्त कर सकते हैं

कार्य योजना

फिलहाल. . . आप सेवाकार्य के अवसर निर्माण करने के लिए क्या कर रहे हैं?

आगे बढ़ते हुए . . . इस सत्र में से अपने खोजों के आधार पर अपनी एक निराली कार्य योजना बनाएँ|

आपके और आपके अगुओं के लिए सेवाकार्य के अवसर निर्माण करना **क्यों** महत्वपूर्ण है?

आप सेवाकार्य के अवसर का निर्माण करने के लिए **क्या** लक्ष्य तय करेंगे ?

आपके अगले सेवाकार्य के लिए आपके छात्र **किन** विशिष्ट अविश्वासियों को आमंत्रित कर सकते हैं?

आप अपना अगला सेवाकार्य **कहाँ** आयोजित करेंगे?

आप अपना अगला सेवाकार्य **कब** आयोजित करेंगे?

सभी बातों को एक साथ रखें

लक्ष्य

यीशु-केन्द्रित युवा सेवकाई की योजना के लिए परमेश्वर की अनोखी योजना का पता लगाना

सभी बातों को एक साथ रखें

आप यीशु केन्द्रित युवा सेवकाई की योजना से सम्बंधित बातों को एक साथ कैसे रखते हैं?

जब आप इस पर विचार करने लगते हैं कि यीशु केन्द्रित युवा सेवकाई में आपने क्या पाया, आपको इस बात का भी बोध हो जात है कि यीशु के जीवन और सेवकाई के समकक्ष लाने के लिए आपको अपने जीवन और सेवकाई में क्या परिवर्तन लाना होगा? आपको प्रस्तावना(सेवकाई के तत्वों से परिचित होना) से कार्यान्वयन (सेवकाई के उन तत्वों को कार्यान्वित करना) तक जाने के लिए क्या करना होगा?

इस स्मरण पुस्तिका(नोटबुक) की समीक्षा करने तथा खासकर कार्य योजना के पन्नों पर गौर करने के लिए आपको अपने समय का एक महत्वपूर्ण खंड विशेष रूपसे अलग रखना होगा|इसे एक "व्यक्तिगत दृष्टि का एकांत स्थल" के रूपमें समझें |ध्यान भटकाने वाली बातों से विमुख होकर परमेश्वर के साथ अकेले में समय बिताएँ | अपनी पूरी कार्य योजना को निम्न पन्नों पैर लिखें,| इनमें अपनी सेवकाई के महत्वपूर्ण तत्वों को भी शामिल करें|

कार्य योजना सार के पन्ने और हर सत्र के कार्य योजना को इसमें शामिल किया गया है ताकि यह आपके लिए सबसे अधिक सहायक बनें|

कार्य योजना का सार

अगले पन्ने पर कार्य योजना के सार का इस्तेमाल करें ताकि आप अपनी कार्य योजना को एक दस्तावेज़ में संक्षित कर सकें| जब आप हर सत्र की समीक्षा करेंगे, एक महत्वपूर्ण अंतर्दृष्टि को तथा तीन कार्य चरणों को पहचानें जिनका अनुसरण आप करने वाले हैं| उस कार्य पर गोला लगाएँ जहाँ से आप शुरू करने वाले हैं |अपनी निराली दृष्टि की ओर बढ़ने के लिए यह सार अत्यंत सहायक होगा| विशेषकर...

- अपनी सेवकाई के लिए आपकी दैनिक प्रार्थना में इस "कार्य योजना के सार" को एक हिस्सा बनाएँ अपने "कार्य योजना के सार" को लिखकर
- अपनी सेवकाई सम्बन्धी दृष्टि को अपने पासबान और अगुओं के सामने प्रस्तुत करें| इसमें कार्य योजना के सार की दो प्रतियाँ लगी हैं|

कार्य योजना के पन्ने

यीशु केन्द्रित युवा सेवकाई से सम्बंधित जो योजनाएँ हैं उसमें अभी और आगे जाकर भी संशोधन करके उसे नया रूप देने के लिए कार्य योजना के पन्नों का इस्तेमाल करें |जब आप नए साल के लिए सेवकाई-लक्ष्य का पुनर्मूल्यांकन करना चाहेंगे , तब इन पन्नों का बहुत फायदा होगा|

कार्य योजना सार

मसीह के साथ गहराई में जाएँ	
महत्वपूर्ण अंतर्दृष्टि	कार्य के चरण : १. २. ३.
जोशपूर्ण प्रार्थना करें	
महत्वपूर्ण अंतर्दृष्टि	कार्य के चरण : १. २. ३.
अगुओं का निर्माण करें	
महत्वपूर्ण अंतर्दृष्टि	कार्य के चरण : १. २. ३.
छात्रों को अनुयायी बनाएँ	
महत्वपूर्ण अंतर्दृष्टि	कार्य के चरण : १. २. ३.
संस्कृति को प्रभावित करें	
महत्वपूर्ण अंतर्दृष्टि	कार्य के चरण : १. २. ३.
सेवा और सहायता के अवसर निर्माण करें	
महत्वपूर्ण अंतर्दृष्टि	कार्य के चरण : १. २. ३.

कार्य योजना सार

मसीह के साथ गहराई में जाएँ	
महत्वपूर्ण अंतर्दृष्टि	कार्य के चरण : १. २. ३.
जोशपूर्ण प्रार्थना करें	
महत्वपूर्ण अंतर्दृष्टि	कार्य के चरण : १. २. ३.
अगुओं का निर्माण करें	
महत्वपूर्ण अंतर्दृष्टि	कार्य के चरण : १. २. ३.
छात्रों को अनुयायी बनाएँ	
महत्वपूर्ण अंतर्दृष्टि	कार्य के चरण : १. २. ३.
संस्कृति को प्रभावित करें	
महत्वपूर्ण अंतर्दृष्टि	कार्य के चरण : १. २. ३.
सेवा और सहायता के अवसर निर्माण करें	
महत्वपूर्ण अंतर्दृष्टि	कार्य के चरण : १. २. ३.

यीशु के साथ और गहराई में जाने के लिए कार्य योजना

फिलहाल . . . आप यीशु के साथ और गहराई में जाने के लिए क्या कर रहे हैं ?

आगे बढ़ते हुए . . . इस सत्र से अपने खोजों को लेकर अपने लिए एक निराली कार्य योजना बनाएँ

मसीह के साथ गहराई में जाना आपके लिए महत्वपूर्ण क्यों है?

मसीह के साथ गहराई में जाने के लिए आप के लक्ष्य क्या होंगे?

मसीह के साथ गहराई में जाने के लिए कौन आपको उत्तरदायी मानेगा?

मसीह के साथ गहराई में जाने के लिए आप मसीह से कहाँ मिलेंगे ?

मसीह के साथ और गहराई में जाने के लिए आप कब समय निकालेंगे ?

जोश से प्रार्थना करें कार्य योजना

फिलहाल . . . जोशपूर्ण प्रार्थना करने के लिए आप क्या करते हैं ?

आगे बढ़ते हुए . . . इस सत्र से अपने खोजों को लेकर अपने लिए एक निराली कार्य योजना बनाएँ

आप के लिए और आपकी सेवकाई में जो दुसरे है उनके लिए जोशपूर्ण प्रार्थना करना क्यों ज़रूरी है?

जोश से प्रार्थना करने के लिए आप खुद के लिए और आपकी सेवकाई में जो अन्य लोग हैं, उनके लिए क्या लक्ष्य बनाते हैं?

आपकी प्रार्थना त्रिक में कौन शामिल होंगे और आपकी सेवकाई में कौन प्रार्थना त्रिक शुरू करेंगे ?

आपकी प्रार्थना त्रिक प्रार्थना के लिए कहाँ मिलेंगी ?

आपकी प्रार्थना त्रिक कब मिलेंगी ?

अगुओं का निर्माण करें कार्य योजना

फिलहाल . . . आप अगुओं के निर्माण के लिए क्या कर रहे हैं ?

आगे बढ़ते हुए . . . इस सत्र से अपने खोजों को लेकर अपने लिए एक निराली कार्य योजना बनाएँ

अगुओं का निर्माण करना क्यों ज़रूरी है?

अगुओं के निर्माण के लिए आपके लक्ष्य क्या होंगे?

आप किन अगुओं को तैयार करेंगे ?

आप अपने अगुओं के दल से कहाँ मिलेंगे?

आप अपने अगुओं के दल से कब मिलना आरम्भ करेंगे और कब तक मिलते रहेंगे?

शिष्य बनाएँ कार्य योजना

फिलहाल . . . आप शिष्य बनाने के लिए क्या कर रहे हैं?

आगे बढ़ते हुए . . . इस सत्र से अपने खोजों को लेकर अपने लिए एक निराली कार्य योजना बनाएँ

आपके लिए, आपके स्वयंसेवकों के लिए तथा अभिभावकों के एलिए शिष्य बनाना क्यों ज़रूरी है?

छात्रों को शिष्य बनाने के लिए आपके कौनसे लक्ष्य होंगे?

आप किन छात्रों को शिष्य बनाएँगे और आपके अगुओं में से कौन हैं जो अन्य छात्रों को शिष्य बनाएँगे?

आप अपने शिष्यत्व दल से कहाँ मिलेंगे?

आप अपने शिष्यत्व दल से कब मिलना आरम्भ करेंगे और कब तक जारी रखेंगे?

संस्कृति को प्रभावित करने के लिए कार्य योजना

फिलहाल . . . आप संस्कृति को प्रभावित करने के लिए क्या कर रहे हैं

आगे बढ़ते हुए . . . इस सत्र से अपने खोजों को लेकर अपने लिए एक निराली कार्य योजना बनाएँ

आप के लिए और आपके अगुओं के लिए संस्कृति को कब प्रभावित करना क्यों ज़रूरी है ?

आप संस्कृति को प्रभावित करने के लिए क्या लक्ष्य बनाएँगे?

आपके लक्षित दर्शक कौन हैं?

आप संस्कृति को कब प्रभावित करेंगे?

आप संस्कृति को कब प्रभावित करेंगे?

सेवाकार्य के अवसर निर्माण करें कार्य योजना

फिलहाल . . . सेवाकार्य के अवसर का निर्माण करने के लिए आप क्या कर रहे हैं?

आगे बढ़ते हुए . . . इस सत्र से अपने खोजों को लेकर अपने लिए एक निराली कार्य योजना बनाएँ

आपके और आपके अगुओं के लिए सेवाकार्य के अवसर निर्माण करना क्यों ज़रूरी है?

आपके सेवाकार्य के अवसरों के निर्माण के लिए आप क्या लक्ष्य बनाएँगे?

आपके अगले सेवाकार्य में आपके छात्र किन विशिष्ट अविश्वासियों को आप आमंत्रित कर सकते हैं?

आप अपने अगले सेवाकार्य के अवसर का संचालन कहाँ करेंगे?

आप संस्कृति को कब प्रभावित करेंगे?

सर्वाधिक पूछे जाने वाले प्रश्न

सर्वाधिक पूछे जाने वाले प्रश्न

यीशु केन्द्रित युवा सेवकाई के बारे में सर्वाधिक पूछे जाने वाले प्रश्न

इस विभाग में जितने भी प्रश्न हैं, वे सभी उन समस्याओं से सम्बंधित हैं जो आपके जीवन और सेवकाई में आपको सहना पड़ता है| हर सत्र में 'टूल्स' के अंतर्गत जिन संसाधनों की सिफारिश की गई हैं उनमें आपको उत्तर और विस्तृत और गहरी जानकारी मिल सकती हैं| और जानकारी के लिए उन संसाधनों को मंगवाएँ और प्रयोग में लाएँ|

इन संसाधनों को www.reach-out.org पर प्राप्त कर सकते हैं

यीशु के साथ अधिक गहराई में जाएँ और जोशपूर्ण प्रार्थना करें

१. मुझे पता कैसे चले कि मुझे क्षमा मिल गई है?

क्षमाशीलता का अभाव परमेश्वर के प्रेम और उसके जीवन के बहाव को हमारे अन्दर बहने से रोक देता है| अक्सर क्षमा प्राप्त करना अत्यंत कठिन होता है| परन्तु परमेश्वर यह मुक्त रूपसे देता है| यीशु ने लकवाग्रस्त व्यक्ति से बड़े ही निर्भीकता से कहते हैं कि उसके पापों की क्षमा हुई है| यह सिद्ध करने के लिए कि उनके पास अधिकार है, यीशु ने उसे चंगा भी किया (मार्क २:१-१३) परमेश्वर ने वादा किया है: " यदि हम अपना पाप अंगीकार करें, वह विश्वास योग्य और न्यायी है और वह हमारे पापों को क्षमा करेगा और सारी अधार्मिकताओं को दूर कर हमें शुद्ध करेगा|
(१ यूहन्ना १:६) इसलिए यदि हम चाहते हैं कि हमें क्षमा की ज़रूरत हैं, हमें अपने पापों को कबूल करना होगा और यीशु की क़ुरबानी की वजह से परमेश्वर हमारे सारे पापों को धो देगा| अक्सर समस्या यह होती है कि हम अपने आपको माफ़ नहीं कर पाते हैं| हम अपने पापों को कबूल तो करते हैं परन्तु साथ ही हम अपने अपराधों की ग्लानि के बोझ को भी धोते रहते हैं| जब मसीह मरें, वह केवल हमारे पापों के लिए ही नहीं तो हमारी ग्लानि के लिए भी मरें| हमें अपने पापों और उससे निर्मित ग्लानि के बोझ को उतार देना है क्योंकि " जितनी दूर पूर्व से पश्चिम है उतनी दूर तक उसने हमारे पापों को मिटा दिया है|" (भजन संहिता १०३:१२)

२. हम किसी से क्षमा कैसे माँगे और किसी को माफ़ कैसे करें?

क्षमा माँगना - बाइबिल दूसरों को क्षमा करने के सम्बन्ध में उतना ही कहता है जितना कि परमेश्वर की क्षमा के बारे में| बिना क्षमा किए और क्षमा माँगे परमेश्वर और लोगों के साथ के हमारे सम्बन्ध कुंठित हो जाएँगे| किसी व्यक्ति से क्षमा माँगने के लिए, मत्ती ५:२३-२४ में दिए गए यीशु के निर्देश का पालन करें|

- **स्मरण रखें** - क्या आपके भाई के मन में आपके खिलाफ कुछ है? प्रभु से पूछिए और वह आपको बताएगा कि किसके साथ आपके सम्बन्ध टूटे हैं|
- मेल करें - अत्यंत विनम्रता और पश्चाताप लेकर उस व्यक्ति के पास जाएँ और क्षमा माँगें|
- मैंने यह अत्यंत महत्वपूर्ण पाया कि हमें क्षमा प्राप्ति के लिए विनती करनी चाहिए |केवल
- यह कहना उचित नहीं है कि "हम शर्मिंदा हैं" या "मैं गलत था"| सिर्फ यह कहिए कि "आप गलत थे"| उस गलती के बारे में विशेष रूप से कहिए| फिर कहिये, "क्या आप मुझे क्षमा करेंगे?" तब उस व्यक्ति के पास आपको क्षमा करने के लिए कुछ ठोस कारण रहता है|

क्षमा प्रदान करना- किसी व्यक्ति को जिसने आपका बुरा किया है,मत्ती ७:३-५ और १८:१५-१८ में यीशु द्वारा दिए गए निर्देश का पालन करें| जब कोई आपको दुखाता है, तब सबसे पहले निश्चित करें कि आपने अपने अन्दर की निराशा, क्रोध और कड़वाहट को मिटाया है| परमेश्वर से प्रार्थना करें कि वह "अपनी आँख के लट्ठे को निकालने" की क्षमता दे और आपके अन्दर उस व्यक्ति के लिए क्षमा प्रदान करें | यह करने के लिए एक खाली कुर्सी अपनी कुर्सी के सामने रखें और कल्पना करें कि वह व्यक्ति आपके सामने बैठा है और अपने सारी पीड़ा उस व्यक्ति के सामने व्यक्त करें | फिर उस व्यक्ति को क्षमा प्रदान करते उए कहें कि "मैं तुम्हें ..... के लिए क्षमा करता हूँ"|फिर जब आप उस व्यक्ति के पास जाएँगे इस विषय पर बात करने के लिए तब आपके अन्दर से यीशु का प्रेम ही बहेगा क्योंकि आपने उस बात को अपने ह्रदय में पहले ही सुलझा लिया था|

किसी को क्षमा प्रदान करना और प्राप्त करना कोई मामूली बात नहीं है| किसी के लिए, यह एक अत्यंत कठिन बात हो सकती है| तथापि, परमेश्वर ने अपनी क्षमा हमें यीशु में दी है| हमारे पास यह एक अद्भुत अवसर है न केवल इसे प्रदान करने का अपितु इसे उनसे प्राप्त करने का भी|

३. मैं अपने जीवन में अपने गलत बर्ताव को कैसे सुधार सकता हूँ?

हम अपने आपको बदलते नहीं है; सिर्फ परमेश्वर हमें बदलता है | यह सीखना हमारे लिए इतना मुश्किल क्यों होता है? गलतियों २:२०-२१ इस ओर सही संकेत करता है कि हम अपने व्यवहार को कैसे परखें | आयत २१ हमें दिखता है कि अक्सर हम अपने बर्ताव को बदलने के लिए क्या करते हैं | हम " परमेश्वर के अनुग्रह को" नज़रंदाज़ कर देते हैं यह सोचकर कि हम इस परिस्थिति को संभाल लेंगे | परन्तु जब हम यह करते हैं, हम परमेश्वर से यह कहते हैं कि: " मसीह व्यर्थ ही मरा"| अपना बर्ताव बदलने के लिए परमेश्वर का अनुग्रह ही कुँजी है| परिभाषित, यह क्रूस और पुनरुत्थान के जरिए प्राप्त आप में परमेश्वर का अलौकिक सामर्थ्य ही है| यहाँ गलतियों २:२० का ही अनुप्रयोग हो सकता है| अपने व्यवहार को बदलने के लिए दो महत्वपूर्ण सत्यों को स्वीकार करने की ज़रूरत है:

- जब यीशु मरें, मैं भी मरा | "मसीह के साथ मैं भी क्रूस पर चढ़ाया गया"|
- जब मसीह जिन्दा हुआ, मैं भी जिंदा हुआ|मृतकों में से मसीह के पुनरुत्थान और आत्मा के उतरने के माध्यम से अब " मसीह मुझमें जीते हैं |"
- हमारे अन्दर उसका आत्मा वास करता है इसलिए हमारे पास मसीह है| तो अब हम अपनी ज़िन्दगी कैसे जीए? "परमेश्वर के पुत्र में विश्वास रखते हुए|" हम अपना विश्वास परमेश्वर के वादे पर रखते हैं| "मैं मरा हुआ हूँ इसलिए मैं कुछ भी बदल नहीं सकता| परन्तु मसीह मुझमें जीते हैं, इसलिए वे सब कुछ बदल सकते हैं| यीशु हमें धर्मी बनाते हैं(उनके साथ सही रिश्ते में) इस लिए हम सही बात कर सकते हैं|"

किसी को क्षमा प्रदान करना और प्राप्त करना कोई मामूली बात नहीं है| किसी के लिए, यह एक अत्यंत कठिन बात हो सकती है| तथापि, परमेश्वर ने अपनी क्षमा हमें यीशु में दी है| हमारे पास यह एक अद्भुत अवसर है न केवल इसे प्रदान करने का अपितु इसे उनसे प्राप्त करने का भी|

४. यदि मैं अपने जीवन के महत्वपूर्ण समस्या को हल नहीं कर पाया तो ?

कभी-कभी लोगों के पास "जीवन पर हावी होने वाली समस्या" रहती है जो पीढ़ियों से आई हैं| पाप जब जीवन को बुरी तरह से जकड़ लेता है जब समस्या सुलझाने के लिए जो यीशु के संसाधन हैं उनके जानकार की आवश्यकता होती है ताकि वे आकर आपको समझाए की ऐसी समस्या को कैसे सुलझाया जाए|

मदद करने के लिए सही व्यक्ति की खोज:

- स्मरण रहे कि पवित्र आत्मा ही अंतिम सलाहकार हैं (यूहन्ना १४:१५-१८)
- परमेश्वर से प्रार्थना करें कि आपको सही सलाहकार मिलें |
- ऐसे सलाहकार को ढूँढिए जो मानवतावाद और मनोविज्ञान के आधार पर नहीं तो मसीह-केन्द्रित सलाह दें |
- परमेश्वर से प्रार्थना करें कि आपको पूर्ण रूपसे उद्धार, चंगाई और आज़ादी मिलें (यूहन्ना ८:३२,३६)

५. परमेश्वर को बेहतर जानने के लिए मैं कौनसे व्यावहारिक कदम उठा सकता हूँ?

मसीह के साथ घनिष्ठता ही हमारा अंतिम लक्ष्य है| हमारा आतंरिक जीवन जीवित जल के सोते से ही खिलता है|(यूहन्ना ४:१३) हम जो हैं उसीसे हमारे कार्य निर्धारित होते हैं | इसलिए हमें यीशु पर ध्यान केन्द्रित करना चाहिए और वह हमारे लिए क्या है इस पर गौर करना चाहिए|

प्रति क्षण परमेश्वर की उपस्थिति में हमें जीवन है| "आत्मिक श्वासोच्छवास" एक तरीका है इसे करने का| ठीक उसी तरह जैसे हम श्वासोच्छवास(साँस लेना और छोड़ना) के कारण शारीरिक रूपसे जिन्दा हैं, उसी तरह हम आत्मिक श्वासोच्छवास के जरिए मसीह के साथ अपने सम्बन्ध को ताज़ा बनाते हैं| १ यूहन्ना १:६ के वाडे के अनुसार, हम अपने पापों को कबूल करते हैं जो साँस छोड़ने के समान है| और इफिसियों ५:१८ के अनुसार पवित्र आत्मा को अपने अन्दर निवास करने के लिए बुलाते हैं जो साँस लेने के समान हैं| दिनभर में कई बार आत्मिक श्वासोच्छवास का अभ्यास करने से हम इस बात से सजग रहते हैं कि हम परमेश्वर की उपस्थिति में हैं | ये अनुशासन और आदतें यीशु को जानने में सहायक होंगे जिससे उनका जीवन हमारे अन्दर, हमारे जरिए और हमारे बाहर बहता रहे|

- कम से कम ३० मिनिट परमेश्वर के साथ अकेले में बिताएँ|
- जोशपूर्ण प्रार्थना करें सत्र में जो प्रार्थना त्रिक की कार्यशैली है उस का अनुसरण करते रहें|

- वचन कंठस्थ करें | ऐसा करने से आप परमेश्वर के समान सोचने लगते हैं| शुरुआत में प्रति सप्ताह एक वचन कंठस्थ करें और फिर जब आदत पेड़ जाएँ तब संख्या बाधा दे |
- कंठस्थ किये गए वचनों को प्रार्थना के समय परमेश्वर के सामने दोहराएँ|
- आधा दिन या एक पूरा दिन प्रार्थना और उपवास के लिए नियुक्त करें |
- ऐसी प्रेरणादायी पुस्तकें पढ़ें जो मसीह के साथ आपके सम्बन्ध पर केन्द्रित हो, खासकर *माय अटमोस्ट फॉर हिज़ हाईएस्ट जैसी उत्कृष्ट* भक्तिमय पुस्तकेंज़रूर पढ़ें| हर समय एक पुस्तक हमेशा अपने साथ रखें और लक्ष्य निर्धारित करें कि रोज़ एक अध्याय पढेंगे|

अगुओं का निर्माण करें

१. मैं उत्तम दर्जे के वयस्क अगुओं की नियुक्ति कैसे करूँ?

कई साधारण लोग युवा सेवकाई का नेतृत्व करने में अपने आपको अक्षम समझते हैं| अक्सर वे भयग्रस्त हो जाते हैं| नियुक्ति करते समय हमें लोगों के भय को दूर करना चाहिए| उन्हें इस बात का बोध दें कि आप ऐसे लोगों को नहीं ढूँढ रहे हैं जो पहले से ही बच्चों के लिए कार्य करने में कुशल और प्रशिक्षित हो| उलटे आप ऐसे लोगों को ढूँढ रहे है जिनमें अगुआ बनने की काबिलियत हो और जो सीखना चाहता है| आप विश्वासयोग्य, उपलब्ध और सिखानेयोग्य लोगों की तलाश में हैं| उन्हें बताएँ कि आप युवा सेवकाई के लिए उनको सज्ज करेंगे|

अगुओं को नियुक्त करने का सबसे उत्तम तरीका है हर व्यक्ति से आप व्यक्तिगत रूपसे मिलें | उनसे कहें, " युवा सेवकाई के लिए मैं एक नेतृत्व दल की शुरुआत करने जा रहा हूँ| मसीह में अपने सम्बन्ध को दृढ़ बनाने के लिए और यीशु ने जैसे बच्चों की ज़रूरतों को पूरा किया उसे सीखने के लिए हम नियमित रूपसे मिलेंगे | क्या आप मेरे साथ जुड़ने के बारे में प्रार्थना करेंगे?" इस बात पर जोर दें कि यह सभा युवा सेवकाई के बारे में बातचीत करने के लिए नहीं तो उनके व्यक्तिगत और सेवकाई के विकास में उन्हें और पुष्ट करने के लिए है| कुछ दिनों के बाद उनका उत्तर जानने के लिए प्रत्यावर्ती जाँच करें|

२.अपने नेतृत्व दल में क्या मुझे मेरे सभी वयस्क अगुओं को शामिल करने की ज़रूरत

शुरुआत में नहीं| आरम्भ में आप केवल उन लोगों को ढूँढ रहे हैं जो प्रोत्साहित है और भाग लेने की इच्छा रखते हैं | वे समस्त सेवकाई के लिए एक वातावरण निर्माण करेंगे| यदि आपके नेतृत्व दल में ऐसे लोग हैं जो प्रोत्साहित नहीं हैं वे बाकी के लोगों के उत्साह को भी नीचे लाएँगे | यह पूरी सेवकाई में छनकर उतरेगी|

परन्तु यदि आपके पास प्रोत्साहित लोग हैं, वे बच्चों के लिए सकारात्मक माहौल बनाएँगे| बाद में, जब आप अन्य अगुओं की नियुक्ति करेंगे, तब भी आपको प्रोत्साहित लोगों को ही नियुक्त करना है| समय के साथ, आपके सभी अगुआ प्रोत्साहित और प्रशिक्षित बनेंगे| उस समय, लोगों को एहसास होगा कि नेतृत्व दल में शामिल होना एक ज़रूरत से ज्यादा एक विशेषाधिकार है|

३. नेतृत्व दल शुरू होने के बाद क्या नए लोग शामिल हो सकते हैं?

यदि आप नेतृत्व दल के बारे में पूरी कलीसिया के सामने घोषणा करते हैं और एक प्राथमिक सभा और/या विशेष दर्शन सभा आयोजित करते हैं, तब शायद ही कोई हो जो बाद में शामिल होना चाहे |पहले या दुसरे सत्र के बाद, दल में प्रवेश बंद कर दें| इसके बाद भी यदि लोग आपके नेतृत्व दल से जुड़ना चाहेंगे क्योंकि वे दल से प्रोत्साहित हो रहे हैं, उन्हें १२ सप्ताह के लिए रुकने के लिए कहें| उस वक्त, दोबारा नियुक्ति करके और एक दल को अ पर्सनल वॉक विथ जीसस सिखाएँ जो कि अगुओं का निर्माण श्रृंखला की पहली पुस्तक है| आप अगुओं की संख्या बढाने के लिए इसको बार-बार कर सकते हैं|

४.जब कोई अपने नेतृत्व दल के प्रति जो बद्धता है उसका पालन न करें तब मैं क्या करूँ?

इस समस्या को दूर करने के लिए ज़रूरी है कि आप अपना दर्शन और दिशा स्पष्ट रूपसे उनके सामने रखें| दल के रूप में करने के बजाय व्यक्तिगत रूपसे नियुक्ति कर आप इसे बड़े प्रभावशाली ढंग से कर सकते हैं| उनके सामने व्यक्तिगत प्रतिबद्धता का वर्णन स्पष्ट रूप से करें|(बिल्डिंग लीडर्स की तीन पुस्तकों की हर सीरीज में पृष्ठ क्रमांक ११ पर यह पाया जाएगा) ऐसा करने से हर व्यक्ति जानेगा कि इसमें क्या अपेक्षित है|

यदि दल में कोई संघर्ष कर रहा है या पूरा दल ही संघर्ष कर रहा है तो ईमानदार रहे| उस व्यक्ति को उसकी समस्या के बारे में अकेले में पूछें| अक्सर लोग अपनी ज़िन्दगी में किसी निजी समस्या से जूझता है जिसके कारण वह अपना उत्साह और ध्यान खो बैठता है| संभव है कि कोई आत्मिक लीक में उलझ गया हो जो उसे उबा रहा हो | उसका मसला क्या है यह निर्धारित करने में उसकी सहायता करें और यह भी जानने में मदद करें कि वह दोबारा पथ पर कैसे लौट सकता है| संभव है कि वह एक दल में प्रविष्ट होने के बाद यह बोध पाया हो कि वह बच्चों के बीच में काम करना पसंद नहीं करता| उसे दल छोड़ने दें|सामान्य तौर पर जब कोई निर्धारित कार्य नहीं करता है, वह उस कार्य से सम्बंधित अधिक नहीं होता है| अक्सर मसला निजी होता है|एक अगुआ के नाते उस अगुए की सहायता करें ताकि वह उसमें से उभर सके| आपके व्यक्तिगत सहयोग से वे उस बाधा को पार कर आगे बढ़ने में समर्थ होंगे|

५. यदि कोई स्वयंसेवक बच्चों के साथ ठीक तरह से काम नहीं कर रहा है, तब क्या करें?

यदि किसी व्यक्ति की बुलाहट युवा सेवकाई के लिए है और वह वह अपनी इच्छा व्यक्त करता है तो, उसके लिए कार्य हेतु एक स्थान बनाएँ| नेतृत्व दल के सन्दर्भ में, उसका,उसकी बुलाहट का, उसके आत्मिक वरदानों का, उसके कौशल और सम्बन्ध बनाने की योग्यताओं का निरिक्षण करने का आपको अवसर मिलेगा |जहाँ वह व्यक्ति सबसे अधिक सहायक बन सकता है ऐसा स्थान ढूँढिए| हो सकता है कि वह व्यक्ति गलत जगह पर आसीन हो| हो सकता है कि वह पढ़ा रहा है जबकि उसकी रूचि विडियो के निर्माण में हो| ऐसी जगह पर डालें जहाँ उसकी काबिलियतों का सर्वाधिक उपयोग हो सके| यदि वह बच्चों के बीच में तड़पती हुई मछली के समान है, तो बड़ी कोमलता से उसका मार्गदर्शन करें कि वह युवा सेवकाई के बजाय कलीसिया के अन्य सेवा-क्षेत्रों में काम कर सकें|

यदि समस्या रवैये का है, तो वह दूसरी बात है| कभी-कभी लोग आप पर अपने सामर्थ्य का रोब जमाते हैं तो कभी आपका फायदा उठाते हैं| ऐसे प्रसंग में आप अपनी कलीसिया के अगुए से बात करें और शास्त्र के अनुसार इस समस्या का हल निकालें|

शिष्य बनाएँ

१. शिष्यत्व के दल की अगुआई कौन कर सकता है?

आप इस प्रश्न का उत्तर कैसे देते है, इससे आपके प्रोत्साहन पर और छात्रों की सेवकाई की गहराई पर महत्वपूर्ण असर पड़ेगा| आपकी परिस्थिति के अनोखेपन के प्रकाश में इसका उत्तर बड़ी सावधानी से दें | निम्न प्रायोगिक युक्तियों से आपको मार्गदर्शन मिलेगा |

इस बात को मन में स्थापित कर लें कि जो लोग आपके नेतृत्व दल में हैं उन्होंने ही अन्य दलों की अगुआई करनी हैं| यही उचित है क्योंकि आपके अगुआ नेतृत्व दल की सभा में "शिष्यत्व दल" का अनुभव पाते हैं | वे ही हैं जो जानते हैं कि विकास के लिए सही वातावरण कैसे निर्माण करें|

इस बात पर जोर न दें कि नेतृत्व दल का हर अगुआ एक शिष्यत्व दल की अगुआई करें| हो सकता है कि युवा सेवकाई में वह उनकी बुलाहट न हो| आप सबको एक दल की अगुआई करने के लिए प्रोत्साहन दे सकते हैं परन्तु तब केवल उन्हीं लोगों को एक दल की अगुआई दें जो रूचि रखते हैं और जो योग्य हो|

छोटे से आरम्भ करें| केवल एक या दो दल से आरम्भ करें- हो सके तो एक लड़कों के लिए और एक दल लड़कियों के लिए| एक मिसाल प्रस्तुत करने के लिए आप उनमें से एक दल की अगुआई करें|इससे आपको कुछ समय और अनुभव भी मिलेगा जिससे आपको ज्ञान मिलेगा कि आपकी शिष्यत्व की सेवकाई में और बड़े पैमाने पर बच्चों को शामिल करने के लिए आपको किस संरचना की आवश्यकता है| यदि समय हो, तो समानांतर एक शिष्यत्व दल और नेतृत्व दल की अगुआई करें| वर्तमान और भविष्य के शिष्यत्व दलों के लिए अगुओं का निर्माण जारी रखें| नेतृत्व दल की प्रक्रिया के दौरान उन्हें बच्चों को शिष्य बनाने के लिए प्रोत्साहित करें| उन्हें एक दल दें और उन्हें शुरू करने के लिए कहें| इस तरीके को अपनाकर आप एक निरंतर बढ़ने वाले वयस्क-अगुओं और शिष्य-अगुओं का विकास करेंगे जो लगातार मसीह में परिपक्व बन रहे हैं और जो दूसरों की अगुआई कर सकते हैं | ये वयस्क और छात्र ही आपके मुख्य लोग बनेंगे| बाद में आपके परिपक्व होने वाले छात्र ही अपने से छोटे छात्रों को शिष्य बनाएँगे|

टिप्पणी: अभिभावक ही आपके प्रथम क्रमांक के युवा अगुआ हैं| आपके सम्मिलित अभिभावकों के इर्द-गिर्द ही छात्रों को शिष्य बनाने की कार्यशैली का निर्माण करें| अपने अभिभावकों को सज्ज करें ताकि वे अपने बच्चों को ही नहीं तो उनके बच्चों के दोस्तों को भी शिष्य बना सकें| अभिभावकों को शिष्यत्व का प्रशिक्षण और उससे सम्बंधित संसाधन आपको *पैरेंट फ्यूल* देगी |

२. छात्रों को शिष्यत्व दल में शामिल होने के लिए मैं उन्हें आह्वान कैसे दूँ?

जो बच्चे यीशु के लिए भूखे हैं, वे ही शिष्यत्व के लिए आदर्श उम्मेदवार हैं| आप पाएँगे कि कुछ अनपेक्षित बच्चे ही प्रतिसाद देते हैं| अक्सर यीशु को जानने की उनकी तीव्र चाह उनके आचरण या बर्ताव के नीचे छिप जाते हैं|

सत्य है, उनमें से अधिकांश परिपक्व नहीं होंगे| परन्तु इसी वजह से वे दल में हैं- यीशु में परिपक्व होने के लिए| वे जहाँ कहीं भी हैं उन्हें अपनाएँ और वहाँ ले जाएँ जहाँ उन्होंने होना चाहिए| इसकी शुरुआत होती है हर एक बच्चे को शिष्यत्व दल का हिस्सा बनने के लिए चुनौती देकर|

अपनी चुनौती में इन महत्वपूर्ण मुद्दों पर सावधानी से विचार करें:

- पूरे युवा दल के सामने अवसर खुला रखें; फिर व्यक्तिगत भेंट-समय देकर आगे बढ़े|हो सकता है कि कुछ बच्चे जो आपकी नज़र में सक्षम हैं, उन्होंने सार्वजानिक आह्वान के समय प्रतिसाद न दिया हो| उनके पास व्यक्तिगत तौर पर जाएँ और उन्हें आह्वान दें|
- हर एक छात्र को आमने-सामने मिलें | फोलोइंग जीसस के पृष्ठ क्रमांक ११ पर जो व्यक्तिगत प्रतिबद्धता है उसे पढ़कर कीमत गिनवाएँ|
- शिष्य बनने के फायदे के बारे में उन्हें बताइए और अपने जीवन से या किसी और शिष्य बने हुए बच्चे के जीवन से उदाहरण देकर समझाइए|
- अपने प्रथम दल-सभा में और अन्य प्राथमिक सभाओं में पृष्ठ क्रमांक ११ पर जो व्यक्तिगत प्रतिबद्धता है, उसकी गंभीरता को दोहराइए| हर व्यक्ति से व्यक्तिगत तौर पर पूछें क्या वह इसमें जो निहित है उसे समझता है |

- अपनी पहली सभा में उनसे व्यक्तिगत प्रतिबद्धता पर दस्तखत करवाएँ| फिर एक दुसरे की पुस्तक पर दस्तखत करने के लिए अपनी पुस्तक को आगे बढाएँ | इसस उत्तरदायित्व बढ़ता है|यदि आपके पास एक जूनियर हाई ग्रुप है तो अभिभावकों से भी दस्तखत करवाएँ क्योंकि, ज़्यादातर वे ही अपने बच्चों के सभा स्थल पर लाएँगे|

३. यदि छात्र दिए गए कार्य नहीं करते हैं, तो ऐसी हालत में हम क्या करें?

बच्चों को चुनौती देने के लिए आप सही कदम उठाएँगे, शुरू होने से पहले ही इनमें से कई समस्याएँ सुलझ जाएगी|(पूर्व प्रश्न को देखिए|) यदि इससे भी हल नहीं होता है तो आप छात्रों को अन्य तरीकों से प्रोत्साहित कर सकते हैं| यह तरीके कितने प्रभावोत्पादक होंगे यह इस बात पर निर्भर करता है कि आपके व्यक्तिगत संबंध उन बच्चों के साथ कैसे हैं ? यह अद्भुत बात है कि जितना समय आप उन बच्चों के साथ दल के बाहर समय बिताएँगे, उतना ही वे दल में शामिल होने के लिए और दिए गए कार्य को करने के लिए प्रोत्साहित होंगे|

बच्चों से दिए गए कार्यों को पूरा करवाने के लिए आप इन प्रायोगिक तरीकों को अपना सकते हैं|

- सभा से पूर्व दो या तीन दिन हर सप्ताह में उन्हें बुलाएँ| उनसे उनके कुशलक्षेम के बारे पूछिए और इस सप्ताह में किए जाने वाले कार्य के बारे में बड़े जोश से उन्हें बताएँ| उन्हें दिए गए कार्य के बारे में याद दिलाएँ और फिर फ़ोन पर उनके लिए प्रार्थना करें| इससे उनके साथ आपके सम्बन्ध अच्छे बनेंगे और आपकी अपेक्षा उन्हें याद दिलाएँ| एक मित्र-प्रणाली स्थापित करें ताकि लोग उत्तरदायी बनें| एक दुसरे के पास से काम करवा लेने की ज़िम्मेदारी उन मित्रों की होती है| जो ज्यादा प्रोत्साहित बच्चा है वह कम प्रोत्साहित बच्चे की सहायता कर सकता है|
- यदि कोई छात्र विशेष लड़खड़ा रहा है, उसे अपने साथ लेकर दिए गए कार्य को पूरा करवाएँ| पूरे युवा दल के सामने अवसर खुला रखें; फिर व्यक्तिगत भेंट-समय देकर आगे बढ़िए|हो सकता है कि कुछ बच्चे जो आपकी नज़र में सक्षम हैं, उन्होंने सार्वजानिक आह्वान के समय प्रतिसाद न दिया हो| उनके पास व्यक्तिगत तौर पर जाएँ और उन्हें आह्वान दें|
- हर एक छात्र को आमने-सामने मिलें | फोलोइंग जीसस के पृष्ठ क्रमांक ११ पर जो व्यक्तिगत प्रतिबद्धता है उसे पढ़कर कीमत गिनवाइए|

- यदि पूरा दल संघर्ष कर रहा है, खुलकर बात करें| ईमानदारी से जाने कि वे क्यों संघर्ष कर रहे हैं| मिलजुल कर उपाय ढूँढे| आप जो कुछ भी करते हैं,उसमें उनके साथ जुड़े रहिए| उन्हें ऐसा एहसास कभी न दें कि दिए गए कार्य को न करने की वजह से आप उनका साथ छोड़ देंगे|
- जो कुछ आप सीखते हैं उसे कार्यान्वित करें|बच्चे इतने पढ़े-लिखे किन्तु उनकी बुद्धि और प्रतिभा को बहुत कम चुनौती प्राप्त है इसलिए उन्हें ऐसी जगह की आवश्यकता है जहाँ वे कार्य करते हुए सीखेंगे| उन्हें अपने साथ उन्हीं के किसी मित्र के पास मसीह के बारे में बताने के लिए ले जाएँ या अपने साथ दल की सभा के पश्चात किसी किशोर-गृह में ले जाएँ | आप जो कुछ भी करें इस बात को अच्छी तरह समझा दें कि यीशु का अनुसरण करना उबाऊ बात नहीं है !

४. क्या लड़के और लड़कियों को एक ही दल में रख सकते हैं ?

जब तक आवश्यक न हो तब तक नहीं| कई सालों का हमारा यह अनुभव है कि अलग लिंग के लोगों को अलग रखना ही बेहतर है| इसका कायदा या कानून से कोई लेना-देना नहीं है| बाइबिल कहता है कि ज्यादा उम्र के पुरुष अपने से छोटी उम्र के पुरुषों को सिखाएँ और ज्यादा उम्र की स्त्रियाँ अपने से छोटी उम्र की स्त्रियों को सिखाएँ|(तीतुस २: १-८)इस निर्णय के मार्गदर्शक और दो कारण हैं :

- जब लड़के और लडकियाँ शिष्यत्व के दल में अपना नाम दर्ज करवाते हैं तब यीशु को बेहतर जानने की इच्छा के बजाय किसी लड़के या लड़की के साथ होने की इच्छा से भी प्रेरित हो सकते हैं |
- शिष्यत्व दल में बच्चे यौन-क्रिया और हस्त-मैथुन आदि विषयों पर चर्चा करना चाहते हैं | एक मिश्रित दल में इस प्रकार के विषयों पर चर्चा करना मुश्किल होता है |परन्तु अलग दल होगा तो उसमें ऐसे विषयों पर खुलकर चर्चा हो सकती है|

५. मेरे बच्चों को प्रारंभिक जानकारी हैं, इसलिए क्या मैं मूविंग टुवर्ड मचुरिटी सीरीज को छोड़ कर आगे बढ़ सकता हूँ? क्या सचमुच मुझे उन पुस्तकों को क्रमशः करने की ज़रूरत है?

अक्सर युवा अगुए सोचते हैं कि उनके बच्चे जितना वे सोचते और करते हैं उससे भी बढ़कर परिपक्व हैं| भले ही आपके छात्र प्रारंभिक बातें सीख चुके हैं, परन्तु ज़रूरी नहीं है कि वे उन्हें कार्यान्वित करते हैं| इसके अतिरिक्त, यह महत्वपूर्ण है कि किसी भी पुस्तक को न छोड़ा जाए क्योंकि आगे जाकर जब वे छात्र अपने बड़े शिष्यों को अपने से छोटे बच्चों को सिखाने के लिए प्रोत्साहन देंगे तब यदि आपके छात्रों ने प्रारंभिक पुस्तकें नहीं पढ़ी हैं, वे अपने शिष्यों का ठीक से मार्गदर्शन नहीं कर पाएँगे|

पुस्तकों को क्रम से पढ़ाना ही सर्वोत्तम है क्योंकि उन्हें विकास के क्रम में लिखा गया है, जिसमें बच्चों को एक प्रक्रिया से लेकर जाते हैं | फोलोइंग जीज़स में उद्धार की संकल्पना से परिचित कराके इन्फ्लुएन्ज़िंग योर वर्ल्ड में दूसरों की सेवा करने के कौशल सिखाए जाते हैं| फिर भी यदि आपके पास ऐसा करने का कोई ठोस कारण है, आप क्रम बदल सकते हैं| उदाहरणार्थ, यदि एक मिशन ट्रिप आयोजित की गई है और आप बच्चों को सिखाना चाहते हैं कि अपना विश्वास कैसे बाँटे, तो आप गिविंग अवे योर फेथ- का इस्तेमाल कर सकते हैं- भले ही यह क्रम में अगली पुस्तक न हो |

अपनी संस्कृति को प्रभावित करें

१. यदि विद्यालय बाहर वालों के लिए बंद हो तो ऐसी स्थिति में मैं क्या करूँ ?

अमरीका में सब जगह यह बात फैली हुई है कि विद्यालय के परिसरों में जाना नामुमकिन है| सच्चाई तो यह है कि यदि आपका तरीका सही है, तो शायद ही कोई विद्यालय आपको बाहर रख पाएँ| अक्सर युवा अगुए इसको बहाना बनाकर परिसर में नहीं जाना चाहते| युवा सेवकाई के दर्शन, यदि उचित तरीके से समझा जाए तो आपके समुदाय के हर परिसर में सेवकाई स्थापित करने की इच्छा ज़रूर व्यक्त करेगा|

बंद परिसर की दीवार को गिराने के लिए:

- प्रार्थना करें तथा और प्रार्थना करें| किसी भी अन्य कार्य से बढ़कर यह सर्वाधिक महत्त्व रखता है| कई सालों से बंद परिसर भी केवल प्रार्थना के माध्यम से खुल गए| लगातार प्रार्थना से फरक पड़ेगा| अपने परिसरों में प्रार्थना त्रिक की कार्यशैली का प्रयोग अपने छात्रों के साथ करें|प्रधानाध्यापक से मिलें और इस गंभीर और महत्वपूर्ण रिश्ते को बढ़ाएँ|
- उनकी ज़रूरत को पूरी करें| जिस क्षेत्र में विद्यालय को मदद की ज़रूरत है, अपने सारे संसाधनों का उपयोग कर उनकी सहायता करें|
- अन्य कलीसियाओं और परिसर संघटनाओं के साथ मिलकर काम करें| कई बार, दूसरी युवा सेवकाई या संघटना पहले ही वहाँ कार्यरत होता है| यदि ऐसा नहीं है तो आप एक सेवकाई शुरू करने के बारे में सोचें| अक्सर जब आप को अकेले प्रवेश करने में दिक्कत का सामना करना पड़ रहा हो, पूर्व स्थापित सेवकाई की वजह से आपको उस परिसर में प्रवेश मिल सकता है|

२. मैं नेतृत्व दल को परिसर में कैसे शामिल करूँ?

आपके नेतृत्व दल में कुछ लोग होंगे जो परिसर में जाने के लिए उत्सुक होंगे, और कुछ डर के मारे काँपेंगे| किसी भी तरह से क्यों न हो, हर एक को कलीसिया के बाहर बच्चों के साथ कार्य करना

ही होगा- भले ही वह सप्ताह में एक घंटा ही क्यों न हो|जिनमें ज्यादा उत्साह है, ऐसों को अपने साथ परिसर की सेवकाई में शामिल कर लें ताकि उनका प्रशिक्षण हो| उनके प्रशिक्षण के बाद, उनकी सहायता करें ताकि वे किसी और परिसर में जाकर सेवकाई स्थापित कर सके|

परिसर सेवकाई के लिए कॉलेज के छात्र सबसे उत्तम संसाधन हैं| उनके खाली समय तथा हाई स्कूल के छात्रों से थोड़ी-सी उम्र के अंतर में होने का उपयोग कर, उन्हें परिसर दलों में संघटित करें ताकि वे आपके समुदाय के हर परिसर पर बच्चों के साथ सम्बन्ध बढ़ा सके|

- *पेनीट्रेटिंग दी कैंपस* में एक सम्पूर्ण अध्याय इस प्रश्न सम्बंधित विचार को दिया गया है|

३. परिसर में मुझे क्या अधिकार प्राप्त है?

एक भी नहीं| नहीं| कोई नहीं| छात्रों के कई अधिकार हैं परन्तु शिक्षकों के अधिकार अत्यंत सीमित हैं| यदि आप किसी छात्र के अभिभावक है, आपको अन्य अभिभावकों के समान ही अधिकार प्राप्त है| परन्तु एक युवा अगुए के रूपमें कोई अधिकार नहीं है| इसलिए यह अत्यावश्यक है कि परिसर में आप सेवा-मार्ग अपनाएँ न कि अधिकार-मार्ग |विद्यालय में जाकर बाइबिल-अध्ययन के लिए समय, या एक क्लब के लिए या एक वक्ता के रूप में सभा/कक्षा में जाने की इज़ाज़त माँगने के बजाय, प्रधानाध्यापक और कुछ प्रशिक्षकों/शिक्षकों से सम्बन्ध दृढ़ बनाएँ| फिर तय करें कि आप उस विद्यालय की ज़रूरतों की पूर्ति कर उसकी सेवा कैसे करेंगे| ऐसा करने से उस विद्यालय के साथ एक दीर्घकालीन और सकारात्मक सम्बन्ध स्थापित होगी और आपको आने वाले कई वर्षों तक छात्रों के बीच सेवकाई करने का मौका भी प्राप्त होगा|

४. यदि एक से अधिक परिसर मेरे क्षेत्र में हो तो मैं किस तरह से उत्तम सेवकाई करूँ?

जितना अधिक हो उतना अच्छा ! जितने अधिक परिसर उतने ज्यादा बच्चों तक पहुँचने की क्षमता आपकी सेवकाई में होगी|

- सकारात्मक रीति से आप उन तक पहुँचने के लिए क्या करेंगे?आप, एक अगुआ के नाते, एक परिसर में अपना एक प्रभावशाली सेवकाई स्थापित करें|
- उस परिसर का इस्तेमाल एक प्रशिक्षण स्थली के रूप में करें और अपने नेतृत्व दल को प्रशिक्षित करें कि उन्हें परिसर के छात्रों के साथ सम्बन्ध कैसे बनाएँ और उन तक मसीह के लिए कैसे पहुँचे|
- कॉलेज के उन छात्रों को लेकर परिसर दल बनाएँ, जो आपके नेतृत्व दल में हैं और जो उस परिसर को अपनी सेवकाई का क्षेत्र समझते हैं
- हर परिसर-दल को इकट्ठा करें ताकि वे आपके मसीही छात्रों को मसीह के लिए अपने दोस्तों को प्रभावित कर सकें| यह करने के लिए टेकिंग योर कैंपस फॉर क्राइस्ट नामक पुस्तक आपको वे सभी संसाधन देंगी जिसकी आपको आवश्यकता हैं |•ऐसा मत सोचें कि आपको सभी परिसर तक या तो अकेले या अपनी कलीसिया के माध्यम से ही पहुँचना है| अन्य परिसर मसीही संघटनाओं और कलीसियाओं, यहाँ तक कि, अन्य ईसाई सम्प्रदायों के साथ जुड़कर और उन्हें सहयोग देकर यह निश्चित करना है कि हर परिसर के हर बच्चे को यीशु के बारे में जानने का अवसर मिलें

५. यदि मेरी कलीसिया मुझे किसी परिसर में जाने की इज़ाज़त न दे तो?

इस प्रश्न का उत्तर काफ़ी टेढ़ा हो सकता है क्योंकि आपके पासबान या नेतृत्व दल द्वारा न कहकर निरुत्साहित करने के पीछे कई विचारणीय बातें हो सकती हैं| यह मानते हुए कि कोई भी अपने अधिकारों का नाजायज़ फायदा नहीं उठा रहा है और आपके और नेतृत्व दल में किसी प्रकार का संघर्ष नहीं है, आपको इसके कारण को जानने की कोशिश करनी होगी| संभव है कि वे परिस्थिति सम्बन्धी ऐसी कोई बात जानते हैं जो आप नहीं जानते हैं| हो सकता है कि परमेश्वर उनके ज़रिये बता रहा है कि समय सही नहीं है|

- हालाँकि, यदि आप दर्शन में या दृष्टि में अंतर देखते हैं जिससे आपको पता चलता है कि आपके अधिकारियों को मसीह के लिए बच्चों तक पहुँचने में कोई रूचि नहीं है या “उस प्रकार के बच्चों को कलीसिया में लेने में” उन्हें कोई दिलचस्पी नहीं है, तो आपकी समस्या वास्तव में गंभीर है| इस समस्या को सुलझाने के लिए: परमेश्वर की बुद्धि और दिशाबोध के लिए प्रार्थना करें |

- निश्चित करें कि आपकी कलीसिया के अगुए आपकी दृष्टि को समझते हैं- भले ही वे सहमत हो या न हो| अपनी दृष्टि को लिखित रूप में प्रस्तुत करें |
- अपने अगुओं से विनती करें| उनसे पुनर्विचार करने के लिए कहें|
- इस बात को समझें कि जब तक दो सहमत नहीं होते वे एक साथ चाल नहीं सकते(आमोस ३:३) यदि वे नहीं चाहते हैं, आप अधिक दूर तक नहीं जा सकते| ऐसी स्थिति में आपको दूसरी सेवकाई से जुड़ने की आवश्यकता पड़ेगी| उम्मीद करते हैं कि जाने से पूर्व आप उनसे अपने दिल की बात कह सकें और प्रभु आपको वहाँ से मुक्त करके यीशु के लिए हर छात्र तक पहुँचने का अवसर दें|

सेवाकार्य के अवसर निर्माण करें

१. सेवाकार्य के अवसर निर्माण करने के लिए, यदि हमारे पास कोई प्रतिभा, पैसा या लोग न हो तो?

जिस तरह से यीशु ने ५ रोटियों को और २ मछलियों को गुणित किया, ठीक उसी तरह आपके पास जो कुछ भी है, उसीको यदि आप परमेश्वर को विश्वास के साथ अर्पित करते हैं, वह उसे भी गुणित करेगा और आपकी कल्पना से भी परे निर्माण कार्य करेगा | निम्न कार्य के कदमों का पालन करें, ताकि परमेश्वर आपके संसाधनों को गुणित कर सके:

- ज़रूरी संसाधनों के लिए निरंतर प्रार्थना करें|
- अपने आपको और अपने दल को सेवाकार्य के अवसरों के लिए तैयार करें|(सुझावों के लिए अगला प्रश्न देखें|)
- आपके साथ काम करने के लिए अपने नेतृत्व दल की नियुक्ति करें | उनमें से कुछ विशेष रूप से सेवाकार्य के अवसरों पर गौर करना चाहेंगे|

सेवाकार्य के आयोजन के लिए अन्य लोगों के साथ जुडें | कई संसाधन आपकी कलीसिया या समुदाय में और साथ ही दूसरी कलीसियाओं में भी मौजूद हैं|(सत्र ७ का पुनरवलोकन करें, “सेवाकार्य के अवसर निर्माण करें”)कीमत की वजह से आपके सेवाकार्य की प्रभावोत्पादकता सीमित नहीं हो सकती| जब हर शिष्यत्व दल सेवाकार्य के लिए पूरी तरह से ज़िम्मेदार होगा या केवल एक भाग के लिए ज़िम्मेदार होगा, तब बच्चे अपने मित्रों को ला सकते हैं और कम से कम खर्च में यीशु को प्रस्तुत किया जा सकता है|

२. एक उच्च दर्जे के रचनात्मक सेवाकार्य का आयोजन करने के लिए मुझे कौनसी तैयारी करनी होगी?

इस प्रश्न का इतना महत्त्व है कि इसका उत्तर देने में द मैगनेट इफ़ेक्ट के प्रथम ७६ पन्ने लगे! यह पुस्तक निम्न बातों को दिखाती है- आपकी सेवकाई के मिशन वाक्य का निर्माण कैसे करें; आपकी युवा सेवकाई के लिए एक बाइबिल आधारित कार्यशैली कैसे बनाएँ; प्रार्थना के माध्यम से बच्चों में जो इंजील का प्रतिकार है उसे कैसे तोडें; आपके नेतृत्व, आपका नेतृत्व दलऔर आपके महत्वपूर्ण छात्र

आपके पीछे कैसे चलेंगे आदि| हालाँकि यह प्रक्रिया आप जितना चाहते हैं उससे भी बहुत लम्बी है, तथापि आपकी सेवकाई को प्रभावशाली बनाने की दृष्टि से यह इंतज़ार फलदायी है| स्मरण रहें कि आप क्षणिक ख़ुशी पाने के लिए यह नहीं कर रहे हैं बल्कि दीर्घकालीन फल पाने के लिए

३. मैं गैर-मसीही बच्चों को कैसे ला सकता हूँ?

जो कलीसिया यह नहीं करेगी वह धूल में मिल जाएगी|गैर-मसीही बच्चों को सेवाकार्य में लाने के लिए सर्वप्रथम उनके साथ एक सम्बन्ध स्थापित करना होगा| अतएव परिसर में प्रवेश कर उसे प्रभावित करना किसी भी सेवाकार्य के लिए ज़रूरी है|

बच्चे कार्यक्रम के चकाचौंध से आकर्षित नहीं होंगे बल्कि अपने मित्र की वजह से वे आएँगे| वे किसी संयोग से भी नहीं आएँगे | आपके अगुए और छात्रों में अपने दोस्तों को लाने की एक तीव्र इच्छा होनी चाहिए| जब यह होगा तब आप अविश्वासियों को ला पाएँगे|

यदि आप अपेक्षा करते हैं कि अविश्वासी एक से अधिक बार आए, तो आपको एक ऐसे माहौल का निर्माण करना होगा जो गैर-मसीही हो और धर्मनिरपेक्ष हो| इसका तात्पर्य है एक उत्कृष्ट कार्यक्रम की प्रस्तुति करना| इस समस्त प्रक्रिया में से द मैगनेट इफ़ेक्ट आपका मार्गदर्शन करेगी|

४. क्या मुझे ऐसे सेवाकार्य को करने की ज़रूरत है जिसमें प्रति सप्ताह इंजील प्रस्तुत किया जाएँ?

धीमी गति से आरम्भ करें|शुरुआत में तीन महीने में एक बार एक विशेष सेवाकार्य का अवसर प्रदान करें| फिर जैसे-जैसे आपका मुख्य नेतृत्व दल और छात्र बढ़ेंगे, आप महीने में एक बार कर सकते हैं | निरंतरता ही कुँजी है क्योंकि इसीसे आपको, आपके अगुओं को तथा बच्चों को मालूम होगा कि यह नियमित रूपसे होगा| जहाँ तक हरे बार सुसमाचार प्रस्तुत करने की बात है, उत्तर हाँ ही है| परन्तु सुसमाचार को अत्यंत रचनात्मक तरीके से प्रस्तुत करें|बच्चों की ज़रूरतों को पहचानें और फिर इंजील के सन्देश का अनुप्रयोग करें| इसे प्रभावोत्पादक तथा रचनात्मक तरीके से पेश करने के लिए द मैगनेट इफ़ेक्ट के कार्यक्रम योजना निर्माण के अध्यायों का इस्तेमाल करें |

५. क्या कलीसिया में सेवाकार्य को करना उत्तम है या एक सामान्य स्थान पर ?

सामान्य नियम यह है कि आप यथासंभव सारी बाधाओं को दूर करें जो बच्चों को मसीह से दूर रखते हैं| इस बात को मद्देनज़र रखते हुए आपको अपने समुदाय में उपलब्ध सभी सुविधाओं के विकल्पों को देखते हुए तय करना है कि कहाँ पर गैर-मसीहियों को आने में सुविधा रहेगी| स्थान तय करते समय आपको कई बातों के बारे में सोचना होगा- कीमत, उस स्थान को सँवारने और उतारने में जो म्हणत है, दूरी और समुदाय इसके बारेमें क्या सोचता है आदि| यह करने का उत्तम तरीका है अपने बच्चों तथा परिसर के बच्चों के बीच एक सर्वेक्षण करना जिससे पता चले कि उन्हें क्या पसंद आता है|

'यीशु-केन्द्रित युवा सेवकाई' आपकी दिव्यदृष्टि को पुनर्निर्देशित कर, आपकी प्राधान्यताओं को पुनर्संरेखितकर तथा आपको व्यावहारिक तथा उपयोगी साधन प्रदान कर, आपके व्यक्तिगत-सेवकाई और युवा-सेवकाई सम्बंधित सपनों को पूरा करने में आपकी सहायता करेगी| इसस्व-प्रशिक्षण संसाधन के माध्यम से परमेश्वर आपके जीवन में परिवर्तन लाएगा तथा आपका इस्तेमाल 'दूसरों में परिवर्तन लानेवालों'कोसशक्त करने के लिए भी करेगा| यह यीशु केन्द्रित पद्धति आपकी समस्त ज़िन्दगी और सेवकाई के लिए एक मजबूत आधार है| आप, आपके पासबान, स्वयंसेवक, अभिभावक, एवं छात्र – सभी यीशु और उनकी सेवकाई से सम्बंधित एक समान दिव्यदृष्टि को अपनाएँगे जिससे आपके लिए निम्नलिखित बातें संभव होंगी :

- आप मसीह के साथ और अधिक गहरी घनिष्ठता का अनुभव करेंगे|
- आप परमेश्वर की उपस्थिति और सामर्थ्य के लिए जोश से प्रार्थना करेंगे|
- आप गहरी और दीर्घकालिक सेवकाई के लिए अगुओं को तैयार करेंगे|
- आप छात्रों को मसीह के परिपक्व अनुयायी बनाएँगे|
- आप सम्बन्ध-स्थापन के ज़रिए संस्कृतिको प्रभावित करेंगे|
- आप मसीह के लिए चेलों तक पहुँचने के अवसर पैदा करेंगे|

युवा पीढ़ी के अगुवा-वर्ग.....

- यदि आप अपनी सेवकाई शुरू करने जा रहे हैं, 'यीशु-केन्द्रित युवा सेवकाई' आपको एक ठोस और मजबूत बुनियाद प्रदान करती है|
- यदि आप पहले से ही स्वयंसेवकों, अभिभावकों और छात्रों को सज्जित कर रहे है, तो यह स्मरण पुस्तक आपको उत्कृष्ट प्रशिक्षण और संसाधनप्रदान करती है|
- यदि आप अन्य युवा अगुओं में निवेश कर रहे हैं तो इसे एक हस्तान्तरणीय प्रशिक्षण उपकरण मानिए|

आपकी अद्वितीय सेवकाई उभरेगी और अधिक तीव्र बनेगी जैसे-जैसे आप 'यीशु-केन्द्रित युवा सेवकाई' से सीखी युक्तियों को अमल में लाएँगे| यह नया दृष्टिकोण आपको और आपकी कलीसिया को नयी पीढ़ी में परिवर्तन लाने वाले शक्तिशाली प्रतिनिधि बनाएगा|

डॉ. बैरी सेंट क्लेयर नयी पीढ़ी को यीशु का अनुसरण करने की प्रेरणा देना चाहते हैं | 'रीच आउट यूथ सल्यूशन' के संस्थापक और अध्यक्ष होने के नाते ये तीन दशकों से भी अधिक समय तक युवा सेवकाई के अग्रणी रहे हैं तथा इन्होंने तीस राष्ट्रों के युवा अगुओं, अभिभावकों तथा छात्रों को सज्जित किया हैं| इनके नेतृत्व में हजारों कलीसियाओं ने 'यीशु-केन्द्रित युवा सेवकाई' से सीखी युक्तियों कोअमल में लाया हैं | ये 'पैरेंट फ्यूल' समेतपच्चीस से भी अधिक किताबों के लेखक हैं| बैरीने अपने राष्ट्र के तीसरे स्थान के टीम में बास्केट-बॉल खेला हैं और बोस्टन मैराथोन में भी भाग लिया हैं| इनके और इनकी पत्नी लवान्ना के पाँच विवाहित बच्चे हैं तथा दस नाती-पोते हैं| ये जॉर्जिया के एटलांटा शहर में रहते हैं|

रीच आउट
यूथ सल्यूशन
www.reach-out.org